SINGH

Preface

From the very dawn of human history, the vale of Kashmir has nurtured a whole spectrum of spiritual activities and religious faiths. It contains many ancient Devasthans; places which at one time were centres of devotion and religious activity. Many of these are still centres of spiritual power, while others have fallen into disuse. I am happy that Shri Pushkar Nath Kaul has, with the help of his Ashram members, brought out this publication upon the Devasthans of Kashmir. The valley has a proud tradition of great temples and great philosophers such as Acharya Abhinav Gupta who has made an invaluable contribution to Indian philosophy. I warmly commend this book to the general reading public.

Karan Singh

(Karan Singh)

Srinagar,
16 June 1987.

— प्राक्कथन —

"पोशिडाल्य" के रचनाकार श्री पुष्करनाथ कोल के नाम से बहुत सारे भक्तजन परिचित है। एक सच्चे उत्तम कर्मयोगी की भाँति अपने परिवार की नैया को चलाते हुये आप जिस निष्ठा, प्रेम और लग्न से धर्ममर्यादा का पालन कर रहे हैं वह प्रशंसनीय एंव सराहनीय है। आप कन्याकदल के निवासी और पं० स्वर्गीय रामचन्द कोल के सुपुत्र हैं।

आप का जन्म भादून दादुष्टी कृष्णपक्ष 1937 में हुआ है। आपके प्रिय साथी श्रीनगर, अन्तनाग और बारामुला में आपको भावअनुसार भिन्न भिन्न नामों से स्मरण करते हैं जैसे महात्माजी डैडीजी, पोश मोत, स्वामी जी इत्यादि।

श्री कोल की नई रचना 'देवीअंक' हमारे सामने प्रस्तुत है जिसमें उन्होंने कश्मीर के मुख्य तीर्थ स्थलों का विवरण दिया है। साथ ही इस पुस्तक को पढ़कर उनके व्यक्तित्व का बोध होता है। श्री कोल ने इन तीर्थों पर जाके क्या कुछ अनुभव किया है उसका वर्णन हमें इस पुस्तक का अध्ययन करके मिलेगा। आप एक ऐसे क्रियाभुषण और अनुभवशाली भक्तकवि है जिनकी कविताओं और भजनों का आधार वह अनुभव है जो आपने अपने उत्तम योग्य नियमों का पालन

करके निरासक्त भाव, अभेद भक्ति, आत्मविश्वास और भक्तिमार्ग के पथ पर चलकर प्राप्त किया है। रसीले, भावुक और माधुर्य शब्द उनके हृदय की गहराईयों से निकलकर एक ऐसा वातावरण बना देते हैं कि श्रोतागण सुनकर या पढ़कर ही असीम और अपरम्पार परमआनन्द के सागर में डुबकी लगाके झूम उठते हैं। उनकी पावन और पवित्र वाणी में एक अलौकिक आकर्षण और प्रभाव है और दूसरों को गतार्थ करने की शक्ति कूटकूट कर भरी हुई है। यही कारण है कि जो लोकमान्यता और प्रियता श्री कौल के बहुत सारे भजनों को प्राप्त हो चुकी है वह सम्भवता ही किसी और भजनकार को मिल सकी है। इनके भजन इतने लोकप्रिय हो गये हैं कि कश्मीर के शहर और गाँव में ही नही बल्कि भारत के कोने कोने में पुस्तकों और केस्टों के द्वारा सुनकर प्राणियों के लिये ईश्वर का मार्ग अपनानें का साधन बन गया है।

इस पुस्तक में श्रीकौल ने माता भवानी के मुख्य देवस्थानों का संक्षेप वर्णन दिया है। पुस्तक के प्रथम पृष्ट पर भजन हैं जिसमें प्रत्येक तीर्थस्थानों की ओर संकेत किया गया है और उनके महानता और महिमा पर प्रकाश डाला गया है।

इस पुस्तक का अध्ययन करना कश्मीर के मुख्य देवस्थानों का परिक्रमा करना है। यह परिक्रमा गणपतयार से आरम्भ होता है। प्रत्येक तीर्थ-स्थान पर श्रीकौल क्या कुछ अनुभव करते हैं उसका वर्णन हमें इस भजन से मिलता है जिसकी रचना इन तीर्थों के गुणों का वर्णन करने के लिये की गई है।

यह पुस्तक कश्मीर के तीर्थस्थानों के विषय में जानकारी देकर पढ़ने वालों के हृदय में धर्म और सांसकृति के लिये मान और प्रतिष्ठा उत्पन्न करती है जिसकी रक्षा करने के लिये सदियों तथा वर्षों पहले नीलमत पुराण की रचना की गई थी। खेद इस बात का है कि हम अपने तीर्थों को जो हमारी सांस्कृति के जीते जागते स्तून है, भूल रहे हैं। यही कारण है कि आज काली अस्तापन को सुरक्षित रखने के लिये कोई ध्यान नही दिया जाता है। आज कश्मीरी पंडितों को याद ही नही है कि कश्मीर के अभि-नवगुप्त के आश्रम बीरुगुफा में कोई प्रवेश नही कर सकता है। हम यह भूल रहे हैं कि यदि हमें अपने जीवन को सफल तथा सत्मार्ग पर लगाना है तो अपनी सांस्कृति से ही प्रेरणा लेके प्राप्त कर सकते हैं।

"श्री कौल" की यह पुस्तक आध्यात्मिक

शान्ति का साधन भी है क्योंकि यदि हम इस पुस्तक का अध्यन अध्यात्मिक दृष्टिकोण से कर ले तो हम इनसे बहुत कुछ प्रेरणा ले सकते हैं। इस पुस्तक का गहरा अध्यन एक नई चेतना जगाकर हम सबों को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास करता है। मैं समझता हूँ कि यह पुस्तक का सबसे बडा गुण है।

हमारे समाज की एक बडी त्रुटि यह है कि अपने ही किसी complex के हाथों मानसिक तौर पर कुछ ऐसे कायर बने हैं कि हर रचनात्मक कार्य में बाधा डाने का प्रयत्न करते हैं। धार्मिक और सामाजिक कार्यों में हम हाथ बटाने से अधिक आलोचना करते हैं। इसका कारण यह है कि मानसिक तनाव हमें अध्यात्मिक तौर पर इतना स्थूल बना देता है कि हम में आत्मिक अध्ययन (self introspection) की शक्ति ही नही रहती तथा हम लकीर के फकीर होने को ही अपना धर्म और महानता समझते हैं। यह हमारे सांस्कृति की ही महानता है जो हमें यह बूंद देती है कि हमें ऐसे परिस्थितयों से पीछे नही रहना चाहिये "सहमट्ट" और "श्रीमट्ट" एक ही माया के दो रुप "अविधा" और "विद्या" है। पहले ने हमें अत्याचार सहने और उनका मुकाबला

करने योग्य बनाया और दूसरे ने हमें नई चेतना और नई शक्ति प्रदान की। आवश्यकता यह है कि हम 'अविद्या' के तत्वों को जानकर और अपनी त्रुटियों को सुधार कर अपनी संस्कृति में श्रद्धा और विश्वास प्रकट करें। ऐसा करना ही विद्या को प्राप्त करना है।

श्री पुष्करनाथ कौल ने अपने आप को महामाया जगतअम्बा का सेवक समझ कर एक ओर से लोकभवन महान तीर्थ का निर्माण किया और दूसरी ओर से घर घर जाकर मन्दिर के भिक्षा माँग कर युवा वर्ग में एक नई चेतना और विश्वास जगाकर सनातनधर्म की सेवा करते आये। पुष्कर आश्रम, कन्या-कदल आप का नया कार्य है जहाँ प्रतिदिन साँय के पाँच बजे से आप भवानी सहस्रनाम, भगवतगीता, पंचस्तवी, महिम्नापार, रामायण, भजनकीर्तन तथा अपने माधुर्य और रसीले व्याख्यान से बूढ़े, बालकों, युवक और युवतियों को धर्मपथ पर चलने के लिये अग्रसर करते रहते हैं। आपने अपने दिव्यप्रभाव और अलौकिक आकर्षण तथा सत्संग से अपने भक्तजनों और सेवकों में धार्मिक निष्ठा, घनिष्ट प्रेम, साहस, श्रद्धा और भावना से इतना प्रफुल्लित किया है कि वह आपके कहे

हुये मार्ग अथवा कर्मयोग के द्वारा जीवन के किसी भी धार्मिक और व्यवहारिक क्षेत्र में कोई भी कठिनाई या समस्या को हल करने में असफल नही रह पाये। आपका कथन है कि जिस प्रकार शिव को शक्ति से भिन्न करके शून्य माना जाता है उसी प्रकार धर्म को समाज से भिन्न करके न धर्म की रक्षा हो सकती है और न ही अध्यात्मिक अमृत के सेवन का अनुभव किया जा सकता है। यही कारण है कि आप समाज सुधार की ओर बहुत ध्यान देते हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि हम सब परिस्थितयों का मुकाबला करके एक दूसरे के सुख दुःख को अपना समझकर समाज सुधार के कार्य में व्यस्त रहे। यही धर्म की रक्षा है। वेद का यह वाक्य है कि धर्म उसकी रक्षा करता है जो धर्म की रक्षा करता है।

आइये, हम सब ईश्वर से यह प्रार्थना करे कि वह हम सबको प्रेम और बलिदान की शक्ति दे ताकि हमारी मुर्झाई भावनायें फिर से खिलकर इन्द्रधनुष की शक्ति और सुन्दरता प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।

मालमूह मागाम — डा० अमर मालमोही

तिथि 12-6-1987

कश्यप भूमि (कश्मीर) अपने प्राकृतिक वैभव, राजनैतिक महत्व, सांस्कृतिक और दार्शनिक परम्परा के कारण सारे विश्व मे अपना स्थान मुख्य बनाये हुये हैं। यह सुन्दर घाटी न केवल अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये ही संसार भर में विख्यात है बल्कि अपनी पवित्रता के लिये अनुपम एंव प्रसिद्ध है। यहाँ का इतिहास और सांस्कृतिक इस बात के साक्षी है कि कश्यप ऋषि, अभिनवगुप्त और स्वामी शंकराचार्य के समय से लेकर इस सुन्दर घाटी में शिवशक्ति का प्रादुर्भाव हुआ है। विशाल हिमालय के वक्षस्थल में भूमिकाय हिमश्रृंगों के मध्य बसी हुई यह धरती इतनी शान्त और रोचक है कि मानव यहाँ के पवित्र तीर्थस्थलों से प्रेरणा लेकर इसके शान्त वातावरण से गदगद हो उठता है। इस पवित्र भूमण्ड पर बहुत से तीर्थस्थल है जो कि शिव और शक्ति के आधार पर प्राणियों को प्रेरणा देके आए हैं। साधु सन्तओं और ऋषियों ने भी इन्हीं तीर्थस्थलों से प्रेरण लेके अपनी तपस्या और साधना को सिद्ध किया है और वे अलौकिक दृश्य इन्हीं तीर्थस्थलों में देखते रहे हैं। अपने अनुभव के द्वारा मैं ने भी जो कुछ इन तीर्थस्थलों पर जाके देखा है उसका थोडा सा वर्णन मैं ने इस देवी अंक में किया है। मेरी यह चेष्टा थी कि भूगोलिक, अध्यामिक और ऐतहासिक, दृष्टिकोण

से इन देवीस्थलों का विवरण दूं परन्तु कुछ परिस्थितयों के कारण (Meagre resources) पूरा वर्णन नहीं दे सका। क्योंकि प्रत्येक देवी-स्थल पर एक एक पुस्तक लिखी जायेगी। अब जो कुछ भाव में इस देवी अंक में वर्णन करता हूँ मुझे आशा है कि आप भी इन तीर्थस्थलों से प्रेरण लेके सुख, शान्ति और पुण्य प्राप्त करेंगे।

मैं कुमारी पवनलता जी को धन्यवाद देता हूँ जिसने मुझे यह कार्य को पूर्ण करने में पूरा सहयोग दिया।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

Salute to the Lotus feet of
Sri Ram (Divine Father)

Pushkara Nath Koul
(Poshmot).



Serial No. 1

शरण आमुत बु दरगाह छुस म्य बोज़ ज़ार,
गंड़िथ गुल्य आदि दीवो छुय नमस्कार,
बु लागय शेरि मस्वल पोशि अम्बार,
गड़िथ गुल्य आदि दीवो छुय नमस्कार ।

Lord Ganpati, I take refuge in Thee as Thou are the first to start with before entering into the vast abode of wisdom. My devotional prayers with folded hands are sure to lead me towards the attainment of my goal, in concentration and surrender.

च़ु छुख गणपत गणेश्वर सिद्धधाता,
च़े छिय पूज़ान ग्वड़यन्य छुख मोक्षदाता,
करान छुख सेद्ध च़ु करान विघ्न हरतार,
गंडिथ गुल्य आदि दीवो छुय नमस्कार ।

Thy dwelling place is Muladhara Chakra, the very seat of spiritual treasure and thou are the king of the Gods, dwelling in my material as well as the spiritual body. My continuous meditation on this chakra will set my every other chakra in motion, too. Thy worship is sure to take me under thy refuge and this will precede every action towards the realisation of the Reality, free from hinderances.

गजयमुख बाल च़न्द्रो रोज़ म्य सनमुख,
चलन दुःख दअदि सअरी बेयि वलन ह्वोख,
च़ ह्वुख रुदै गणन ह्न्द टोठ सरदार,
गंडिथ गुल्य आदि दीवो ह्वुय नमस्कार।

Thy elephantine face, the symbol of Sushamna nerve, through which the eternal wisdom is realised, should always remain in my concentration and all the wounds, ails and ailments, the offspring of my ignorance, shall get healed up. The leader of the innumerable nerves, Thy blessings are sure to take me towards the realisation of Shiva in me.

लम्बूधर एकदन्तो क्याह च़ु शूभान,
गटे प्यठ छुख बिहिथ क्याह शोल, मारान,
च़ छुख वर्दी विनायक बख्शनहार,
गंड़िथ गुल्य आदि दीवो छुय नमस्कार।

The infinite knowledge incarnate, Lord Ganesha, Thy throne is the Divine energy as the same is present in the form of coiled serpentine power in every human form, in Muladhara chakra. Thou art the beginning of the mysterious deep ocean of wisdom and extreme determination of the devotee makes thee to bestow Thy grace and forgive him for his limitations.

चर्तुभुज बेयि चर्तुमुख टाठे साने,
उमा पुत्रो लम्बूधर नुन्दबाने,
च़ु छय वलस्या सअत्य सअत्य जअड़ वे
सरदार,
गंड़िथ गुल्य आदि दीवो छुय नमस्कार।

With the concentration on Thy grace at Muladhar chakra, the four petals of lotus are visualised, by the devotees and frome here Mother Divine dashes

the devotees towards the abode of peace and contentment. This very devine energy Mother Vallabha, Thy constant companion showers affection on all who come under Thy Shelter.

च़ छुख ना दीनबन्धु भक्ति वत्सल,
करान छुख पनानि अनुग्रह मुश्किलन हल,
म्य दर्शुन चोन कीवल छुम म्य बुलगार,
गंड़िथ गुल्य आदि दीवो छुय नमस्कार।

With the power to bless, Thou art the caretaker of the devotees in surrender; those who come under Thy holy Feet with humility, devotion and surrender, they get redemption from intensity of scars of confusion and ignorance. Thy grace heals all the wounds of the minds in trouble.

मलिथ छुख अंग अंगय क्याह च़ सेन्द्राह,
ड़्यके शाये चे़ शूमान अर्ध च़न्द्राह,
च़ छिय नअलि लाल जौहर वेयि मौख्तहार,
गंड़िथ गुल्य आदि दीवो छुय नमस्कार।

The colour of sindoor reflects the red

light of Mother Divine and symbolizes Thy union with Her. In Bhavani Sahasranama, Mother Divine is also named as Sindoor Tilak Priya, one who is identification of the sindoor Tilak and that is why the sign of Mother's presence is sindoor tilak on the forehead of Her devotees.

The half moon, which adorns Thy forehead is studded with the jewels of grace, wisdom, surrender and renunciation of ego and is full of nectar and the pre-requisites of a journey in spiritual progress.

बु चान्यन पादि कमलन ज़ाग ह्यमय ना,
स्वरय ना ध्यान चोनुय न्यथ स्वरय ना,
म्य चाने अनुग्रह बनि नोन शेहजार,
गंड़िथ गुल्य आदि दीवो छुय नमस्कार ।

With this feeling of elevation my constant vigil's destination will be Thy Holy Feet. While meditating on Thy blessed grace, all the fires of negative desires and attachments will vanish and ego, the great hinderance in my

onward journey will slip away, automatically

> ब्र् हुस चोनुय पुत्र अथ् रोट म्य वोन्य कर,
> म्य केवल आश चअनी कष्ट वोन्य हर,
> लटे अकि मोख म्य ह्यवतम सुई म्य उपकार,
> गंड्डिथ गुल्य आदि दीवो छुय नमस्कार।

I'm also the child of the Mother Divine, but I have yet to bring my confused and ignorant mind nearer to my elevated and and enlightened soul. Thee have made me enter thy abode of Muladhar, now help me in continuation of the going up on the ladder to sahasrara, where Mother will open her garbs of enlightenment and love and shall hide me in Herself and in the eternal melting of my existance in the vast ocean of Her Love and wisdom.

> करान 'पोशिमोत' चे छुई अज़ वीलज़अरी,
> रछुन पनन्येन पदेन तल ह्यथ सु सअरी,
> करुम माफ वोन्य खता छुख चई क्षमाकार,
> गंड्डिथ गुल्य आदि दीवो छुय नमस्कार।

'Poshmot' prayes to Thee to protect all

those who are engaged with Him, in this endeavour. Thou shall help him in uniting their thoughts and actions, so that they don't repeat the mistakes in the realisation of the self. This blessing will bestow upon them success in the first step of the journey on the path of progress.

Serial No. 2

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

गौरु दीव लगयो म्य छि चअनि लादन,
पादन वन्दयो मन तय प्राण,
च़ई म्योन नरिव डैख चई तरन तारन,
पादन वन्दयो मन तय प्राण ।

The Master Supreme, I owe thee my life,
Surrender I to Thy Blessed Feet, my soul and self, Thy support assures me to cross the deluge,
Shatters my illusions at Thy Holy Refuge.

कर स्वीकार म्यानि भाविक पम्पोश,
फौलनस आथि यिम चोनई छु जोश,
होश दिम म्य पननुय युथ नो रावन,
पादन वन्दयो मन तय प्राण ।

Accept my flowers of devotion deep,
In blossoms through Thy ecstasy's meet,
Protect my Lotus instincts from scatter,
To search Thy glowing flame in my
ignorance's gutter.

सतगुरु आसवुन छुख त्रिभुवन सारई,
च़ई मोल मअज्य म्योन ज़अन्यकारई,
करतम वाद्य पूर कन थाव म्य नादन,
पादन वन्दयो मन तय प्राण ।

The trio of the universe speaks only
Thy will, Thou are the origin and my
perennial friend is born in Thee,
My thirst for Thy bliss may get the
chance to fulfill, The promises of
eternal knowledge to bliss me.

गट्ट च़ई कासतम: मतु दौशरावतम,
करतम लट्ट लठ्ठ तु इतु गछ्छु दूर,
पनने कृपायि सअत्य च़ठ म्य क्रीड ज़ालन,

पादन वन्दयो मन तय प्राण ।

Shatter the darkness of my ignorance,
I implore, Redeem me from the repitition
of births & deaths in store,
Through Thy philantropy, the kindness
abundant, Untie my webs of desires in
contangles, shut.

प्योमुत पथर छुस वति प्यठ अन्ज़ान,
करु क्याह च़ेई रोस्त वथ म्य हावतम,
ईतनय आर म्योन पिलु कोत बु खातन,
पादन वन्दयो मन तय प्राण ।

Ignorant and fallen I have gone astray,
Without Thy graceful guidance, I'll lose
my way, Be merciful and consider me in
Thy Torch's ray, Enlighten my karmas'
insufficient say.

पुशरोवमुत छुम पान चान्येन च़रणन,
कासतम कालुहन दिथ पनिन ज़ान,
दूर मतु त्रावतम वअन्य कुनि सातन,
पादन वन्दयो मन तय प्राण ।

My surrender to Thy Feet blessed,
Is sure to remove fears in me amassed,

Self-Realisation will in me manifest,
When Thou will be in me eternal & the
closest.

विद्यागण छुख ज्ञानुक भंड़ार,
निरअक्षर छुस बु, दिम पनुन प्रसाद,
सअत्य-सअत्य रोज़तम विज़ि-विज़ि सातन,
पादन वन्दयो मन तय प्राण।

Thou art the ocean of wisdom, knowled-
ge amass, Bless my existance's goal
with Thy Omniscient grace,
In my every happy and sad moment,
My mind should at Thy Feet be bent.

नाव चोन वनु क्याह लछि नोव चुई छुख,
शुर्य तु बअच़ छिय वनान बब राज चेई,
"पोशिमोत" मनि मंज़ गुरु वाक्य पालन,
पादन वन्दयो मन तय प्राण।

How Shall I name Thee, the forms
million, To Thy spiritual family, Thou
give the Fatherly affection, 'Poshmot'
with the flowers of devotion within,
Carries on the Master's blessed
mission.

✿✿✿ Serial No. 3 ✿✿✿

वोथू पानो अच्छु गुरुद्वारस,
तति नारस शेहजार बनियो,
भवसागर मोह सिन्धि तारस,
तति नारस शेहजार बनियो ।

Oh my immortal soul, awake and arise from the deep slumber of ignorance. Salute your devine Guru and make yourself fit to enter the realm of Gurudev's wisdom – His abode of Grace. Doing so alone will liberate you from the burning chains of worldly attractions and you will bravely cross the deadly rivers of illusions and attachments.

आख कति वोन्य छुय गछुन कोतये,
मञ्ज़ ख्वाबस हफ ज़न प्योखो,
गछ शरण वोन्य आदनकिस थारस,
तति नारस शेहजार बनियो ।

Just stop for a moment and make a sincere probe within yourself. Enquire where from you have come, where is

your origin, where are you moving to. Stop being an animal and realise that you have been fortunate enough to be bestowed upon with this human gars which is the best of all your's of adjoinment with the supreme and of attaining salvation. Go and take refuge in the Divine Feet of Gurudev, who alone can lift you to get connected to Parmatma and make you go back to the origin of eternal nectar, of which you, also, are a particle.

क्याज़ि लोगुथ यूता वेकल,
गोख बदमस्त वुोश ज़न वेकल,
हरि चन्दअ तति दिख क्या तारस,
तति नारस शेहजार बनियो ।

Animal like, you have been tossed to and fro by your desires of the lower intellect. Think what shall you pay to the sailing of your boat across the shaveles of your mind and body to the supreme goal of your Atma.

कुसबा सअत्य छुय मन्ज़ वरज़, वाक्स,
गतश गीरिस अथ तूफानस,
मटि खार छय अटि बदकारस,
तति नारस शेहजार बनियो ।

अज़ताम थिम असी चे दरदिल,
गयि कोत तिम तु सरिराह प्योखो,
छ्ल गोर ज़न सअत्य बज़िगारस,
तति नारस शेहजार बनियो ।

It is utter foolishness on your part to rely on your relatives for helping you to realise yourself. The internal confusions and internal negative qualities are not softned or removed even by our best of relatives i.e. our own senses. However liberation is to be snatched by being attached to the world, outwardly, being completely detached from everything. Like Lord Ramakrishna says, consider yourself only a maid servant of your faimly, whose mind is always worried about her own home (i.e. the God's abode) but she serves her master's children in the best possible ways.

Remain faithful and sincere to the word of your Guru. Be the unsurpassed actor on the stage of this World and your performance will be examined by your Master.

त्राव वसवास केयि माया ज़ाल,
करु वोपरम नवि नोव पअराव,
सतसंग सअत्य प्रथ व्यवहारस,
तति नारस शेहजार बनियो ।

Oh my self, leave all threats and fears from your mind. Be away from the immaterial attractions of the world; annihilate malice, hatred and jealousy from your mind, remove descrimination and delusion and then go and jump in the ocean of nectar of eternity, for this jumping needs proper technique, which is possible by Gurudev's Grace, alone.

गुरुदीव छुइ साक्षात ईश्वर,
यूगीश्वर त पूर्ण तपीश्वर,
करि शरनस सुइ संगिफारस,

तति नारस शेहजार बनियो ।

Gurudev is Divinity incarnate, bestower of bliss, detached and knowledge incarnate, beyond the pairs of opposites and he always dwells in the highest spiritual state. It is His grace, wisdom and energy which transforms the black caves of our ignorance into knowledge; and who changes our existance of black Karmas into a refined golden base of discipline, love and knowledge.

तनु मनु गढ़ अर्पण गुरुसय,
करु पूज़ा युगीश्वरसई,
चारअ सपदी नोन बेचारस,
तति नारस शेहजार बनियो ।

Offer the capacities of body and of your mind to your Master and surrender your 'I'ness to the Holy Feet of your Master. The Master of the whole system of yoga shall reveal to you the cures of your helplessness.

पोश फोलनय मनचे वारे,
'पोशमति' अज़ सूह्म धारे,
दिल फुटिथ छु मोल नाबकारस,
तति नास्स शेहजार वनियो ।

The Divine 'Poshmot' assures that the flowers of wisdom will bloom in our minds when we become habitual of bathing in the fountain of the realisation of the self as nothing but the presence and manifestation of the Lord, alone. When the ego breaks, all the shortcomings shall meet away and the invaluable jewel will glorify brilliantly in ourselves.

Serial No. 4

अट्बारि छम खसिथ खार,
तार दिमी पानु मऊजय,
पिलि कोत म्योन गाटजार,
तार दिमी पानु मऊजय ।

With the mighty burden on my back,
Sail me, Sail me, O Mother across,
My wisdom is taken aback,



S. S. BRIJBASI & SONS
32/1, FATEHPURI DELHI 6.

15 JAI AMBE

S. S. BRIJBASI & SONS
59, MIRZA STREET BOMBAY 3.

Sail me, Sail me, O Mother across.

हस मअज्य व्यसरयोसय,
हनि - हनि छअँदरयोसय,
बेकस छुस बु लाचार,
तार दिम्य पानु मअजय ।

Benumbed am I with nervous fears,
Mortal fears make me like withering
flowers, A begger helpless am I, O Thee
Riches Amass,
Sail me, Sail me, O Mother across.

कोत गयि म्य बअय बन्द तुयार,
कॉसि नय रोट म्योन बार,
छल गोर यि सोर संसार,
तार दिमी पानु मअजय ।

Where are my friends and loved brethren,
Who've shunned to shave my burden,
Enough deceitful is the wordly mass,
Sail me, Sail me, O Mother across.

रुगी बु दर इज़तिराब,
वुछतम म्य कोताह अज़ाब,
त्रावतम छोकन म्य वुलगार,

तार दिमी पानु मअजय ।

Craving for Thee is ailing my heart,
Look the pain thereof is shattering me apart, Shower Thy palm of mercy on my wounds so harsh,
Sail me, Sail me, O Mother across.

वअतिम्मति छिम बअड़ि बअड़ि कार,
चन्द्रु छोन छुस वु नादार,
अथुरोट म्य चोन दरकार,
तार दिमी पानु मअजय ।

The earnest works are in earnest wait,
My ignorance makes me ashamed of my penniless fate, Thy help infinite will break the chains of my chaos,
Sail me, Sail me, O Mother across.

वनु क्याह कोलहय छुस बई,
कर क्याह वनतम च़ई,
बोल बोश चोन म्य शेहजार,
तार दिमी पानु मअजय ।

Thy presence gracious, takes from me words away, To Thee bountiful, suggest for what should i pray, Thy words musical

are the eternal shady solace,
Sail me, Sail me, O Mother across.

इति गढ़ि मन्ज बु प्योमुत,
मवसर यीर गोमुत,
अनुग्रेह क्य चोन उपकार,
तार दिमी पानु मअजय।

My circles of births and deaths continue,
That drown me in the world's ignorant sea, For the freedom eternal, Thy wisdom my sole repose,
Sail me, Sail me, O Mother across.

दास हुसय डेडि चानि तल,
कारतम मुशकिलन हल,
शेरस प्यठ छु सवार,
तार दिमी पानु मअजय।

Thy humble servant am I on Thy Gates of grace, Open the knots of the hard-ships I face, Rides Thou the lion of bravery's boss,
Sail me, Sail me O Mother across.

त्रावतम क्य अख नज़राह,

केमस वन्यम स्यज़राह,
बनतम म्य साक्षातकार,
तार दिमी पान् मअजय ।

For Thy merciful glance, I pray O Mother,
To straighten the waves of my fate's
wonder, Manifest Thy divine reality,
through everything I pass,
Sail me, Sail me, O Mother across.

'पोशिमोत' छुस वु प्रारान,
शीतल ह्यथ चे़ छ़ारान,
करतम म्य नोन उपकार,
तार दिमी पान् मअजय ।

For Thy unfoldment am I 'Poshmot'
waiting, Joins me Sheetal, the cool
reason, in Thy searching,
Bestow upon me Thy grace
miraculous,
Sail me, Sail me, O Mother across.

Serial NO. 5

ब्रह्मण कुलस मन्ज़ पदमावतिये,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार,
देवता छि लागन छ्यथ पोश फतिये,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार।

Born in Brahmin caste, a lotus leaf,
Thou art Mother wisdom a brillant deep,
Thy emergence the Divine spirits greet,
Three world's unfolded joy on earth's seat.

क्रस गयि आगमस द्रुस्तिस जहानस,
घटु चअज दूर गव मोह अन्धकार,
साकार ॐकार नोन द्रामुतये,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार।

Thy entrance made the universe to swing, Shattered darkness of the mind's ignorant fringe, Omkar a cosmic vibration in Physical ring, Thou symbolised creation, destruction in a round wing.

पाम्पोर थानस दीवस्थानस,
ललवान लोलि मन्ज़ नारायण,
लोलसान वनवान वाचसपतिये,

माजि सरस्वतिये दोर अवतार ।

Lord lulled Pampore village in love's leap,
With Thy birth in love's ecstasy deep,
Brahma rejoiced in song's welcome feast
To create thee the image of knowled-
ge complete.

लोलसान भक्त्यव आलव द्युतये,
ललदय्द माता ललेश्वरी,
सोख तु आन्नद ह्युथ मीनावतिये,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार ।

Called Thee the devotees Lal Ded sweet,
Chanted Thy name on affection's peak,
Identified with it the bless of self-release,
Found Thy happiness and comfort in Thy
creed.

वेद व्यास तस आव विद्यावतिये,
सेद्ध मोल बनिथ तस साक्षात्कार,
विद्या सोदरस तोर कोरमुतये,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार ।

Thy Master Sed-Mol inspired Thee,
Guided he Thee to realise reality,
Excelled Thou in knowledge in excellant's

degree, Oblivious, Thou, relished the knowledge of peace.

गुरुस प्रुछनय ललेश्वरी,
यस न केंह वनान तस क्याह छु नाव,
केहनु मञ्ज़ क्याथान नोन द्राव ततियें,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार ।

Prayed Thee at Thy Masters Feet,
To learn the name of the nameless supreme, His silence revealed The Truth Elate, Light reflected micro-macro unity in self complete.

यिथु गछि ज़न्मस वोपरम करुनय
अन्दरी गारुन सदाशिव,
वुहवनि मनकील शशिकलिमुतये,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार ।

Revealed Thou the relentless search in life's ways,
Get inside and seek Shiva's stay,
Thou shall behold within the bliss's way,
Keep only desires in rhythmic say.

मालिन्य नखि तस वअखि ततिये,

पयि-पयि पोरुत गयि कुन्दन काय,
सरुती सअत्य प्रअवन मुक्ति ततियें,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार ।

Birth is circle and life's concern,
The tortures and treatment's uncertain
Liberated Thee from life's turn,
Merged Thee with the nectar sojourn.

सनवनि मिज़राब त्रुमहा मन त्रावान,
इन्द्राज़ वायान लोल नय तु साज़,
नटिनय प्यठ रअन्य शोद्ध वाख खतिये,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार ।

In sounds deep and symphonies delicate,
Thy Vakh God of music did recitate,
A style in folk music, Kashayp's heritage,
A sensation on body's pitcher, the instrument with paste.

आनस आनस प्रथ कुनि दुकानस,
अनुभव छु चोनुय नोन टाकार,
शिव-शिव बोलान पज़रसा खतिये,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार ।

Blazed afar these vaakhs truth's ultimate, Thy experience's reflection

visual & moderate, The power to bless in devotees chanting race, Realized reality in recitation, the merge with Shiva's Grace.

रँग-रँग पोश हाथ आव 'पोशमोतुये',
पोश पूज़ करने चेय पादन,
दतरि पोशस रँग छुय छोतये,
माजि सरस्वतिये दोर अवतार।

With seven colours of prismic Aray 'Poshmot' with flowers on this auspicious day, Offers he at Thy Feet in humble way, The colourless white The absolute grey.

Serial No. 6

शिहिज रेह छि गुफ़्त मन्ज़ दिवदारस,
येहय रेह वोलसावन छुय जहानस,
गहे पालान गहे मारान ब्रह्माड़स,
अगौरी गौरी रुप शिवनाथस।

O! Soothing blaze, hidden in Devdaar the great, Sets Thou in motion, the world's gracious gait, Preserver and destroyer

of galaxies innumerate, Protective and destructive countenance of Shiva's grace.

ह्यकि कुस कोम करिथ अथ अविजारस,
फलक तु बेयि मलक सुत्य ज़अविजारस,
नेरान तु बेयि गिन्दान क्याह शोलु मारान,
फकत बासाह अम्युक असि डलरावान।

Who can lull the splendour of Thy delicacy! It moves in rise & fall in the rhythmic secrecy, Dancing, playing excellent & inspiring, Thou art a tintlating feeling of delightful dignity.

वनिथ कअमि ह्योक सुबह तय शाम क्याह गव
दोहस सअत्य रात, रातस किथु बन्योम दोह
फोलनि लअज किथु मूरेन द्रायि बामन,
हरुद तय सोंथ किथु कअनि ड़ोह मारान।

None could define boundaries of day & night, Not even the night's smile, that kindles day's light, How has earth's heart unfolded the blossoms and birds bright, And how has Autumn and Spring burst into loveful delight.

महिज़ बून्य किथ छि रुज़िथ डूनिस मग्ज़,
छु सागर किथु रटिथ वथ गागरे मग्ज़,
गुलन सअत्य क्याज़ि थअविथ क्रीठ यिम खार,
अगर मिलचार यी गव, तेलि क्याह छु सम्सार।

Thou art the Atom hidden in the matter, Thou keeps the ocean self possessed in dome's depth, Thou blessed the roses with thorns, a hinderance in palpitation's mirth, Is this the union, then what is symmetry visible and worth?

यीमा छि सुई शिहिज रेह शोल मारान,
गहे सिर्यस अन्दर सुई माहि तावान,
योहय रेह मा छि मण्डेलन व्यस्तारान,
अमि रेह गुल त बुलबुल मा सोज़ वायान।

Is this the eternal blaze moving in visions? Which soothes the arb of fire with blushful light, Directions to glaxies is visible in sight, And involves birds & nightingales into throng's plight.

योहय रेह मा छि ज़ीवन ज़ीव कला,
योहय रेह मा छि ज़ूने चन्द्रकला,
अमी रेहि मा छि सपदान सुबह तय शाम,

अमी रेहि मा छि सपदान पोरुत बन्य खाम।

Thou touches the enormous matter into life, Sends Thou the soothing rays on crescent's forehead bright, Thy glances shape tender day & deeper night,
Thy energetic blaze ripens life and light.

करिथ कुस ह्यकि वर्णन शब्द क्याह गव,
थविथ तस हुई खटिथ ताल या ज़्यव,
सु हुई मध्यमा, पश्यिन्ति किन छु परा,
गुरा रुपी सु मा छ्य वीदगर्भा।

Who can define the "Sound" undefinable,
Who speaks with organs what and how?
Thou vibrate "Madhyma, Pashanti & Para".
Thou are hidden inspiration,
the wisdom of Vedas.

हुई सीरई शब्दाकार ज्ञानरुपी,
थअविथ कथ शायि आगुर वीदरुपी,
शब्द युस छु निराकार सुई छु नादा,
प्रकट सपदान अनुग्रेह चोन प्रसादा।

Knowledge incarnate a tune in sound & Shape, Lies in thee the store house of wisdom the great, Shapeless awakened

a vibration fine, Thou art the visible solemn a blessing divine.

क्ज़ान नयि मन्ज़ छु नोन क्याह् राज़ अअखर,
बनिथ कुकनूस ज़ारान क्याह छु अअखर,
यी मा गव सुई शब्द युस शिव छु बोज़ान,
वटिथ अअछ शून्य त तुर्या ध्यान दारान।

Art Thou the secret sound in the musical lute, Searching in sound musical sweet, Is this a vibration 'Lord Shiva's' attention, Eyes shut, the profound secret of his contemplation.

वनान शिवजी ती हर्षस गव वुछिथ यी,
गंडिथ गुल्य दस्तबस्तय गव शरण चेई,
महामाया महादेवी च़ई दुर्गा,
गहे राज्ञिन्या, गहे शारिका च़ई उमा।

This blaze of sound & light baffled Shiva, with hands light,
Surrendered He to Thee, the spirit Divine, Maha Maya, Mahadevi, Mahadurga
-a reality in shrine,
Symbolized Thee in Raginya, Sharika, Uma a force divine.

गयम ज़्यव कअज करय क्याह चोन वर्णन,
ह्यकी कुस ह्यथ शुमाराह होंज़ राठन,
शब्द तय रेह प्रज़लुवन युस छु त्राता,
वनान तथ 'पोशिमोत' छुई शिहिज माता।

Words fail to measure Thy dimension wide, The "Sound or Light" that ferried one to the other side, Declares 'Poshmot' to be the celetial light, The ecstatic blaze, the blissful Mother Divine.

Serial No. 7

अअठम ज़ोदश या मअन्ज़ नवम,
दर्शुन दितम दर्शुन दितम,
दूर्यर छु चोन मअजय बोड सितम,
दर्शुन दितम दर्शुन दितम,
बुरि बुरि खीर खँड थाल रूयतम,
दर्शुन दितम दर्शुन दितम।

Mother Thee are the origin of all the principles of the cosmos and the principles of trio are also Thy manifestation Thee manifest Thyself into Thy three forms of Raginya, Sharika and Jawala, On

Ashtami, Navami & Chaturdashi, respectively Make me realise Thee in any of Thy three forms, for keeping myself apart from Thy grace shall never allow me to Lift myself up from the deep waters of attachment, ignorance, anger and darkness.

ज़ई राज्ञिन्या ज़ुई शारिका,
ज्वालामुखी ज़ई अम्बिका,
तोषतम पनन्य भक्ति दितम,
दर्शुन दितम दर्शुन दितम ।

In the form of Mother Raginya, Thee are Satoguna, implying calm, peace, love and deep meditation. In this form, Thee are the ultimate void without any imagination and are the sum total of the whole energy.

When Thee taken the form of Sharika, Thee are the preserver of the whole creation manifesting Rajoguna, implying Thy action and Thy coming out of Thy deep meditation, for administering the universe, and for giving a direction to the unending struggles of all species.

In the form of Jwala, Thee take the form of Maha Rudra Bhairavi, presenting Tamoguna Here, Thy transforming of the whole drama of creation and preservation into a small flame of fire and taking this whole paraphernalia into Thy own self declares that whatever is over created has to go to its origin, i.e. Thee.

Thy being full of all treasures, bestow upon Thy devotees the jewels of infinite devotion.

त्रैयि गुण छ्स्वय त्रैयि रुप च़ुई,
त्रनवन्य अन्दर छ्ख सार चुई,
ब्रह्मा विष्णु महेश ह्यथ यितम,
दर्शुन दितम दर्शुन दितम ।

It is Thy energy, that is manifested in Three phases of Trinity. In the attainment of knowledge Thee are Gayatri, Savitri & Saraswati. Thee are the essence of the Maha Gayatri's mantra Bhoor, Bhava & Swaha; Thee are the beginning, the middle and the end, The three pillars of the Omkar cot, upon

which Paramasiva lies and meditates on Thee, have Thy principles of existance in them. Mother, make me realise all the three forms of yours, which are those of Brahma, Vishnu & Mahesh, because only then shall Thy devotees realise themselves for Thy also are controlled by Thy three principles.

दन क्याह बु मअज्य क्याह वनय,
संग् क्याह बु मअज्य क्या संगय,
सेज़राह तु बेयि पज़राह दितम,
दर्शुन दितम दर्शुन दितम।

And when I receive just a single ray of the innumerable heaps of Thy light, all the bundles of my desires shall get burnt. Realising Thee will give me the goal of life and the worship of Thy Holy Feet, is the only boon that I shall seek from Thee. But Mother, don't let me adopt the crookedness and the wickedness of the world but make me love the reality and the truth. The shield of simplicity should always protect me from the swords of the hinderances towards

Thy path.

प्रातः चु हंसस प्यठ बिहिथ,
मद्दयान गरुढ बनिन,
सॉय चु हंसस प्यठ यितम,
दर्शुन दितम दर्शुन दितम ।

Mother, Thee pervade through the materialistic world and Thee are the realisation of the spiritual world. The moment, I start my day, come to me as Saraswati —the knowledge infinite, breaking all my veils of illusions and emptiness of ignorance. Concentrating on Thy form will reveal to me that Thee ride the white swan, which symbolizes Thy hold over the origin of knowledge and the highest wisdom; Thy wearing of the Safatika beads makes me realise that Thy knowledge makes one float on the waters of Maya and illusion as the Safatika beads float on water.

During the day of my life, make me realise Thy form of Lakmi, which will make me alert to transform the

knowledge received into action. Concentrating on this form of yours, I shall not lose my balance under realisation in knowledge, but shall think over the ways and means of performing such karmas as could redress the past burdan of sins from my account. Thy form of Laxmi will make me earn, act and detach myself from the results of my actions and be in service to Thee, while serving Thy other children.

On the dusk of my life, do come to me in the form of Uma, the abode of Lord Shiva. In that form make my ten senses (five karma indriyas & five gyan indriyas) be in trans. While I fall asleep. Let me be unconscious of everything around but be awake to Thy deep love. Let Thy riding on the Brishab (Bull) make me realise that Thee control the reins of Dharam, Aath, Kam & Moksha.

'पोशमोत' छु माता दास चोन,

लुकभवनस मञ्ज़ वास चोन,
पुज़अरि छुसय अनवअरि वितम,
दर्शुन दितम दर्शुन दितम ।

O Mother Divine, 'Poshmot', finds Thy grace and wisdom in the springs of Lokbhawan of His self and in utmost devotion to Thy Grace infinite, He prayes to Thee to consider His devotion in Thy Blissful abode.

Serial No. 8

अन्दिरि साज़ सन्तूर वज़िथ यी क्नान छिम,
सुहस प्यठ खसिथ मअज्य यिवान छम
पकान छम ।

The assembling of the scattered atoms of my existance and their producing a rhythmic music of divine consciousness signal to me that the origin of the whole music,
Mother, who controls the reins of the totality of energy is about to be realised by me, in my own self.

म्य क्याहताहं वुतशाह अन्दिर लजि हुबाबस,
फोलिम गुल् त गुलज़ार सब्ज़ लाल ज़ारस,
शब्द म्यूठ क्याह्ताम कनन म्य गछान छुम,
सुहस प्यठ खसिथ मअज्य यिवान छम पकान छम।

Unique intoxication within myself burst my heart into blossoms of devotion towards her. The sweet soathing words echo in my ears the sound that the mother divine is on her way towards my realisation.

मनस मञ्ज़ म्य लोला अनोखा प्रकट गव,
कपट दुई त ईर्षा चलान गव चलान गव,
दरन तय दरीचन म्य अल् डल् गछान छुम,
सुहस प्यठ खसिथ मअज्य यिवान छम पकान छम।

The hinderances in the path to Thee in the form of falschood, dnality, jealousy get drowned in the overwhelming tides of the inexplicable love that rushes into me from all corners of my self. The happiness produced by the waiting for Thee shivers me for i wonder as how to welcome Thee in my tiny self, for I know neither the worship nor have I the worth of stationing Thee in my self. So, it shall only be Thy grace,

which will find its destination in me.

अछ्न खोत खुमाराह वछ्स दुबराराह,
लछ्न गव कुनुई ज़न ग्रज़ान आबशाराह,
गज़ब दिल कराराह नज़ाराह फिज़ाह छुम,
सुहस प्यठ खसिथ मउज्य यिवान छ्म पकान छ्म

Lo! Thee are descending, slowly, to my heart and consequent to it my eyes have shut themselves up to the outer world and seeing Thy grace, my heart beats in the rhythmic sound of repetition of Thy divine name. All my innumerable nerves, senses and the particles of my understanding have joined, together in a rhythem, and I feel the roaring power of this collective energy, which soothes my tired struggling existance by making me enter the enchanting gardens of Thy love.

मनस मन्ज़ म्ये शोलेय अजब दूप दीपय,
दज़ान मुश्कि अम्बर कोफूर चअंगी,
करान आयि ग्राये, तुलान ग्रज़ वनान छिम,
सुहस प्यठ खसिथ मउज्य यिवान छ्म पकान छुम।

Externally my actions stop but internally my actions are performed by Thee. Thee enlighten the dark cave of my self and make me bathe in the fragrance of the blossoms that have bloomed on the tree of my Atma. The vibrations of Thy descending to my self make my heart one, with the beats of Thy dancing feet.

सुन्दर पीठ्सई़ प्यठ मोललि लाल जरिथई,
सअजअविथ गिलाफन म्य अन्तःकरण छिई,
समिथ वृच़ म्य सारे वीदाह परान छिई,
सुहस प्यठ खसिथ मअज्य यिवान छम पकान छम।

O Divine Mother, while realising Thee, I wonder as how to be worthy of seating Thee in my self, without cleaning myself from the impurities of sin. So in the deep corners of my self, I start decorating it with the jewels of love, surrender, dedication and tears and lay my antahkarna as Thy bedding. The mere touch of Thy holy Feet makes my vritis join together, concentrate on one point and understand and feel the wisdom

of the vedas.

अथन क्यथ रटिथ चामर ध्यान अध्यानई,
अपानय त प्रानय बनिथ तिम समानई,
वृचक त कुम्बक बेयि पूरक वनान छिम,
सुहस प्यठ खसिथ मअज्य यिवान छम पकान छम।

To please Thee and to make Thee dwell permanently in me, my self takes the shelter of meditation and concentration on Thy Lotus Feet by the proper use of three pranas. Thee lead me Thy self to the performance of prana yama, wherein through inhaling, exhaling and retaining of breath, only Thy wisdom & grace are showered on me.

म्य वुछ "पोशमोत" पोशि गोन्द ह्यथ तैयारय,
यियस राजेन्य युस सुहस प्यठ सवारय,
चोपअरि यि बुतराथ वनवान दपान छम,
सुहस प्यठ खसिथ मअज्य यिवान छम पकान छम

The awakened and enlightened 'Posh mot' is alert with the flowers of wisdom and ready with real knowledge to welcome the Empress of the whole, the Mother

Divine, who shall manifest Herself in the self after riding on the disturbing and scattering indriyas. Seeing this miraculous feat, the whole earth of my body bursts into loveful singing, for Thy Grace infinite.

Serial No.9

म्य छुम बाले कुज़ान अन्दरी,
शब्द पानय सूहमसू,
च़टिथ जामय वुफान पानय,
परान क्रांकेला छि गोविन्दगू ।

The swinging sound of Soham soo,
The Divine music in echoe's lute,
Shatters the boundaries of thoughts cute, And bursts cukoo into delirious flute.

वलो यितमो त दितमो कन,
छु पानय पान मनमोहन,
रटिथ माला फिरान सुमरन,
शब्द छुस पान सूहमसू ।

Come and listen to the chants dear,
Thou and Thee the enthrall near,

Busy in wreaths number care,
The swinging sound of Soham Soo.

करी क्याह तति पाठ पूज़ा,
बकार छन श्राण बेयि सन्ध्या,
सु छुई निर्मल ब्रिहिथ केवल,
स्वरान दोह रात छु सूहमसू ।

Carefree of the prayer's style,
Free from body's paste and plight,
Untouched by the feelings' delight,
Swings in sound of soham Soo.

न छुई तस दोह न छस रातई,
सु छुय बाहोश प्रथसातई,
छुनय तस दीषकाल छारुन,
फ़कत गारुन छु सुहमसू ।

Away from day and night's freight,
In conscious lulls and constant light,
Above the concept of space and time,
A rhytnmic sound of Soham Soo.

न छिई तति कोह त बाल छाडन्य,
सु गव बअलि लूख तम्बलावन्य,
बिहिथ सुई छुय घरे रोज़ान,

गुपिथ बोलान छु सूहमसू ।

Hunting peaks and treading mountains,
Useless indulgence in feak exhibitions,
Thy power - The mind in ecstasy,
A merge with swinging sound of Soham
Soo.

करी क्याह तस हरुद त सोंतई,
सु छुई बेअन्त अन्त शेस्तई,
छु हरदम सुई सब्ज़ रोज़ान,
बहारे मिसलि सूहमसू ।

The springs' bloom and autumn's fulness
old, Disappear in the limitless and endless
fold, Evergreen and everfresh in heart's
mould, The Divine sound of Soham Soo.

वज़ान येलि अन्दर सेतारय,
यिवान सअरिसई छु व्यस्तारई,
तरन तारन बनान पानय,
नहाना बस छु सूहमसू ।

Ozes burst into symphonies sweet,
Touches Thou the destiny's pleasure feet,
Crosses dash in ferries treat,
Switch to the swinging of Soham Soo.

वलो रिन्दो कनव च़ई बोज़,
अन्दरि वज़ान छु अन्दरिम सोज़,
छुनो हृद तथ करख वर्णन,
अछव बोज़ान गछ़ सूहमसू ।

Hark–My spirit divine,
A realisation of a tune fine,
Beyond the limits, the expression far behind,
In visualisation, the swinging sound of
Soham Soo.

छु थावर तु ज़ँगम सोरई,
संगम करिथई यस पानस मन्ज़,
परापर सुई निराकारी,
छु साकारी सूहमसू ।

The union of conscious and unconscious,
When in unison in self dwell,
A shapeless shape in eternal sphere,
Erastent in the swinging sound of Soham
Soo.

वुछिथ पोशन सु अन्दरिम पोश,
बनान "पोश मोत" स्यठाह पुरजोश,
वनिथ बोम्बुर तुलान गछ ग्युर,
करिथ गँअ-गँअ सूहमसू ।

Awakened 'Poshmot' in mind's bloom,
Gleams in the ecstatic blushful tune,
Bumblebee's delight in smell's swoon,
Enjoys the swinging sound of Soham Soo.

Serial No. 10

गाह चु हरमुख गाह चु कैलास,
गाह चु शुमशानस अन्दर,
स्यानि शँकर कति बु छांडत,
छुस बु तूफानस अन्दर।

My Lord Siva, Thy presence at Harmukh symbolizes all the persons as Thy manifestation and at heights like Kailash, Thee dwell in the Sahasrara of a yogi and Thy dwelling at the funeral ground declares Thy detachment from the whole creation of yours. Thee are present in everybody and Iam baffled to find the mark of Thy destination.

ज़ेई बु ज़ासय ज़ेई बु रोछथस,
छुख चु स्योनय मोल मञ्ज,

क्या खता छुम क्याज़ि त्रोवथस,
यीर बुतखानस अन्दर ।

Thou created me by Thy sweet will only to make me realise the value of my birth by performing good deeds, for which you protected me by the weapons of undaunted courage, determination, patience, perseverence and forbearance and like a true parent you initiated and imbibed me to follow the path which leads one to eternity. So, won't it be unworthy of you to keep me tossing in the clayful pitchers of my body.

गंड़ म्य फ्युरनम मूह माये,
त्रृष्णाये वोल म्य ज़ाल,
दम शुमारी छम म्य शँकर,
तशनु खुमरवानस अन्दर ।

Thee associated me with all the illusions of this world. Thirsty I feel at the shortage of breath from moment to moment. In Thy vast world of knowledge and wisdom, it is an irony that my lips are still dry with ignorance.

गोट म्य गोमुत छुम अछन दोन,
अनि सारे वअन्य दिवान,
पननि अनुग्रेह कर म्य यारी,
छुस बु वीरानस अंन्दर ।

My real eyes have been blinded by the dust of the illusions around. Bless me with Thy wisdom and let Thy light enlighten me so to liberate me from the shackles of illusions.

गोम लोकचार छल करि कर्य,
दर जवानी अन्धकार,
पिल कोत वन्य छम म्य थर थर,
नठ म्य आस्मानस अन्दर ।

Childhood was the right time for remembering and reciting Thy name but my childhood was spent in innocent hide and seek, without getting directed to Thee. During my youth I was overpowered by ego, anger and unproductive pleasures. And all this has led to such a position as I shudder at my empty existance.

तशनलव कुस ज़न्मन्ज़न्मन,
त्रेशि हतिस छम प्यपास,
चावतम अज़ म्यूठ दामा,
पानु मोयरवानस अन्दर।

I have been craving for Thy wisdom and mercy for the past innumerable births, so shower Thy mercy on me. Give me the enlightenment and inspiration from Thy castles of nectar, so that my craving for realising the truth and crossing the pedastal of eternity is realised.

अज़ताम यिम अस्य म्ये दरदिल,
छेफ तिमव दिच़ व़ त्रोवहस,
सरिराह वोन्य कुस व़ु प्योमुत,
ईर अन्ज़ानस अन्दर।

The senses of my body, verily my closest relatives, have deceived me by proving stumbling blocks in the path of my searching for the Truth and disturbed my meditation, every time. There is no one to help me come out of this ignorance - but Thee my Lord.

बोड़ ह्वरलद बेवसा तय,
नाबकारा चेई शरण,
आर यीनय अख गरा वोन्य,
छुस बयाबानस अन्दर।

I am desolate, despised, disappointed and the most ignorant at Thy Feet. Be my caretaker, in the helplessness!

पोश कज़्ल्याह फौल्य वारे,
केंह छि कोमल केंह छि खार,
'पोशमति' चेल् फेर चमनस,
अच़ च़ वन्य पानस अन्दर।

Flowers of devotion bloom in abundance but none bears the same form as the other. Some devotees tread on delicate paths of love and dedication, while some adopt the paths of yoga. But the divine 'Poshmot' inspires us all that God dwells in the temples of our minds and can be realised by faith, devotion, dedication and above all by searching Him in our own selves.

Serial No. 11

चन्द् छोन तु न्यथ नोन कुत छुख गअरज़ान,
ज़ीवो सरु करु पननुय पान,
दम दम होश थाव न्यथ रोज़ सावधान,
ज़ीवो सरु करु पननुय पान ।

देह ज़ान मालि रथ, यथ गुर्य छय इन्द्रिय,
स्वामी तिमन छुई मन ह्यथ लाकम,
बोद्ध छिई सारथी, च़ेथ बन्धन जान । ......

प्राण अपान व्यान तु उध्यान,
नाग कुमुर कुकुर बेयि धनंजय
देवदत्त दह प्राण रथ की ज़ान। ......

पहि छिई रथकी नित्य दोनवई छ़ारनी,
धर्म अधर्म रुप विस्तारई,
होश थावु छुख रथी, दूर कर अज्ञानई। ......

राग द्वेष लुभ मोह शोक मद मान,
क्रोध, स्थूल, बोद्ध, आलुह बेयि अंह्कार,
त्रेय गुण कुथि छिई शत्रु यिम बलवान। ......

ज़ीव रुप रथियो येलि देह रुप,
वश करख गुरिस दिख मनस लगाम,
ज्ञान रुप तलवारि शत्रु क्या छि न्यसरान।....

तुल कमान ज़ीवो सूहम शब्दअच,
अन्तःकरण बनाव तीर मावकि,
"पोशिमोत"छुई निशान, परमात्मा च़ ज़ान,
ज़ीवो सरु करु पनुनुई पान।

O Jeeva (man) be conscious of your shortages of good karmas and of your utter ignorance. Better for you is to realise your self. Be alert and live in peaceful patience and Thus God will bless you with His love. Consider your body a chariot which is driver by the horses of your Indriyas. Your mind controls it just like reins. The carefulness of yours is the wisdom which you execute in its movement. Thus you get dictation from the store house of wisdom, which you possess.

The delicate parts of this chariot are Pran, Apan, Vyan, Vdyan, Saman, Nag, Kumur, Kukar, Devdat and Dananjay. Tak

extra-ordinary care of the wheels of this chariot which are the very representation of Dharma and Adharma. As a careful driver shun all ignorance. The dangerous elements like attachment, descrimination between one object and another, alluring life of the worldly affairs, delusion, despair, pride, anger, disappointment, hunger, lazyness and proud disposition are the enemies to bring hinderance in the smooth movement of this chariot. Lord will bless you with His love, only when you come out of these sunny enemies safely. All these enemies will disappear once you come out of it, successfully. Your wisdom shall be frightning alarm to all such hinderances and you will be able to realise the ultimate truth.

Take the arrena of the word 'Soham' and let your inner soul give it a forceful push with extreme love and devotion through selflessness.

Lo! my Master in ecstasy has sent

His Arrena to its destination, at its proper mark.

HARI OM TAT SAT

Serial No. 12

भक्तिवत्सल ही नारायण,
ओन छुसय वन्य चेई मटे,
हे दयालु दीनबन्धु,
गाश अनतम मन्ज़ घटे।

Thee, the bestower of grace on those souls, who surrender completely to Thy Holy Feet, take me into Thy shelter, because knowledge is opaque to my eyes and the darkness of unreality, always, throws me at the doors of falsehood and untruth. Now, Thee shall have to take my care and make my eyes worthy of seeing Thy flame of knowledge in my own self, for Thy philantropy and kindness is beyond words.

ह्यन आस मज़्ज़ आवलनिसई,
पत् क्रोंठ पकनस न् वार,
नम च़् रठतम पान ईश्वर,
नाव म्यअन्य युथ नो फटे।

The intrigues, the disintegration of my thoughts, the non collaboration of my contemplation and actions, and the desires of instant results of my actions have made my boat of life to toss in the whirlpools of ignorance. O, The absolute Lord, please take the charge of ferrying me across the rivers of ignorance, for without Thy complete direction to my actions, I shall get nowhere.

वेलनस व् ममताये,
वासनाये छ्म बुछान,
दिम अभयवर ही च़राच़र,
कास अरसर मज़्ज़ त्रटे।

My concentration is smashed by my attachment to everything around, which bites me likes snakes and whenever I sit for seeing my own self

in the mirror of my soul, I crave for being fearless in the dreads of all kinds.

कअति म्य वअय वन्द टूठ माया,
कांह न वुन्यकेन द्राव म्य सोर,
ज़न वु प्योमुत आस्मानय,
तार दिम वोन्य कुनि वोटे।

My priorities for my attached things have proved my folly of considering mirages of the desert for fresh pools of water. The most reliable of all has been my body and my senses. But alas! they have not been able to wheel me upto the doors of wisdom and reality. After all, am I not Thy child, so why should Thee not ferry me across the ocean of hypocrisy and ignorance in one row? Bestow upon me such purity of thought as could melt my accumulated carbon of innumerable births.

ह्रुस वु गोमुत कूत परह्रयोन्,
निश आमत्यव ह्रोत म्य पोत,
वस घेकुन ह्रुम चोन आसर,

शान्‌ ब्रांडे दयि लटि लटे।

My faults, follies and flexibility of will have kept me aloof from my Master, who glitters in my soul. Consquently, I have been considering the unreal as the real. And Thy infinite help alone is the way out of this whole confusion.
O, the great Lord, preserve the jewel of Thy Light in my self and protect it from getting lost in the alluring attractions of this world.

पंजरस मन्ज़ बन्द गोमुत,
कोस्तूरा ज़न खिवान,
तअरि बरन्यन यलु म्य त्रावतम,
मोकलावतम हटि हटें।

Thy divinity is stored in me and has made me great but the greatness of my Atma is locked up in the cage of my body and its limitations. The opening of every knot in my understanding, the reception of Thy every hord and the blooming of my wisdom by Thy grace must precede. Thy unlocking

of the gates of my cage. My Atma is ever free, ever fearless and the dictator of every action. But its freedom is assured only when Thee cause the freedom to be effected.

गोम लोकचार छ्ल रावान,
दर जअवअनी अन्धकार,
छुम बुजर वोन्य ह्यस डालान,
न्यसरावान मन्ज़ लटे ।

The innocence, simplicity and the natural love of childhood was expected by me to remain with me throughout my life, but the descendent of childhood was the youth, which robbed me and strengthned my lower self. And now, when there is very less time left for the culmination of my physical body, I repent, am afraid and nervous, as I have not been able to see Thee, in my self.

नाद लादान 'पोशिमोत' हुई,
लुकभवनय गुल्य गंडिथ,
चेर मो कर छ्म नू फुर्सत,

नत् खसियो मार मटे।

O, the love incarnate Lord, 'Poshmot', with folded hands in utter devotion is visualising Thee on the great place of Lokbhavan in his self and prays to Thee to listen to the devotees, who crave for Thy anugraha. Thy taking lightly their cries of love shall result in their reaching nowhere. So the great Lord, the lives of Thy devotees are in Thy hands. Sail them safely to the other shore, where Thy bliss alone pervades.

Serial No. 13

मन्दरस अन्दर शामो सहर,
पआरि पअरि म्ये रोव ज़ेरो ज़बर,
वन् कस म्य पेयि अशिकनि तबर,
मस्तान मस गोस मनि अन्दर।

In the temple of mind, the devotional prayers at dawn and dusk have swung in rhythems in the infinity of Divine majestic dimensions. The arc of love's

thunder breft the speech and the toxic self jumped in the intoxication, within.

अशकन व़ु कोरनस वोन मथा,
ह्यस होश अअसिथ बे नवा,
जोशन म्ये नअव होशचि खबर ।

The shower of this thunder assumed strange dimensions in the mind and the conscious self with all its conscious connections dwindled in the realm of how and what. The temple of this ecstasy announced the alertness of Thy presence within.

अन्दरी म्य गोड़नम सोत अलाव,
बेबस गयस ह्योतनम जलाव,
मनकलि म्य जोशस खअति अम्बर ।

परवान लअगिथ गथ करान,
तस शमा रोयस पथ नच़ान,
प्रकि अशक चारों पहर ।

Thus the slow ascend of the flames of devotion howered in the atmosphere and resistance danced in the lap of

controlled girths. Devotion touched the peaks of the heaps of this fire within. Unmindful of the outer responses, the virits in union danced in and around the object of Thy grace. Conception of time vanished in the floods of vision and sight.

छ्वन कांह शैया, ऐ दिलरुबा,
बासान म्य चेई रोस्त साक़िया,
पैमान नोश खूने जिगर।

Attractions slipped the borders of appeal in the extremity of Thy ultimate attraction and the offer of the bowes of Thy nectar enbalmed the tortures and tribulations, dear.

बअरि बअरि छि जाम मञ्ज़ खासिनई,
करअ क्या बु आमन खासनई,
नाह्कय नंगान केंह दस्तदर।

The overbrimming wisdom, ready for offer lies in the symphony of oneness and now the enlightened temple of mind is free from limitations of what

and what not, how and why, when and where, special and common, high & low, love & hate and those minds clinging to these puzzles, roam in the unsubstantial objects.

वुह्नि क्या ओन जग तय प्रोनुय,
रशकय वनान सदुर सोनुय,
तस निश छि दूर गाशिच लहर।

It is beyond the ignorant mind to overcome the difference between objects — positive and negative, permanent and temporary and to dive deep in the ocean of light visualised by the toxic self in intoxication within.

वलु अज़ गअरा अख, बेह म्य सअत्य,
"पोशिमोत" च़ वुछ वोनमथ छि कअत्य,
दीमु तिमन अशिकिन लहर।

The spirit Divine "Poshmot" join me just for a moment in the joys of Thy grace's ecstasy and see many a toxic selves in this intoxication within.

Serial No. 14

सुख त सम्पदा दादय्न दवा,
मअज बअगरान वुनिक्यनस,
दादय्न दवा रुगन शफा,
मअज बअगरान वुनिक्यनस।

Now the mother Divine,
Bestows care and comfort fine,
Treats ails and ailments of mind,
Now blesses, with her blissful kind.

क्याह छु गम यस नख् च़् आसख,
सपदनस मुशिकिलन हल,
यीर गअमत्यन भवसागरस,
मअज तारान वुनिक्यनस।

No fear when Thy presence sey bear,
Hurdles vanish mountains disappear,
Ferries thou across the ocean,
Drifting souls here and there.

पूर्व पछ्म किनि दख्न उत्तर किनि,
मअज रछ् वअनि छि पानय,
असवअनि मुख खसवअनि सउहस,

मअ़ज फेरान वुनिक्यनस ।

The South, North, East and West,
Protects thou the direction best,
Smiling thou ridest the Lion, power crest,
rounds thou taketh with gurdles pressed.

गुअलि ग़ॅडिथ आमुत गदा,
लायान डेडि तल सदा,
ज्ञानअकि तअरि पनेन्यव अथव,
मअ़ज मुच़रान वुनिक्यनस ।

With salutations profound and meek,
a begger implores for knowledge toseek,
Thou opens the gates of wisdom's seat,
With august hands giving and neat.

सारा बोज़ु नरि युस छि दारवअनि,
रछवअनि युस छि दासन,
क्षण क्षण मअ़ज कर्मुक न्याय,
मअ़ज अॅ़ज़रान वुनिक्यनस ।

Thine innumerable hands the great,
Take careful care of devotees in wait,
Thou shapes the destiny obscure,
Of those who to Thee surrender.

यस करान छख पंद पूशी,
वुछि कति सुई सरूतीं,
शरनागतन रोणि दामान,
मअज त्रावाण वुनिक्यनस ।

No hinderances harsh shall he face,
To whom thou bestow Thy eternal grace,
Tinkling beads of Thy garments gear,
Blesses those who are to Thy shelter near.

छख चु आसवअनि ज्ञानरूपी,
मूक्षिदाता ईश्वरी,
त्रेशि हतिनईं यूग अमृत,
मअज चावान वुनिक्यनस ।

Thy wisdom incarnate image,
Redeems sins with thy bountiful gaze,
Thy nectar thirsty's thirst satiate,
Intoxicates the mind eager to take.

भय हरवअनि छख चु माता,
पाप मूच़न चँडिका,
खोफ ज़दनई खोफ जनमिक,
मअज कासान वुनिक्यनस ।

Thy garb of Chandika, the power amaze,
Shatters the nervous fears with love's gaze,

Life fever threat and hate,
Disappear with Thy present eternal blaze.

शूल सअल्यन खडग सअल्यन,
मअज रछवअनि मखत्यन,
ज़ार सउनी पनन्यव कनव,
मअज बोज़ान वुनिक्यनस।

Thy trident and all mighty mace,
guards Thy devotees with delicate weight,
Listens tho to the calls of woe and wale,
With soothing touch thou attends to their fate.

रँग रँग मअज तँग आसय,
अज़ ह्य बास्योम ढ़ोख चोन,
पान पुशरिथ च्यई बु अरपन,
मअज गँज़रान वुनिक्यनस।

Life palpatations diverse and unique,
Confirm in me Thy sole support indeed,
With Abject surrender to Thee,
Consider me in Thy considerations meet.

वारि वारे सअरी यिवान,
दुख तु दअदि माजि बावान,

सर त्रावान तल पादन,
मअज टोठान वुनिक्यन्स ।

None escapes the shelter ultimate,
Unlocks his pent up pains in a plate,
Sacrifices ego at Thy feet's wonder,
Thou showers love in ecstatic thunder.

कर्मऊच वदल ज़न्मऊच हान,
विज़ि विज़ि करान नीमज़ान,
साकिया मोय फिर म्य वानन,
मअज चावान वुनिक्यनस ।

Rigmarole of actions and births concern, Kills me in inches with threat in turn; Saki-hurry up, fill the bowls with nectar divine, Now the Mother i busy in offer fine.

कोमल पोश ह्यथ हु आमुत,
अज़ अऊठम दोह सु योर,
"पोशि मोत" तिम च़अरि च़अरि,
माजि लागान वुनिक्यनस ।

Komal flower's meek and delicate, On
Ashtami, the combination of eight,
Offers now 'Poshmot' to Mother swee

Selected one's with dedication deep.

✿✿✿ Serial No. 15 ✿✿✿

विज़ि विज़ि सुबु शामन,
मीठ दिमये मअज्य पादन,
कन थाव लोल नादन,
मीठ दिमये मअज्य पादन।

O The all bliss Mother Divine, make the conditioning of my atmosphere and environment such, as I will always and everytime bow and lick Thy Holy Feet. Let the every breath of mine pass through Thy Holy Feet, which are the origin of all ecstasy and all knowledge. Pay a heed to my craving existance and make me to surrender my ego at Thy Holy Feet.

दुनिया छु मअति मेला,
सांग पअथर तु खेला,
मद वसान बलवोरन,
मीठ दिमये मअज्य पादन।

Through Thy holy grace, I realise that the dramas of the world are just transitory and everybody plays his assigned role and vanishes. The change in seasons, the change in the physical evolution itself and most of all the evaporation of lives by the powerful force of death – Keep one wondering about the imperjection of the whole universe, which is governed by the bondages of time and space. Before Thy unfoldment of Reality, Valour of anyone, howsoever stronger is crushed. So, allow me surrender myself to Thy Holy Feet.

कअल्यन गुलाल येच़्वय,
केंच़न शर तय सच़्ई,
केंह रिवान, केंह छिय चेंगन,
मीठ दिमये मअज्य पादन।

The varied phases of the world include such dramas also as there are people who are lulled by the affection and love of their surround-

ings. Their one step towards God realisation opens up vast gates of knowledge for them, without their obvious efforts, though there are some who keep on planning without even seeing even a single ray of Thy divinity, O Mother. Consquently, life becomes a fruitless weeping hell for some, while some rejoice in the internal bliss of Thy love.

मस चथ केंह छि बदमस्त,
बाहेस पोरुतकारस,
गाटलेन ज़ंग छ्य नटन,
मीठ दिमये मअज्य पादन ।

In this vast and infinite drama which is created by Thy sweet will, there are people who drink the nectar of Thy devotion but keep their eye always on their goal of pleasing their self. They make their foundations strong and don't allow any unrighteous thought or action obstruct their path. They become the masters of

their paths and don't allow any thought of ego or selfishness disturb them. They keep themselves away from intellectual jargons, logical inferences, methods of deduction and induction-for the very basis of all these methods get crumbled under the heavy weights of Thy infinite ocean of love.

केंह छिय मञ्ज़ जंजालस,
तृष्णायि मूह ज़ालस,
ज़अलिमअत्य क्रूध नारन,
मीठ दिमये मअज्य पादन।

The Webs of insatiable desires, attachment and ignorance have caught many, in this universe. However they could liberate themselves had their righteous thoughts and actions not been imbalanced by the fires of anger and their attachment to their lowerselves not grown, violently.

गटि मञ्ज़ केंह छि अन्जान,
निष्बुद्ध बेयि नादान,

मूढ़ भाव किन्य छि मन्दछन,
मीठ दिमये मअज्य पादन ।

In the darkness of inertia, ignorance, attachment, anger – there are some who don't realise their shortcomings. And their follies make them stoop too low as to be ashamed of their own existance.

बेवस केंह छि लाचार,
चन्द छेनि केंथि नादार,
अखरस गुल्य मूरन,
मीठ दिमये मअज्य पादन ।

However, there are some who want to walk towards the road, which ends in Thy realisation, but they are bound by their Karmas. They don't have any good deed to their credit and so at the time of death they repent over not having done anything to liberate themselves and never not having done anything to wipe away the sins and attachments of their innumerable births.

हा शुमार अजलु न्यायन,
विपधायि छेपि छायन,
पुश प्यवान होंज़ रादन,
मीठ दिमये मअज्य पादन।

There is no end to the varied phases of the judgements of fate, which are nothing but the harvest of the seeds of our own karmas, that we sow in the fields of our individual existances. These judgements, in turn, give birth to different hardships, to which one always adopts the attitude of escapism. No theory from our reasoning & logic can fit the lengths and breadths of the fabric of Thy judgement O Mother.

बोज़ अज़ सोन नादा,
दूर करी ज़गि न्याद्या,
प्यठ त्राव रोजि दामन,
मीठ दिमये मअज्य पादन।

O Mother, amidst the turmoil of ignorance, we with our loveful hearts, pray to Thee to remove the whole curse of

pain and suffering from this universe. The wickedness in us makes us die every moment, so please make us fearless and the masters of ourselves. The whole pain will come to an end when Thee protect us under Thy own musical shelter of mercy and love.

तुलमुलि चोन दरबार,
प्यठ नागस शूभिदार,
गटि मन्ज़ गाश प्रज़लन,
मीठ दिमये मअज्य पादन ।

In the Tulmula of my self, Thee are graceful and beauty itself on the spring of my consciousness. Thee are the essence of my whole exIstance. Thee give me force to do anything and so visualising Thee in my self, takes from me the darkness of ignorance, diversion, ego, attachment and desires, away.

खीर खंड कंद थाल हाथ,
वातान भक्त छिय न्यथ,
मायि चानि अर्धरातन,

मीठ दिमये मअज्य पादन ।

Thee dwell on the highest seat of the self in a person. It is a routine with the devotees of Thy Holy Feet to keep on searching Thee in their selves. They keep on offering Thee their sweetness of love and surrender. For their sole purpose is the union of their selves with Thee, they dig their thoughts and hearts and amidst the darkness of the attachments of their selves. The dreads and fears of the night of loneliness and ignorance don't stop them, but they continue their journey upto Thy Holy Feet.

अटवारि कुम वोलवोर,
नटि मञ्ज़ कुम ड़लान खोर,
तलु ज़्युस प्यठ कु दोरन,
मीठ दिमये मअज्य पादन !

I've been collecting the burdens of my sins and desires throughout my innumerable births. Inspite of my seeing, throughout my births, that the

whole world is just a hollow show of temporary phase, yet I keep on running and dancing in my intoxication of possessing a body and the micro components thereof. Since the foundation of the building of my existance is hollow of any move towards liberation, my steps are not stable and they don't fall in the path to Thy realisation. So make me to surrender everything to Thy Holy Feet.

दुअदि लद गोसय खराब,
रँग- रँग हुम म्ये अज़ाब,
कर दवा म्यानअन्न ज़ख्मन,
मीठ दिमये मउज्य पादन ।

The dead habits and the voices have given rise to various kinds of pain in me. I have been conquered by the ails and diseases, that have degraded my higher self and taken my mind away from my enlightened soul. Please show me the path, by which I can patch up the wounds and scars left by my

dirty Karmas. Let me overcome my bad habits by my surrender to Thy Brilliant Feet Blessed.

मअज्य छम म्ये चअनी आश,
नोन त्रावज्ञान प्रकाश,
कर सॖहल म्यान्यन मुश्किलन,
मीठ दिमये मअज्य पादन।

O Mother, the crumbled body of my Karmas finds only in you the last hope of liberation from the clutches of intellectual barrenness, insufficient devotion and attachment to my body. The hardships to my goal will be softened only when Thee reveal to me the pillars of knowledge of reality.

संगर आयि फोलन्स,
वेलॖ आव पूज़ करनस,
पज़ि भावॖ गुरु च़रणन,
मीठ दिमये मअज्य पादन।

Thus concentrating on the reality of my self and realising the purity of my soul, it seems that the dawn

of Thy arrival has come. So let me surrender to and worship Thy lotus Feet in the form of my Divine Master, which will shatter the whole darkness apart and keep before me only the Reality full of knowledge. And Thee in the form of My Master shall carry me along with determination and devotion to Thy Holy abode of wisdom.

"पोशिमति" मो हे ग़म,
सहायतस छ़े मअज्य हरदम,
दूर करवन्य आपदायन,
मीठ दिमये मअज्य पादन ।

O My Subtle Being (Poshmot), the Mother Divine is always at Thy help and is supporting Thee in wiping out the evil images on this Earth of our existances. When the unrighteous things and the other hinderances shall get evaporated by Thy grace, only shall Thy devotees reach their goals.

Serial No. 16

छांड्थ वु जायि जाये,
शंकर म्य चअन्य माये।

O My Lord Shiva, the protector of devotees, in my devotion and love I am craving for Thy grace and mercy. May Thee unfold to me the destination peak.

आसान छुख कैलास कोह,
बासान छुख तति रात दोह,
जटनई दिवान च़ ग्राये,
शंकर म्य चअन्य माये।

Thy dwelling place is Kailash where Thee always live in solitude and tranquility Thee have evolved in Thee the whole galaxies. Thou art the controlling force of nature.

चन्द्रम ड्यकस च़य शूभान,
वासुक हटे चे लूभान,
यी वोन्य च़ु असि दयाये,
शंकर म्य चअन्य माये।

The moon on Thy forehead symbolises Thy hold over the springs of nectar, Thy keeping the snake to Thy neck depicts clearly how you distribute nectar and the poison Thee have assimulated in Thy threat to bless us all.

बागम्बराह च़ु वलिथई,
भस्मा च़ु पानस मलिथई,
टोठेरव सॅअत्य उमाये,
शंकर म्य चअन्य माये ।

Thee have pierced away the senses and wrapped Thyself with their skin i.e. the Bhagambara ; the ashes with which Thy body is covered show Thy renunciation of every thing but for the protection of Thy devotees Thee come personally to help them in their contemplation.

नन्दी छु चोन वाहन,
पूर्ण च़ु कर मनिकामन,
आमअति छि चानि राये,

शंकर म्य चअन्य माये।

Thee ride on the Nandi, Thy Bull, which symbolizes Thy hold over Dharam, Arth, Kam and Moksha. Thy devotees come to Thy Feet, take them upwards, Lord.

नअलि छ्य चे खअलि माल,
फ़ेरान च़ु बाल बाले,
पानय च़ु रोज़ रक्षाये,
शंकर म्य चअन्य माये।

The whole universe is in you and you are in the whole universe, and so this whole garland of the jewels of the manifestations of Thyself is developing and progressing only by Thy grace.

छुई त्रिशूल चोन त्रिकारन,
पापन च़ु दुख निवारन,
प्रारान छिई अअसि भिक्षाये,
शंकर म्य चअन्य माये।

Thee have trident is Thy hand which is the symbol of the Trinity Brahma,

Vishnu & Mahesh. So Thee are the creator, operator and the destroyer, Thyself we can get redemption from our sins by Thy grace and wisdom.

सनमुख दितम ज़ई,
दरशुन करहय क "पोशै" वरशुन,
परहय नमः शिवाये,
शंकर म्य चअन्य माये।

My Lord, always inspire and enlighten me for I have surrendered everything at Thy Lotus Feet. Let me advise that with the flowers of 'Bhava' and dedication by concentrating on Thy highest Mantra of 'Namah Shivaye'.

अर्धरातन आव चोन ध्यान,
"राम राज रतन" ज़े ललवान,
करतख पनुन उपाये,
शंकर म्य चअन्य माये।

Thy devotees get wisdom, which leads to Thy, when they search Thy abode in their selves during the darkness around of ignorance. Cast

aglance to on them and attend to their woes.

Serial No. 17

पोत ज़ूने मनि मन्ज़ गअनिराव लय,
करु पूज़ा दयेव चेति टोठीय दय,
सुबुह दम आव प्रज़लान प्रथ कॉह शय,
करु पूज़ा दयेव चेति टोठीय दय।

रात गअय तय दूर गव मुँह अंधकार,
तीज़ नोन द्राव हनि-हनि साक्षातकार,
लोलअ बुलबुल छु वायान सनतूर नय। करु०

जल तअ कोसतूर सुमबल छु ताल वायान,
सअत्य कुमरय कुकिला छि नाद लायान,
मनअ तारे अमि सोजअ चलियो ख्वय। करु०

जोयि तअ आरय पलनीय सीत वनवान,
टेक बटनेय मसवलि लोलि ललवान,
यंबिरज़लि मनि मन्ज़ बोमनरिनय प्रय। करु०

कोह सारन वुतिशा बुरजअ बालन,

लअज फुलिया बरज़स्त लालअज़ारन,
लोब अशिकव शालअमअरि तमिसुन्द पय।

आव मच़रा क्याथान्य आबशारन,
नंग दूर गअयि हन्गमगअ ध्यान धारण,
यूग सयेद गव यूगियेन मविनख जय। करुः

पोशि डअलया सोमबरिथ छि स्यारंग,
अकि सतअसंगअ "पोशि मति" च़लियो ज़ंग,
सतगोरसीय शेरि लाग प्राक्ख ज़य,
करु पूजा दयेव च़ेति टोठीय दय।

✿✿✿ Serial NO. 18 ✿✿✿

गट च़अज तअ गाश आव,
मनि मन्ज़ मे अन्दरीय,
कंडि थरि गुलाब द्राव,
मनि मन्ज़ मे अन्दरीय।

अरसरअ दूर गयि, शबनम प्रवअ पेयि,
हनि-हनि मे राम आव, मनि मन्ज़ मे अन्दरीय।

सनि चूर बन्द गव, इन्द्रिये श्रम गव,
वुसअ प्रगांअ पैराव, मनि मन्ज़ मे अन्दरीय।

वुहवुन गटकार, छेतअ गव क्रूठ नार,
शेहजार नोन द्राव, मनि मन्ज़ मे अन्दरीय।

ज़ेव लज तालस, सरपा कुनिरस,
छोपि मन्ज़ सोज़ आव, मनि मन्ज़ मे अन्दरीय।

पोतअ ज़ूनि यनअ पयोव, नाबुद बूद गव,
सनिरस वोत आव, मनि मन्ज़ मे अन्दरीय।

अपजयुक व्यवहार, छलगोर संसार,
सीरस मे फाश द्राव, मनि मन्ज़ मे अन्दरीय।

कर्मफल सोरयेम, ह्यनु द्युन मोक्लयोव,
फल मोहि छल आव, मनि मन्ज़ मे अन्दरीय।

"पोशि मति" बस कर,
रिनदअ दुख ज़िनदअ सोर,
दम दिथ अथि आव,
मनि मन्ज़ मे अन्दरीय।

Serial NO. 19

गुल्य गंड्डिथ ज़ार बोज लोलअ मसतानस,
रच़ि मअल्य स्वर कर कुलि जहानस,
बन्द-बन्द पैवंद प्रथ वुसखानस,
रच़ि मअल्य स्वर कर कुलि जहानस।

सोख सान मअजय थव प्रय ज़ुरियातस,
दूर कर नफरत बेयि अंधकार,
अनअ-धनअ ओरज़ुव सअतय वहज्ञानस,

गटकार वोथमुत मन्ज़ बुतरातस,
आरवल ज़रद बनि मैसूम गुल,
नाव सअनी हेनअ आयि मन्ज़ तूफानस।

शब्द ज्ञान कीवल प्रथ दुकानस,
ओन अिथ दारान पोशि वनन,
करि क्या बलवीर मन्ज़ ठिपज़ालस।

हाव-बाव कीवल धमा छु अज़कल,
अपज़ुय अपज़िस खंदअ करान,
आदमखोर पतअ अज़ शीरखारस।

छुनअ वार मार मअजय नाव चयोन

सोरनस,
दम फुटि गअमितय बुथि अछदाह,
दक ज़द दर्दिमअत्य मंज़ नरकअ नारस।

कोत गयि साधु संत बेयि आचअरी,
अभिनवगुप्त बेयि शंकराचार्य,
नोन कर अनुग्रह लगिमतय दावस।

"पोशि मतय" ज़्येव दिच अज़ क्याजितालस,
पदिनअय तल क्याज़ि वोत असि नार,
कर दूर वसवास आनस-आनस,
रचि़ मअलय रचर कर कुलि जहानस।

✿✿✿ Serial No. 20 ✿✿✿

मे गोमुत मन स्येठा चंचल,
रछुम चरणांबिन्दन तल,
मंगलदा छुख करुम मंगल,
वरुम चरणांबिन्दन तल।

वनय क्या मअजय पनुन गुदरुन,
वननलद छुस अनदरीय सन छुम,
करुम अनुग्रह बअ गोस निर्बल,
वरुम चरणांबिन्दन तल।

वछस मन्ज़ छुम ललवुन नार,
मे छुम दीदन चोपअरय अन्धकार,
रछम कुस वोन्य मे छम चअन्य कल ।

मे अज़ताम अअसय यिम हमदम,
गिंदन बाजेव मे छितम कम भ्रम,
मे वुनिकयेन तिम करिथ गयि छल ।

छु संसारा अजब खेला,
छु कुनि मातम तअ कुनि मेला,
अड्येन भरपूर अड्येन ग्रांगल ।

मे गव लोकचार बेयन ताबे,
जवअनी मन्ज वयोचुम नय केंह,
बुजर आव छुस नटान निशिफल ।

हच़र लद छुस स्येठा बदकार,
करान खंद छिम तअ गोस लाचार,
रच़र प्रथ रंगअ करुम ज़ल-ज़ल ।

मे मअज शारिका करुम वोपकार,
करान "पोशि मोत" स्येठा वीलज़ार,
करुम यलअ ज़ल मे जअदय हॉकल,
वरुम च़रनार बेंदन तल ।

Serial NO.21

लूसूस बअ प्रअस्य प्रअस्य मोख मे हावतम,
मअजय माजि तोन अज़ मे करतम,
चरणन तल मअजय वोनि रछतम,
मअजय माजि तोन अज़ मे करतम।

संताप सअतय छुस मअजय दोदमुत,
विरअहिकिस नारस मन्ज़ छुस फोटमुत,
अमि मन्ज़ मअजय म्य मोकलावतम।

पयोमुत जन छुस बअ आसमानय,
नयेथ नोन चन्दअछ्योन अंज़ानय,
यिथिस हय हालस वोनय चॄ सनतम।

ओन छुस मअजय कर क्या बअ,
कोल छुस मअजय वन क्या बअ,
अनुग्रह पनिने चअ गाश अनतम।

फोटमुत बअ मअजय मुह ज़ालस,
मायायि हनिदस जंजालस,
छ़ठतम वेडि मअजय मख मे बनतम।

डेडि लल प्रारान छुस अरव आमा,

हक-हक छुस दिवान नादाना,
गोशव पनिनेयव मे अज़ बोज़तम ।

दम फुटि गोमुत छुस अंदरीय,
मोखव हावतन जल मे शामसोंदरीय,
दासन हुंद दास गंज़रावतम ।

क्या रोटुथ चे मअजय मलाल म्योनुय,
वुछतय चअ मुअचरिथ सीनअ म्योनुय,
सीनिकय दाग मअज नाहवनावतम ।

कोपुत्र छुस मअज चयोन संतान,
मूडअभाव किनय स्येठा क्रेशान,
अअरितयेन नादन मे गोश थावतम ।

माधि चयानि पोशि मोत पोश चारान,
आश्रमस मन्ज़ छुय पुजि लागान,
गुलाववय पअठय मअजय सु फोलरावतम।

गुलि गंडिथ "अवतार" आमुत शरण,
गुरु रुपअ किनय चे पयोमुत परण,
मुनि पनुन वंदहय बअ चरणन,
मअजय माजि तोन वोनि करतम ।

❀❀❀ Serial NO.22 ❀❀❀

पादि प्रणाम माजि भगवतिये
आवंय शीवनाथ सीत पारवतिये,
करसय पूज़ा तअ लागस पोशि फोतिये,
आवय शीवनाथ सीत पारवतिये।

वहरि वरियस ओसुस बअ प्राराण,
आयि हेरथ प्रथ शय छि प्रज़लान,
चअलि मे जिगरस अज़ हय आमततिये।

बोर मे वटुखा वहिकिस कुठिसीय,
गरनावय वासनायि करसीय,
शंख तअ घंटा वअयिम लोतअ लोतुये।

भूषि डुलिजि तय बेयि सनिवारे,
पूज़िमय तिम अज मे वारि-वारे,
अशि टारेन मन्ज़ लव होतुये।

युग स्यद गव अज तपभूषिनय,
शीवरात्रि दोह शीव-शवि परनीय,
दोह तअ रात ज़न करिथ नालमोतुये।

सिरियअ चन्द्रम लय गव यकसान,

सूहमसू बम-बम छु बोलान,
च्येथ हय च़ेनान मअति तय ततिये।

हटि वासुक जटि छुस गंगा,
नूरअ बरितिस मलिथ छुस भस्मा,
पायि बडिसीय मोय छुस छोतुये।

च़ोल मे क्रेछर ज़नमुक सोरुय,
वसवास तय छायि गितय सोरुय,
कोर मे अनुग्रेह नोन हय सूरमतिये।

कअर नोमरिथ छि सअरीय बुतराथ,
माज़ि दीवी अज़ हय छय स्तराथ,
पोशि मालअ करि अज़ हय "पोशि मतिये",
आवय शीवनाथ सीत पारवतिये।

Serial No.23

लटि अकि सूरमति यिखना सोनुय,
बहआ करय पोशि वरशोनुये,
अछि मे लोसम त्राव मलाल मयोनुय,
बहआ करय पोशि वरशोनुये।

कर क्या च़ेय रोस्त हेस होश वेसरयोम,

दूरेर चानि गोम बद्नस सूर,
सोनसीय त्राम गोम त्राव कीनअ मयोनुय।

इन्द्रे गगरव लूरपार कोरहम,
सोमबरिथ अंबरस सपदयोम तोह,
दूरेर चानि वोन्य चाक दिमअ ज़नदनीय।

वेबस वति प्येठ पयोसय सरिराह,
बेकार लोगसय लुक पामन,
बर छुस गोमुत सनअ गोम सननीय।

यिनअ चानि हि फोलान शिनयाहस गुलज़ार,
बूजुम छुख करान मुशिकिलन हल,
प्राराण बर तल गोयना कननीय।

जाय छय रअटमिच पेठ कोहिस्तानन,
छुख छाल मारान गौरी सअत्य,
आदनिकय यार मानि बास कर मननीय।

गंगाधर छुख कालसंहारी,
"पोशि मोत" डेडि तल छुय उमेदवार,
खानअमोल प्राराण छुय न्यथनोनुय,
वहअा करथ पोशि वरशोनुये।

✿✿ ✿ Serial No. 24 ✿ ✿✿

लटि अकि सूरमति,
गरअ सोन यिखना गरअ सोन यिखना,
होल गोम जिगरस्,
ईशुन दिखना, ईशुन दिखना।

अछि मे लोसम प्रारान प्रारान,
बरअ छुस गोमुत वनहअरय यिखना।

बेलस वति प्येठ पयोमुत बअ सरिराह,
लोगमुत बअ पामन बेआर यिखना।

कर क्या चेय रोस्त हेसअ होश न्यसयोमि,
सोनसीय त्राम गोम बअज़िगार यिखना।

दूरेर चानि गोम सूर यथ बदनस,
सनअ गोम अन्दरीय वोन्य कुनि यिखना,

इन्द्रे गगरव लूरपार कोरहम,
अंबरस फरिथ गअम गमरवार यिखना।

बूज़ुम मुशिकिलन छुरव करान आसान,
बरअ तल बअ प्राराण अछि दारि यिखना।

जाय छय चे रटमिच़ प्येठ कोहिस्तानन,
अन्दअ कुन शुभवुनि मोखतहार यिखना।

यिनअ चानि छि फोलान शिनिहास गुलज़ार
आदनिकि यार म्यानि शेहजार यिखना।

छुख छाल मारान गोरी सीत-सीत,
बेकरार गोसय दिलकरार यिखना।

गंगादर छुख काल संहअरी
ही अगुर नीलकंठ लटि अकि यिखना।

आहार चोनुय कंदमूल दलुरा,
लंगि टूरेन बअरि-बअरि चेनि तिम यिखना

"पोशि मतय" मायि चानी कोसम च़अरी,
कोंगअ पोश बाल प्येठ छाविनय यिखना,
होल गोम जिगरस देशुन दिखना।

—•—

Serial NO. 25

च़अ छ़्य मअज मयअनी बु संतान चोनुय,
परान रोज़िहय शीव-शीवय भवानी,
मे पुशितन विज़ि-विज़ि अनुग्रह चोनुय,
परान रोज़िहय शीव-शीवय भवअनी।

शरण आमितयेन छ़ख करान पर्द पूशी,
तरान भवसरस तिम दया बअड छि चअनी,
छि नज़रे मेहर चयोन कलयाण मयोनुय।

च़अ छ़ख राजिरेन्य मअज जगत छुय च़े तावे,
गंडिथ गुलि च़े सअरी प्रजा बेयि राज़े,
छु अन्दर तअ बाहर परतव मे चोनुय।

डेकस चअनिसीय सास र्सियय छु ज़ोतान,
रंगारंग मुकटस जालार शुभान,
छु असवुनय हुंज़े पेठ शेहजार चोनुय।

सहस प्येठ ससिथ छ़ख च़अ जगतस फेरान,
करान रुत शुरयेन मअज च़अ आनन्द बखशान,
छु अन् धन् तअ ओरज़ुव मे आसुन चोनुय।

अथन मंज़ च़े बयोन-बयोन हथियार दअरिथ,

करुथ रामज़गतस् च़े राक्षस मअरिथ,
वाह-वाह यि पमपोश अफयदा छु चोनुय।

गरा अख च़अ यिख्ना दज़ान छुस बअ नारय,
ज़रय लाल पाद्न करख कथअ तारय,
च़े रोस्त कुस मे बोज़ेम वनय हाल पनुनय।

गयम यथ मे अनदरीय छुसय मअज प्राराण,
मे लोसम अछि वोन्य वुछान वतअ साराण,
रछा अख सनखना करख पायि मयोनुय।

फोलिम मनअ वारे मे पोशा अस्त-अस्तय,
लअगलागय च़े शेरे गुलाब वेनअ दस्तय,
छु प्राराण "पोशि मोत" अख व्यस चोनुय,
परान रोज़िहय शीव-शीवय मवअनी।

Serial No. 26

गनि यस मनि मंज़ अनुराग चोनुय,
पज़ि किनय आसि सुय बोड भागिवान,
हनि-हनि बनि तस अनुग्रेह चोनुय,
असि सुय पअज़ि किनय बोड भागिवान।

हरमोख वुछि सुय दर्शुन चोनुय,

हरदार बासि तस दीवी द्वार,
हमसा सुहम नयेथ परवोनुय।

काम क्रोध लोभ मोह आदत करि सूय,
भक्ति भावनायि हुन्द्यय जामअ छनि नअलय,
गरि मन्ज़ प्रज़लान प्रागाश चोनुय।

विजि-विजि कल थवि सूय परमेंशस,
सादनायि बल द्री रछअ वासना,
चयेत आकाशि बोज़ि डुम-डुम चोनुय।

अनअ-धनअ ओरज़ुव संचयेथ आयतस,
वेशिनारपन करि तमि मन्ज़ केंह,
दीवअ लूकअ विगनये तस वनवनीय।

धर्मनय बामन फोनस मूरयेन,
फूलिया लगि तस पोशि चमणन,
"पोशि मोत "मस गढि शीव-शीवअ परनीय,
पजि किनि आसि सुय बोड भागिवान।


न भूलो घर, न भूलो हर, करम कर जिन्दगानी में, रहो दुनिया में ऐसे, कंवल रहता है जैसे पानी में।

ॐ

सांष्टाग डंडवत लोलअ तअ मायें,
ज़गतअम्बाये छु जय जयकार,
तन मन अर्पण शोद्ध वासनाये,
ज़गतअम्बाये छु जय जयकार।

आदि प्रभातन तन मन नअविथ,
सख्रा करअ बअ प्रक्रमची,
गणपतयारअ नयेथ पूरअ श्रद्धाये।

बडि लोलअ माये पूज़ा करिथीय,
ज़ोतअरडलअ आदि दीव करिमेय साहिता,
गणशिबलअ गगनअगेरअ सीत वलमाये।

अमि पतअ लोलअ सान ख्रसअ श्री चक्रम,
आसवुन थज़रस बोड दरबार,
पोशअ पूज़ करअ तति श्री शारिकाये।

ब्योन-ब्योन यात्रा पर्वत थानस,
लक्ष्मी हअरी तअ श्री कालिका,
अष्टादशभुज़ा रछवुनय प्रज़ाये।

क्नेअ पोश डालि ह्येथ लारान-लारान,
थप करअ दामनस स्तगुरुसय,
अनुग्रह तअमिसुन्द बनि ज़ीवकाये।

सुलअमुलि वातअ बअ तुलमुलि नागस,
इष्टअ दीवी छुम तति राज्ञिना,
खीरअ खण्डअ मावस यूग मायाये।

अष्टभुज़ शूमान मुकटादअरी,
सीत छुस भूतीश्वर शीवनाथ,
पोशअ पूज़ करअहअस दयेव म्येति तारे।

अति नीरिथ वातअ वासकुर नागस,
आसवुन तति छुम दीवी क्षार,
गुलि गअंडि परअ लोलअ तोताये।

शूमान तति क्याह दीवी मन्दिर,
अज़-तीज़ प्रज़लान शाम सोन्दर,
पूज़ा करअ तति रुपभवानी।

वोतअश। येन मनिगाम प्रणाम करिथीय,
मनि किनय करहस पोशि पूज़ा,
माधव दरनीय श्री शारिकाये।

चन्द्रा दीवी तअ बेयि मअज्य दुर्गा,
सनमोख गाछि पयेठ चन्दरहामि छ्य,
लोलअ पोश लागहस बजि लोलअ तु मायें।

अथअ दअरि-दअरय वातअ वरमुल यामत,
करअ नोमरिथ अचअ दीवी दार,
शैलपुत्री तति श्री माताए।

अमृतजल क्या प्रखट्य नागस,
प्रक्रम दिमअ तथ बडि लोलअ सान,
दूर करि संकट तअ बेयि आपदायें।

त्रिकुटीय दीवता समिथीय आमित,
दंडवत माजि तति करान टोटा,
गोसअनय टेंगअ संत परान लीलायें।

शारदा वारदा नारदा दीवी,
आसवुनि पूंण सेदि यात्री,
शारदायि वअतिथ गुशि यात्रायें।

कन्डपोरि दीवी करहा जअरी,
बावअहअस पनुनय गोसअ तअ गम,
वनहअस मअज्य रोज़ असि रक्षायें।

दम फुटि गोमुत क्रुस मअज्य अन्दरीय,
होल गोम जिगरस लोल चयोन आम,
लटि अकि वातअहा तीथि यात्राये ।

साधु गंगायि सअरी छि लारान,
पाप शाप मोकलान दर्शन सीत,
नुताअनुस गाम शुभान कथ शाये ।

गंगअ अअठम दोह यात्री सअरी,
गुलि गंडि-गंडि माजि ज़अरी करान,
श्राण ध्यान करिथीय मन्ज़ धारणाये ।

ननवोर लारान बडि आशाये,
वातव याम्थ दुगा नाग,
पादि प्रणाम सोन श्री दुगाये ।

अमृत कुंड क्या पूर्ण दर्शुन,
कासान अअदी वयअदी मअज्य,
शिव रतन गीरिनय मन्ज वादिकाये ।

पेठ वालस पानअ ईशान सनिदान,
दर्शुन तमिसुन्द साक्षातकार,
शंकराचार्य पयेठ यूग साधनाये ।

वारअ-वारअ पोशि डअलय ह्येथ जिष्टाये,
वातव यामथ अअसय दरबार,
ईश्शुन तमिसुन्द शान्त वासनाये ।

स्नमोख भक्तियेन पीडा हरबुनि,
पयेठ नागस मअज्य क्या शुभिदार,
ज़ीठियअर वअतिथ निश जिष्टाये ।

गटअ पछ पअछ़म जयेठि क्रसवारे,
नअनि गय ज़गतस मन्ज़ माता,
बअडि बालअ लारान लोलअ तअ माये ।

इशिबरअ वति किन्य वातव हअरबन,
चन्दअ पोरि गामा क्या छु शूभिदार,
भवनीश्वरी तति विहित कमि त्राये ।

प्येठ नागस क्या मनदरा प्रोखटुय,
नज़रे अकि तति गछान अनुग्रह,
हलम दअरी-२ तति प्राराण बेखयाये ।

बालहामि बाला दीवी सनिधान,
कासान ज़गतस गूरअ पीडा,
बालअ पान आलवान शीवअ प्रेयाये ।

माघअ ज़ोरम दोह यात्रा चअनी,
लारन भक्ति छि भावनायि सान,
श्रय गछान पापन अमि चानि राये।

ज़्वाला दीवी ख्रिवि प्येठ बालस,
शोलान तीज़अ पनिनि साक्षात्कार,
हारअ ज़ोदिश दोह कुल प्रज़ाये।

नागस मन्ज़बाग श्राण करिथीय,
पादन चानयेन करान पूज़ा,
सादन तअ संतन मन्ज़ धारणाये।

खसहा विज़ि-विज़ि मुरनिकिस नागस
क्रारिमाजि करहा पोशि पूज़ा,
राज्ञिनया दीवी बिहित कथ शाये।

गुलि गंअडि-२ वातअ कोलअगोम यामथ,
ईशुन हावयेम कुल-वागीश्वरी,
हाल मअ बावस रोज़येम सहाये।

खनअबरनि माता प्येठ कोह ज़ारस,
आसवनि पूर्ण ज़गत माता,
टोठान हरदम भक्तिभावनाये।

ही त्रिपोर सोन्दरी रोज़तम सोनमोख,
छुस दास चोनुय करतम रक्षा,
विज़ि-विज़ि पूज़हअथ रोज़ुम धारणाये।

न्येथ अअठम दोह वातान सअरी,
कासान छुस मअज्य दोख तअ दअदी,
बखचान सोख आनन्द तअ सम्पदाये।

मन्ज़गामि दीवी शूभान थज़रस,
नागस प्येठ नोन छुस दरबार,
राज्ञिना रुपअ न्येथ माजि भवानी।

रअयथन वअतिथ मनि आम आराम,
दीवी द्वार तति क्या शुभिदार,
शुरि बअच़ हयेथ शरण माजि राज्ञिनयाये,

भअयिपोरि टिकरअ वेयि लोकिटयपोर थानस,
प्राण वोथरावस हर सातन,
प्रक्रम दिवान न्येथ माजि राज्ञिन्याये।

अकिनगामि नवम दोह तीर्थ यात्राये,
माजि शिवाये करअ पूज़ा,
कष्ट दूर कासि सोय प्रथ ज़ीवकाये।

क्रमयशोर वअतिथ अचअ नारगाये,
माजि काली हुन्द तति छुम घाम,
अस्गअ पोश लागस वजि लोलअ माये।

वजि लोलअ वातअ वअ वोतरिस गामस,
आसवुन तति छुम दीवअस्थान,
उमानगरी माजि उमाये।

पद्मासन सोय मुकट्य दअरी,
चुर्तभुज़ शेरस प्येठ वाहन,
क्रारि आंगन नयेथ तीथ यात्राये।

गाश दीयि नेत्रन दृशुन चाने,
यान्य करि अनुग्रह सयेद लक्षमी,
लूकभवन यात्रा वयखनान आये।

नागस प्येठ क्या दरबार चोनुय,
दुर्गा रुपअ ननय मन्ज़ मन्दरस,
हारवअश वातहा तीथ यात्राये।

स्वर्गदार पअज़ि किन्य छु प्रोकुठय-
आसवुन तति छुय साक्षातकार, ज़गि मन्ज़,
कजि माजि अनुग्रह गव अथ शाये।

संवर्तीथिन हुन्द फल गंगाये,
वितस्ता नअनि गअयि व्यथ वोतरअ,
वयेथ त्रुवा दोह चोन मन्ज़ भूमिकाये।

लारान भक्ति छि दूरि पयेठ सअरी,
खअरी कासान छख जगतस,
नीलअनाग सीत छुय वेयि चोनज़ितअ दाये।

तारअ गामि तार दीवी जगतस,
कासान सारनीय संकट छुय,
काली रुपअ मअज्य नअनि प्रथ शाये।

इश्टअ दीवी मयअन्य कष्ट दूर करतम,
हावतम सतचीय वथ मूडअ छुस,
ज़ान यिमअ पननीय मनि छ्वरिकाये।

लोल पोशि रंग रंग लअगिनय "पोशि मअति",
तीर्थ यात्रा चअन्य करिथीय आव,
छुस पोथुर चोनुय रोज़म रक्षाये,
जगतअम्बाये छु जय जयकार।

कश्यप भूमि देवी-तीर्थस्थान

हिमालय के उत्तरपश्चिम में स्थित कश्यप भूमि कश्मीर प्राकृतिक, आध्यात्मिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। शक्ति के पूजन का प्राचीन काल से यहां प्रचलन है। इस बात का नीलमत पुराण भी साक्षी है। रुद्रयामल तंत्र में कहा गया है: 'शवी मुखमिहोच्यते' अर्थात शक्ति-शिव के साक्षात्कार का यह प्रवेशद्वार है। माता सती के कंठ की काश्मीर में पूजा होती है, अतः शक्ति पीठों में कश्मीर सबसे श्रेष्ठ है। शक्ति का नाम महामाया है और भैरव त्रिसन्धेश्वर है।

ईश्वर द्वारा निर्मित मनुष्य की देह सारे शक्तिस्थलों व तीर्थों का समारोह है। मूलाधार से नरेन्द्र तक चलते-२ कितने ही शक्ति के अनुभव होते रहते हैं। काया के भिन्न-२ स्थानों अर्थात् मूलाधार, स्वधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा, सहस्त्रार तक पहुंचते-पहुंचते योगी अर्थात् सच्चे तीर्थ यात्री को माता के विभिन्न स्वरुपों का ज्ञान होता है। इस

अन्तर की तीर्थ यात्रा में चलते हुए माता कुण्डलिनी मूलाधार से उठकर सुष्मना नाड़ी के मध्य से सहस्त्रार में जाकर वहां विराजमान भगवान सदाशिव को अमृत से तृप्त करती हुई और स्वंय भी शिवसा-युज्ज से परम आन्नदित होती हुई साधक के समस्त शरीर को अमृत से आप्लावित करती है। और फिर अपने स्थान मूलाधार में आ जाती है। पुनः इसी प्रकार गमन आगमन करके साधकों को योगसिद्धियां प्रदान करती है।

जगतअम्बा मां ने काश्मीर को साक्षात में ही योगी के शरीर की अन्दर की क्रीडा को दर्शाते हुए भिन्न-भिन्न स्थानों पर वास किया है। प्रत्येक तीर्थस्थल माता के रुप को दर्शाता है और साधक को अनुभव युक्त भी बनाता है।
कश्मीर के कुछ शक्तिपीठों का वर्णन यूँ है :–

1. श्री महागणपति महागणेश

गणानाम ईशः सः गणेशः, अर्थात् जो सारे देवताओं के राजा हैं, वह श्री महागणेश जी हैं। महागणेश जी को प्रत्येक कार्य के आरम्भ करने से पहले पूजा जाती है, ताकि वह विघ्न-हर्ता होने के कारण प्रत्येक विघ्न का नाश करें और कार्यों में सफलता दें। उनको वक्रतुण्ड, एकदन्त, कृष्णपिंग, लम्बोधर, गजानन, विघ्न-राजेन्द्र, धूम्रवर्ण, बालचन्द्र, विनायक, मन्त्रनाथ आदि के नामों से भी भक्तजन पूजते आये हैं।

श्री महागणेश योगी के अस्तित्व में चतुरदल में वास करते हैं। इनका आसन वह कमल है, जिसके चार पत्ते खिले हुए होते हैं, तथा बीच में शिव के रुप का शून्य से पूर्णतया मिलन होने के लिए उसे चारों वेदों का अध्ययन करना है, चारों दिशाओं पर विजयी होना है तथा मन, कर्म व वचन से निर्मल होकर आगे बड़ना है।

काश्मीर मंडप में प्राचीन काल से ही गणेश पूजा का बड़ा महत्व है। उनके पूजन के लिए अनेकों मन्दिरों का निर्माण हुआ, जिनमें से कुछ आजकल भी विद्यमान है।

सोनमर्ग जाते जाते 'हारि गनिवन' नामक एक मन्दिर है, जो श्री गणेश जी को ही समर्पित किया गया है। यह सुन्दर मन्दिर दरिया सिन्ध के बीच चिनार वृक्षों के मध्य बहुत सुन्दरता प्रदान करता है। कहते हैं श्री गणेश ने अपना अस्तित्व कश्मीर की पूरी घाटी में फैलाया है। तथा इस तीर्थ स्थान पर उनके चरण हैं।

कहा जाता है कि उनका विशेष निवास स्थान श्रीनगर शहर में है, जिसका मुख्य मन्दिर गणपतयार नामक मन्दिर है। यह मन्दिर वहां बना हुआ है, जहां एक समय में काश्मीरी ब्राह्मणों की सभ्यता व साहित्य शिखर पर थे।

कहते हैं, श्री महागणेश जी का शीर्ष गणेशबल अशिमुकाम में है, जहां एक सुन्दर मन्दिर दरिया लिद्दर के किनारे बसा हुआ है। श्री महागणेश की स्तुति के साथ 'श्री' का प्रयोग हमेशा होता है। 'श्री' का अर्थ है लक्ष्मी, और महागणेश जी लक्ष्मी माता के इष्ट हैं। अतः अष्ट लक्ष्मी अर्थात् गजा, वीर्या, धना, ऐश्वर्य, देह, सम्पदा, विजया को प्राप्त करने के लिए श्री गणेश जी को पूजना अनिवार्य है।

अपने श्री मुख से गणेश जी दर्शाते हैं कि उनका मुख प्रणवाकार में है। वे प्रत्येक कार्य

को बुद्धि के द्वारा करते हैं। वे अपने पूजन से दिखाते हैं कि ईश्वर-अर्चन के लिए भौतिक हाथों का होना अनिवार्य नही है, अपितु मन व रोम-रोम में भक्ति होनी चाहिए, अपनी सुष्मना नाडी को मुख पर ही दर्शाते हुए वह दिखाते हैं कि उन्होंने रेचक, कुम्भक व पूरक पर विजय प्राप्त करके अपनी शक्ति को उजाग्रत किया है। तथा वे प्रत्येक कार्य उजागर की हुई शक्ति अथवा सुष्मना नाडी से ही करते हैं।

उन्हें लम्बोधर भी कहा जाता है जिसका सीधा अर्थ है-वह जिनका उदर बडा हो। वास्तव में उन्होंने लम्बूधर रुप इसलिए धारण किया है, क्योंकि वे आध्यात्मिक ज्ञान के भंडार हैं। उन्हें केवल भक्ति, आध्यात्म व श्रद्धा का आहार ही स्वीकार होता है। अतः जो उनके चरणों का आश्रय लेता है, उसका अंहकार, द्वेष, व ईर्ष्या समाप्त हो जाती है।

श्री गणेश बालचन्द्र होने के कारण अपने शीर्ष पर धारण किए हुए चन्द्रम के अमृत से भक्तों के अभिलाषाओं, कामनाओं, संतापों से जले हृदयों को ठंडक पहुँचाता है, यह अमृत भक्तों को संतुलित रखकर उनके

कर्मों से उत्पन्न विष को अमृतमयी बनाता है।

श्री महागणेश ने मूषक को वाहन बनाकर मन की चंचलता रुपी मूषक को ही नियन्त्रित किया है।

जब महागणेश जी का अनुग्रह प्राप्त होता है तो भक्तों को वे हीरे व मणि भक्ति, ज्ञान, सर्मपण के रुप में मिलते हैं, जो श्री गणेश जी ने अपने शरीर पर धारण किए हैं। उनका चमकता हुआ सूर्य की भाँति मुकट उस शिखर को दिखाता है, जिस पर पहुँचने की योगी को लालसा होती है। यह मुकट रुपी शिखर प्रत्येक विद्या, प्रत्येक ज्ञान व प्रत्येक अनुग्रह से सम्पन्न है, आपका आश्रय ही परमधाम की पहली सीढ़ी को खोलता है।

नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्त धरायच
नमः ईश्वर पुत्राय, श्री गणेशायः नमो नमः

2. माता शारिका (हारी पर्वत)

प्राचीन काल से माता शारिका का पवित्र तीर्थस्थल साधना व उपासना का केन्द्र रह चुका है। कहते हैं कि काश्मीर जो प्राचीन काल में "सतीसर झील" के नाम से विख्यात था, एक दानव 'जलोद्भाव' के आंतक से काफी विचलित था। मां की आराधना करने पर, मां ने मैना का रुप धारण किया तथा एक कँकर से जलोदभाव का वध किया। यही कँकर विशाल काय होकर 'हारी पर्वत' में परिवर्तित हो गया। मैना का संस्कृत 'सारिका' है अतः यह तीर्थ माता शारिका से संबधित हो गया।

श्रीनगर स्थित इस तीर्थस्थल की यात्रा पहाडी के गिर्द परिक्रमा देने पर ही पूरी होती है। इस तीर्थस्थल की ड्योढी से प्रवेश करते ही महागणेश जी का मन्दिर है। भक्त-जन अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर आगे बढ़ने के लिए अपनी वासनाओं को शुद्ध करने का निर्णय करते हैं, तथा देवी आँगन की तरफ चल पडते हैं। भक्तजन 'सप्तऋषि' नामक जगह पर जाते हुए कँकर गिनने के द्वारा अपने प्रश्नों का उत्तर पाते हैं।

श्री चक्रेश्वरी की ओर यात्रा भक्तजन

देवी आंगन से ही शुरु करते हैं। यहीं वह केन्द्र है, जहां पर माता शारिका की असीम शक्ति है। पहाडी के शिखर पर अष्टादशभुजा, माता शारिका की मूर्ति एक भव्य मन्दिर में स्थापित है, उनके हाथों में धरी हुई विभिन्न वस्तुऐं मां के संसार की विभिन्न शक्तियों पर नियन्त्रण को दर्शाती है, पहाडी से उत्तर का माता काली, हअरी, माता लक्ष्मी के अस्थापन है, जगह-२ माता के मन्दिरों के साथ बहुत सारी भूमि, कीर्तन के लिए सुन्दर कमरे व भजन सत्संग के लिए बड़े-२ हाल बनाये गए हैं। पोखरिबल के अमृत कुंड का क्या कहना, जो योगियों के आनन्दित हृदयों में वास करता है। काठी दरवाज़े से बाहर आकर कस्तूर पिंड दिखाई देती है, जो हमें काश्मीर की धार्मिक सहनशील परम्परा का स्मरण कराती है। एक तरफ से माता का मन्दिर और दूसरी तरफ एक सूफी सन्त मुकद्दम साहब की ज़ियारत है।

इस तीर्थ पर कितने ही महापुरुषों को योग सिद्ध हुए हैं जिनमें से आदि शंकराचार्य, श्री ऋषिपीर, श्री कृष्ण जी कार, श्री साहब कौल आदि प्रधान है।

माता शारिका का आशीर्वाद आज भी पूरी मानवता पर तथा कश्मीर पर विशेषतया है।

बीजैः सप्तभिरुज्जवलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः,
सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्कजयुगा या सप्तलोकार्तिह्रत।
कश्मीर प्रवरेशमध्यनगरी प्रद्युम्नपीठे स्थिता,
देवी सप्तकंसयुता भगवती श्री शारिका पातु नः ॥

3. माता राज्ञिन्या – तुलमुला क्षीरभवानी

संसार की विपत्तियों से मुक्ति दिलाने वाली, भवसागर को तारने वाली, भक्तजनों के हृदयों को अपने अमृत प्रवाह से मंगलमय बनाने वाली तथा सतोगुण रुप में प्रकट होने वाली माता को भक्तजन श्री राज्ञिन्या के नाम से पुकारते है। माता राज्ञिन्या से संबधित तीर्थस्थल खीर भवानी कश्मीर के दक्षिण में 21 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यंहा माता अपने स्वामी वीर भूतेश्वर के संग वास करती है। यहाँ का शान्त वातावरण व देवी का स्नेहमयी प्रचण्ड शरणागतों को शीतलता व निर्मलता देने के साथ-साथ

निरन्तर आकर्षित करता रहता है।

इस महान दरबार की ड्योढी से प्रवेश करते ही महान अमृत कुंड सामने आता है, जिसमे माता राज्ञिन्या संगमरमर के मन्दिर में विराजमान है। इस अमृतकुंड के इर्द-गिर्द चिनारों से घिरे बहुत बडे प्राँगन को पार करके अनेकों धर्मशालाएँ हैं। इन धर्मशालाओं में आकर यात्री विश्राम करते हैं।

माता राज्ञिन्या काश्मीर की पुण्य भूमि में कैसे आई, इस बारे में अनेकों किवदन्तियां है। एक कथा यह भी है कि समुद्र मन्थन के समय अमृत की कुछ बूंदें कश्मीर में तुलमुला, रायथन, मञ्ज़गाम, लोकटीपुरा वग़ैरा पर पडी, जिसे वहां अमृत कुंडों का प्रवाह हुआ। अतः माता ने रायथन में विश्राम करके तुलमुला क्षीर भवानी को अपना निवास स्थान चुना। यह भी प्रथा है कि माता ने एक भक्त-जन को स्वपन में यह आदेश दिया कि वह नागेश्वरी के रूप में उस भक्त को रास्ता दिखाएगी और जहां वह रुकेगी, वहीं उनका निवास स्थान होगा। दूसरे दिन ऐसा ही हुआ, और जहाँ वे रुकी, वह आजकल खीर भवानी का तीर्थ है।

इस पवित्र स्थान पर माता ने सतोगुणी

आहार जैसे दूध व मिष्टान स्वीकार किए। अतः मास, मछली व अंडा खाकर यहां आना निषिद्ध है।

अन्दर के अमृत कुंड का प्रवाह बाहर तक जाता है; जहां पर भक्तजन स्नान आदि करके मानसिक व शारीरिक शुद्धि करके, माता के दरबार में प्रवेश करते हैं। इस पुण्य प्रांगन के प्रत्येक चिनार के पत्ते पर उन महान सन्तों, सिद्धों व महापुरुषों की उपासना की ध्वनियां अंकित है, जिन्होंने चिरकाल से यहां माता की उपासना करके अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया। स्वामी विवेकानन्द को माता के साक्षात दर्शन यहां हुए थे। इस दरबार में भक्तजन अपनी श्रद्धा, भक्ति, विश्वास व भावना को लेकर क्या कुछ प्राप्त नही करते। यहां की विशेष बात यह भी है कि शारीरिक दुर्बलताएं माता के दरबार की शरण लेने से दूर हो जाती है तथा भक्तजन ठीक होने पर इस अमृतकुंड में सोने या चांदी का बनाया हुआ अंग अर्पण करते हैं।

माता का जन्मदिन ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्टमी को होता है। इस दिन भक्तजन अत्यन्त श्रद्धा के साथ दरबार में आते रहे हैं। तथा मां को पुष्प, कंद (चीनी की बड़ी

दलियां) खीर आदि अर्पण करते हैं। असंख्य दीपकों से माँ की आरती उतारी जाती है, जिससे माँ का ओंकार रुपी पलँग और भी प्रज्वलित हो जाता है।

विभिन्न परिस्थितयों पर इस अमृत कुंड का रंग विभिन्न रंगो में परिवर्तित होता है, जो सत, रज व तम रुप को दर्शाकर भविष्य में होने वाले शुभ या अशुभ की सूचना देता है। इसीलिए यह अमृतकुंड माता का सूक्ष्म व साक्षात बिम्ब है। माता ने अनेकों बार अमृत कुंड पर अपने चक्र की छवि दिखाकर कितने ही भक्तों को कृतार्थ किया है। साधक प्रेमपूर्वक माता की स्तुति में पञ्चस्तवी, दुर्गा सप्तशती, भवानी सहस्त्रनाम का पाठ करते रहते हैं।

खीर भवानी का यह महत्त्वपूर्ण तीर्थ अब सब भक्तों की साधना व आनन्द का केन्द्र है, जो निर्मल व शान्त भाव से माँ की शरण लेते हैं।

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरिचन्द्र सहस्त्ररश्मि
स्कन्दद्विपानन हुताशन वन्दिताये।
वागीश्वरि त्रिभुवनेश्वरि विश्वमात
रन्तर्बहिश्च कृतसस्थितये नमस्ते।

4. वासकुरा देवीस्थान

गान्दरबल से कोई दस किलोमीटर की दूरी पर वासकुरा नाम का एक गाँव है। यह गाँव अपने विशेष प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण बहुत ही मनोहर है। एक तरफ माता वितस्ता का प्रवाह और दूसरी ओर सिन्धु नदी का मधुर रस भरा जल मन को मोहित करते हैं। इस गाँव में माता रुपभवानी का एक तीर्थस्थान भी है। माता रुपभवानी श्रीनगर के एक ब्रहमण घराने श्री माधव जू दर के वंश से उत्पन्न हुई। उन्होंने चश्मे साहिबी, वेतशन मनिगाम में तपस्या करके वासकुरा में भी कुछ समय बिताया, माता स्वंय शारिका का स्वरुप होने के कारण सारे कश्मीर प्रदेश में अपने पुण्य प्रताप व अपनी अद्‌भुत लीलाओं से प्रसिद्ध है। कहते हैं जब माता वेतशन से वासकुरा आई तो एक मुसलमान भाई ने कहा 'हे मातेश्वरी, मेरा जवान बेटा बचपन से ही अन्धा है। कृप्या उसकी आखों को ज्योति प्रदान करें।' देवी प्रसन्न मुख थी और इस भक्त से कहने लगी कि वह अपने बेटे से वासकुरा में चश्मा खोदने को कहें, क्योंकि जो पानी

चश्मे से निकलेगा वह उसकी आखों को ज्योति देगा। वह भक्तजन बहुत सात्विक और निष्ठावान था, उसने अन्धे बच्चे को चश्मा खोदने को कहा, ज्यों ज्यों वह भूमि खोदता गया, उसमे अद्‌भुत शक्ति पैदा होती गई। इस चश्मे में निकला हुआ जल उसने अपनी आंखो पर लगाया तो उसकी द्रष्टि लौट आई इस वार्ता को देखकर सारे मतों के लोग माता रुपभवानी के प्रति आकर्षित हुए और तन मन धन से इसकी सेवा में लग गए।

कहते हैं कि माता रुपभवानी स्नान व कंघी करने के लिए वासकुरा जाती थी, आज भी इनकी कंघी, कुछ कपडे तथा इनकी पोथियां इस मन्दिर के अन्दर बडी भावना, श्रद्धा और प्रेम से रखी गई है। भक्त 'साहिब सप्तमी' अर्थात् माघ कृष्णपक्ष सप्तमी के दिन दर्शन करने के लिए आते हैं इस तीर्थस्थान पर महान यज्ञ रचाये जाते हैं तथा सतसंग, भजन व कीर्तन का भी आयोजन होता है।

या देवी सर्वभूतेषु मातृ रुपेण संस्थिता
नमस्तसै नमस्तसै नमस्तसै नमो नमः।

5. चन्द्रहामा, माता चन्द्रादेवी स्थान

बारामूला ज़िले में पटन के निकट हैदरबेज गाँव से 6 किलोमीटर की दूरी पर माता चन्द्रा भगवती का तीर्थस्थान स्थापित है। इस जगह को प्रायः सारे मतों के लोग 'चन्द्रहामा' के नाम से पुकारते हैं, जो माता चन्द्रा के नाम से ही सबोंधित है। इस तीर्थस्थान पर एक बड़ा कल्पवृक्ष है। तथा पुराना मन्दिर व नया मन्दिर भी है।

माता चन्द्रा षोडशकला अमृतरूपी है और चन्द्रमा की इस कलाओं की प्रदान है। माता चन्द्रा अष्टभुजाधारी, नीले रंग की माथे पर चन्द्रमा धारण किए हुए, त्रिनैनी, पद्मासनी, अपनी भुजाओं में बुद्धि का विकास करने के लिए भिन्न-२ अस्त्र धारण किए हुए और हरे रंग के वस्त्र पहने हुए हैं।

इस तीर्थस्थल के साथ कोई दस कनाल भूमि प्राचीन काल से ही यात्रियों की सुविधा व यज्ञ वग़ैरा करने के लिए पुराने शासकों ने समर्पित की है। प्रायः ज्येष्ठ अमावस्या के दिन इस तीर्थ पर महायज्ञ रचाया जाता है। और सारे प्रदेश से हज़ारों की संख्या में लोग तीर्थस्थान पर आकर पुण्य

प्राप्त करते हैं।

या: स्फाटि काक्ष गुणा पुस्तक कुन्डि काड्यां
न्याक्षा समुध्यतकरा शिरदिन्दु शुभ्राम ।
पदमासना च़ हृ्दये भवतीमुपास्ते
मातः स विश्वकविता किंक चक्रवर्ती।

6. माता शैलपुत्री तीर्थस्थान

बारामुला से एक मील की दूरी पर बारामुला-ऊड़ी मार्ग के प्रारम्भ पर पहाड के दामन पर माता शैलपुत्री का तीर्थस्थान है। इस तीर्थस्थान पर एक विशालकुंड़ है, जिसके भीतर माता शैलपुत्री का सुन्दर मन्दिर स्थापित है। माता शैलपुत्री के बाऐं तरफ माता वितस्ता का प्रवाह है। शास्त्रानुसार माता शैलपुत्री का ध्यान नौदुर्गा के आरम्भ में प्रतिष्ठित किया जाता है। शैलपुत्री का अर्थ माता दुर्गा का वह ध्यान है जो हमे शक्ति का वह रुप ज्ञात कराता है, जो पर्वत की तरह स्थिर है, अटल है और अथाह श्रद्धा और भक्ति प्रदान करता है, यहां पर

माता शैलपुत्री की एक मूर्ति बहुत प्राचीन काल से स्थापित है। माता शैलपुत्री वृषभवाहन, गौरे रंग वाली, चतुरभुजा, हाथों में त्रिशूल, कमण्डल, पदम और माला धारण किए हुए है।

माता शैलपुत्री की पूजा नौदुर्गा के प्रारम्भ में ही की जाती है। भक्तजन सहस्त्रों की संख्या में अष्टमी व नवमी के दिन खीर, मिष्टान आदि इस पवित्र कुंड़ में अर्पण करते हैं। प्राचीन काल से स्थापित एक यज्ञशाला में प्रायः यज्ञ किए जाते हैं। समय के परिवर्तन के साथ-साथ इस तीर्थस्थान पर बहुत बाधाऐं आते हुए भी यह तीर्थस्थान स्वयं रक्षक बनकर सारे प्रान्त को बचाता रहा है।

इस तीर्थस्थान के दाएं तरफ एक सुन्दर पहाडी के दामन में 'कूटितीर्थ' नाम से एक तीर्थ है। कहा जाता है कि माताश्वरी की पूजा करने के लिए विश्व के सारे तीर्थस्थान कश्यप मुनि के समय कश्मीर में आ गए और इस पहाडी पर देवी की पूजा करने लगे और साधु सन्त दूसरी पहाड़ी पर अपना शीष झुकाकर माता की आरती उतारने लगे। इस स्थान का नाम कश्मीरी भाषा में 'गुसअन्य टेंग' के नाम से प्रसिद्ध है।

आजकल भी विभिन्न प्रान्तों से यात्री आकर उन सन्तों के प्रति और तीर्थों के प्रति श्रद्धा के पुष्प अर्पण करते हैं। इसी तीर्थस्थान में एक ओर मुसलमानों के एक बड़े सन्त 'जानबाब साहब' की ज़ियारत भी है। दूसरी ओर सिक्खों के गुरु हरगोविन्द जी का एक विशाल गुरुद्वारा भी है। यहां का वातावरण व प्राकृतिक सौन्दर्य मानव का हृदय मोहित करके उसे देवीमय बनाता है।

कश्मीर के लोगों में माता शैलपुत्री से संबधित बहुत ही गाथाऐं प्रसिद्ध है। यह भी सिद्ध है कि अगर किसी मानव को कोई कष्ट हो तो इस तीर्थस्थान पर निवृत्ति होके देवी के चरणों में शीष झुकाकर सब आपत्तियाँ और कठनाइयाँ तुरन्त समाप्त होती है।

माता शैलपुत्री के कुंड का जल भिन्न-भिन्न समय पर अपना रँग परिवर्तित करता है। माता बहुत से कश्मीरी पंडितों की कुलदेवी तथा इष्टदेवी है। और यहां पर कितने ही कश्मीरी प्रदेश के सन्तों की साधना सिद्ध हो गई है।

वन्दे वञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारुढ़ां शूलधरां शैलपुत्री यशस्विनीम्।

आनन्द सुन्दर पुरुदरमुक्तमाल्यं
मौलौहठेन निहितं महिषासुरस्या ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मन्जु-
मञ्जीरशिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः ॥

7. माता शारदा तीर्थस्थल

बारामूला प्रान्त के केरन घाटी में माता शारदा का तीर्थ, जो इस समय पाकिस्तान के अधिकार में है, प्रधान माना जाता है। प्राचीन समय से ही लोग शारदा देवी के दर्शन के लिए देश के भिन्न-२ प्रान्तों से आते थे। यह स्थान एक पहाडी पर केरन के पूर्व में स्थित है। पहाडी के ऊपर से चलते चलते भक्तजन रास्ते में और भी बहुत सी यात्राऐं करके इस द्वार पर पहुँचते हैं।

माता शारदा बुद्धि की स्वामिनी है तथा अपने भक्तों को मेधा शक्ति के रुप में बुद्धि प्रदान करती है।

माता शारदा का ध्यान है : चतुरभुजा, पदमासना, वीणा हाथ में लिए हुए, हँस वाहिनी ।

इस मन्दिर से आगे चलकर दूसरी पहाड़ी पर वरदा व नारदा देवी के मन्दिर भी स्थापित हैं। चूंकि यह तीर्थ इस समय पाकिस्तान के अधिकार में है, अतः यात्री अब इस देवी का प्रसाद पाने के लिए गुशी बाँड़ीपुर के तीर्थस्थान जो कि माता शारदा का ही द्वार है, प्रायः दर्शन के लिए जाते हैं।

एक कश्मीरी गाथा यह है कि एक मूढ़ निरक्षर ब्रह्मण जो कि माता शारदा की यात्रा के लिए घर से निकला तो रास्ते में उसे अन्य यात्रियों द्वारा बहुत व्याकुल होना पड़ा, जिन्होंने उसकी निरक्षता पर हँसी उड़ायी। वह उनके शास्त्रार्थ तथा पाठपूजा में सम्मिलत न हो सका, क्योंकि न उसे अक्षरबोध था, और न ही कोई विधा धन था। परन्तु इस मूढ़ ब्रह्मण में बचपन से ही माता शारदा के प्रति भक्ति व भावना ज्योत की तरह प्रज्जवलित थी। माता शारदा के दर्शन करके वह धर्मशाला में सो गया। रात को स्वप्न में स्वंय माता शारदा उसे आकर पढ़ाने लगी। और कुछ क्षणों में ही उसने सर्वशास्त्रों तथा वैदिक धर्म का ज्ञान किया। सुबह उठते ही वह देवी की आरती

उतारने के लिए मन्दिर में चला गया तो देवी शास्त्र की लीलाऐं वह संस्कृत में पढने लगा। उसकी शास्त्रों ने दिक्ष विजय होने को देखकर सारे विद्वान दंग रह गए।

इस तीर्थस्थान पर बहुत सी धर्मशालाऐं बनाई गई है, तथा कुछ यज्ञशालाऐं भी मौजूद हैं।

या देवी सर्वभूतेषु शारदा रूपेन ससथिता।
नमस्तसे नमस्तसे नमस्तसे नमो नम:॥

8. माता गँगा – साधुमाल्युन

कुपवाड़ा ज़िले में स्थित कंडी इलाके में बटरखनी (नृतनसू) के निकट पहाड के दामन पर 'साधुगंगा' या 'साधुमाल्युन' स्थित है। यहाँ पर गँग अष्टमी (भादों के महीने में) के दिन माता गंगा का प्रवाह होता है। इस स्थल पर एक महान् कश्मीरी सन्त श्री सिरीकंठ जी ने गँगा माता को यहाँ लाया है। माता गँगा यहाँ कैसे आई, इस बारे में कश्मीर में एक कहानी प्रचलित है।



S. BRIJBASI & SONS
MIRZA STREET BOMBAY-3.

26 SRI MAHISHASUR MARDHINI

S. S. BRIJBASI & SONS
32/1, FATEHPURI DELHI-6.

[illegible]

कहते हैं कि इस इलाके के निकट एक अत्यन्त सरल स्वभाव के एक किसान सिरीकंठ जी रहते थे। अपनी सरलता से वे श्रद्धापूर्वक गंगा अष्टमी के दिन हरमुकट गँगा की तीर्थ यात्रा को जाते थे। जबकि उनके साथी विधिपूर्वक पूजा पाठ में मग्न हो जाते थे। जबकि उनके साथी विधिपूर्वक पूजा पाठ में मग्न हो जाते थे, वह अपने निष्कपट हृदय के कारण वहां माता गँगा को साक्षात रुप में ढूंडते थे। सिरीकंठ जी हर साल गँगा माता की यात्रा पर जाने लगे, तथा माँ के साथ सम्मुख व प्रत्यक्ष होकर वार्तालाप करने लगे। माँ के प्रताप से उनकी तीनों गाँठे खुल गई, वह तेजस्वी होते गए और माँ से उनका अत्यन्त घनिष्ठ सम्बंध [illegible] गया।

एक बार वृद्धावस्था में उसे अपने लोग चारपाई पर गँगा माता के दर्शनार्थ ले गए। माता ने उसकी दशा व श्रद्धा और भक्ति देखकर उसे भगवान शँकर के द्वारा एक मणि दी, जो उसकी प्रत्येक मनोकामना को पूरा कर सकती थी। पहली मनोकामना उन्होंने यही माँगी कि वह माता गँगा के दर्शन के लिए गँगजल पहुँचे, माँ ने अपने भक्त की सरलता देख

तथा यह भी पता लगा कि इस सरल भक्त को हीरे ज्वाहिरात से अधिक माँ के दर्शन की अभिलाषा है। अतः उसने सिरीकंठ जी से कहा "अब तुम बूढ़े हो गए हो, यहां हर साल नही आ सकते। इसीलिए अब मैं ही तुम्हारे पास आऊंगा"; इसी बात का प्रणाम देने के लिए माता ने सिरीकंठ जी का आसह व कमण्डल वहीं रखवाया, तथा कहा कि जब वे उन्हें दर्शन देंगी, तो सबसे पहले उनका आसह व कमण्डल दृश्य में आएगा। माता के कथन अनुसार संगीत भरी आवाज़ में माता गँगा सिरीकंठ जी के निवासस्थान के समीप ही प्रवाह में आ गई। सबसे पहले कमण्डल और आसह निकले तथा माँ स्वंय इस निष्कपट, भक्तिपूर्ण, सरल स्वभाव वाले भक्त के पास पहुँच गई। इसी स्थान पर इस महान साधु की समाधि भी है।

माता गँगा चतुरभुजा, मगर पर वाहन, कमल हाथ में लिए, श्वेतवस्त्र धारी, तथा अभय देना वाला हाथ ऊपर को उठाए हुए है।

यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य इतना प्रभावित करता है कि पूरा ज्ञात होता है कि माता गँगा स्वर्ग से उतरकर मृत्युलोक के पापों का नाश करने के लिए आई है। अपने

निर्मल जल से वह मनुष्य की मैली वासना को अपने अमृत जल से धोती आई है।

आधुनिक युग के कितने ही सन्तो जैसे श्री लक्षमण जी, आफताम जी, स्वामी नन्दलाल जी ने यहां तपस्या करके अपनी तपस्या को सफल बनाया है।

जिस प्रकार साँप अपनी केंचुली बदलकर नई केंचुली ग्रहण करता है, उसी प्रकार पाप की केंचुली बदलकर योगी भी पुण्य प्राप्त करते हैं, तथा उन साधु को प्रणाम करते है जिन्होंने माता गँगा को यहां लाकर सारे प्रान्त को अमृतमयी बनाकर, पूरा शक्ति का ही स्थान बनाया।

सुधाशुकृतशेखरां स्मितमुखीं तुषारप्रभां
सकुम्भवरवारिजाभयकरां वलक्षाम्बराम्।
नदी नदनिषेवितां मकरवाहनारोहिणीं
भये महति सोदरे नतिमुपेत्य गंगा श्रये॥

9. दुर्गानाग

श्रीनगर के मध्य भाग अर्थात जम्मू-कश्मीर की राजधानी से एक किलोमीटर की दूरी पर माता दुर्गा का एक महान तीर्थ शंकराचार्य की घाटी के दामन पर स्थापित है। पूर्वकाल से भक्तजन माता दुर्गा के दर्शन के लिए प्रतिदिन इस तीर्थस्थान पर आते हैं।

यहाँ पर माता दुर्गा का एक कुंड है जिसमें अमृतरुपी जल प्रवाहित होता है। माता दुर्गा अपने भक्तजनों को दुर्गम संकट से तारने वाली है। इस तीर्थस्थान पर विभिन्न शासकों ने बडी-२ धर्मशालाऐं बनाई और जगत कल्याण के लिए माता दुर्गा के चरणों मे महान यज्ञ रचाए। 'दुर्गानाग' कश्मीरी में माता दुर्गा के कुंड का नाम है। प्रायः भक्तजन त्योहार पर दुर्गा अष्टमी के दिन तीर्थ यात्रा के लिए कश्मीर प्रदेश के विभिन्न प्रान्तों से इस तीर्थ पर आते हैं। आधुनिक काल में इस तीर्थ की बिखरी व टूटी धर्मशालाएं को पुनः अतिष्ठित करने के लिए महातमा स्व० शिवरत्नगिरि जी महाराज ने बहुत प्रयास किया। उनके समय में इस तीर्थ पर पुनः नई धर्मशालाऐं

बनाई गई तथा मन्दिर आधुनिक ढंग से बनाया गया। इस तीर्थस्थान पर महात्मा शिवरत्न गिरि जी महाराज की समाधि भी विधमान है।

कहते हैं कि पूज्य महात्मा जी के समय में यहां पर विद्या अथवा देवी अर्चना का एक महान् केन्द्र माना जाता था, प्रतिदिन सहस्त्रों की संख्या में लोग महात्मा जी के प्रवचन सुनने के लिए आया करते थे। उनके प्रयास से इस तीर्थ की सारी भूमि स्वतंत्र की गई थी और एक विशाल दीवार तीर्थ के चारों ओर बनाई गई थी। तब से आजतक इस तीर्थ की देखभाल भक्तजन करते आए हैं। आजकल यहां पर एक संस्था कार्यान्वित की गई है, जो यात्रियों की सुविधा के लिए बहुत काम कर रही है। मन्दिर में माता दुर्गा की एक महान मूर्ति स्थापित है। माता अष्टभुजा, सुन्दरमुखी, सिंह सवारी, अपनी भुजाओं में विभिन्न शस्त्र धारण किए हुए, सिन्दूर तिलक धारी और गुलाबी वस्त्र धारण किए हुए है।

भक्तजन श्रावण पूर्णमासी के पर्व पर जब भगवान शँकर के दर्शनाथ शँकराचार्य जाते हैं, तो सबसे पहले यहां के पवित्र कुंड में स्नान करते हैं और रात भर देवी के चरणों में लय होकर भजन कीर्तन करते हैं।

सत्य में माता दुर्गा का यह तीर्थस्थल हृदय को एक ही दृश्य में मोहित करता है और मनोकामनाएँ पूरी करता है।

दुर्गा स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः
करवालखेटं विलसद्धस्ताभिरा सेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

10. माता ज्येष्ठेश्वरी

पूर्वकाल में जब समुद्रमन्थन हुआ तो समुद्र में से पार्जित, अश्वनि, लक्ष्मी इत्यादि रत्न के साथ-साथ विष भी प्राप्त हुआ। गन्धर्व, देवता और राक्षस आपस में रत्नों को प्राप्त करने के लिए संग्राम में पड़ गए। जगत कल्याण के लिए भगवान शंकर ने समुद्र में से प्राप्त हुए विष को अपने कंठ

में धारण कर लिया। लक्ष्मी देवी को भगवान विष्णु को समर्पित किया गया। इस पर राक्षस क्रोधवश होकर देवताओं से घोर संग्राम करने लगे। देवी-देवता भयभीत होकर उत्तर दिशा पुण्यभूमि काश्मीर की ओर भागते आ गए। राक्षस पीछा करते-करते कश्मीर पहुँच गए और वहाँ के मध्य भाग में देवताओं और राक्षसों में घोर युद्ध हुआ। देवता भगवान शँकर की शरण में आकर उनके लिंग की पूजा करने में भावातीत हो गए। ऋषियों, मुनियों ने असंख्य घटों से (जिन्हें कश्मीरी में गागुर कहते हैं) लिंग पर भावपूर्वक व विधिपूर्वक जल बलि अर्पण की, ईश्वर सत-पुरुषों की निष्काम तथा भावपूर्ण श्रद्धा और भक्ति को देखकर लिंग में से प्रकट हुए और देवी-देवताओं को आशीर्वाद देकर प्रसन्नता से बोले, "जाओ मैं ने आपकी रक्षा के लिए अपनी मानसपुत्री प्रकट की है। और वह गुप्त रुप में पहाड़ के निकट स्थापित की गई है। वह मेरी बेटी आपकी रक्षा करेगी"। यह स्थान जहां पर भगवान् शँकर ने देवी-देवताओं को वरदान दिया, तब से 'गगरिबल' नाम से प्रसिद्ध है, अर्थात वह स्थान जहां घंटों से ईश्वर पर बलि चढ़ाई गई।

यह मोक्षद्वार इस मानस इच्छा से उत्पन्न हुई देवी के पास पहुँचने का आज भी मार्ग दर्शक है। ज्योंही राक्षसों को ज्ञात हुआ कि भगवान शँकर ने एक नारी गुप्त रूप से पहाड़ की गुप्त जगह पर प्रतिष्ठित की है, तो राक्षस सन्देह में पकड़कर यह सोचने लगे कि भगवान शँकर ने इस गुप्ताकार स्थान पर समन्दर से प्राप्त लक्ष्मी छुपा ली है। राक्षस अट्टहास में ध्वनि लगाते-२ इस स्थान पर पहुँचने के प्रयत्न में बहुत इच्छुक बन गए।

देवी देवता भगवान शँकर की मानसपुत्री के वैभव में बृहस्पति जी को प्रसन्न करके उसको इस पवित्र स्थान का द्वारपाल बनाने में सफल हुए। ज्येष्ठ का महीना था, बहुत घोर युद्ध राक्षसों और देवताओं के बीच छिड़ गया। भगवान शँकर की मानसपुत्री ने अपने पँकज व प्रज्जवलित नेत्रों और कर-कमलों से राक्षसों को भस्म और हताहत कर दिया। यह ईशपुत्री बड़ी-बड़ी शिलाएँ राक्षसों पर फेंककर उनका नाश करती गई। इन शिलाओं को आजकल भी 'हस्तपल' के नाम से स्मरण और पूजन किया जाता है। 'गुप्तकार' स्थान पर जिसे आजकल 'गुपकार' कहते हैं, ईश्वरपुत्री खुले मैदान

में पहाड़ के दामन पर युद्ध करने आ गई। देवी ने इस समय करालमुख, अष्टभुजा, संहारकारक अस्त्र और शस्त्र धारण करके अलक्ष्मी रुप धारण कर लिया। अन्त में सत्य की विजय होकर राक्षसों का नाश हुआ। चारों तरफ प्रकाश फैल गया और प्रसन्नता व हर्ष घट-घट में प्रकट हो गया। शास्त्रानुसार यह दिवस वृहस्पतिवार और ज्येष्ठ मास की कृष्णपक्ष पँचमी थी। देवी देवता व ऋषि-मुनि सब इस ईशपुत्री को वन्दना इस तिथि पर करने लगे। भगवान आषतोष, देवादिदेव महादेव प्रसन्न होकर इस देवस्थान पर प्रकट हो गए और वरदान दिया कि 'यह ईशपुत्री मेरी सबसे ज्येष्ठ पुत्री है' और तब से भगवान के द्वारा ही ज्येष्ठेश्वरी के नाम से प्रतिष्ठित हो गई। यह भी वरदान दिया गया कि ज्येष्ठ के महीने में जो प्राणी सात गुरुवारों को प्रातः ब्रह्ममूर्त में इस परम पवित्र दरबार में अपनी भावना के फूल ज्येष्ठेश्वरी माता लक्ष्मी के चरणों में अर्पण करेगा वह पापों से मुक्त होकर सर्व ऐश्वर्य प्राप्त करके परलोक के उद्धार का भी सौभाग्य प्राप्त कर लेगा। तब से ज्येष्ठेश्वरी के इस

पवित्र स्थान पर असंख्य नर नारी अपने भाव प्रकट करने के लिए प्रातः ब्रह्ममुर्त से संध्या समय तक ज्येष्ठ महीने की हर गुरुवार को आया करते हैं।

आध्यात्मिक भाव से ज्ञात होता है कि ज्येष्ठेश्वरी उस विचित्र शक्ति का मंजर है, जो शक्तिपात में शिवशक्ति के सम्पर्क से प्राप्त हो सकता है। और प्राकृतिक द्रश्य भी इस बात की विशेषता प्रकट करता है कि चित्र रुपी जल से जब एक साधक अपनी साधना के प्रयास से ऊपर सहस्त्र दल की ओर जाने का प्रयास करता है, तो मणिपुरा चक्र में साधक सर्वसिद्धियों को प्रकट हुए देखकर इसी ज्येष्ठेश्वरी अर्थात् शिवशक्ति की मानसपुत्री की शरण लेकर ईशद्वार जिसे कश्मीरी में 'ईशबर' के नाम से पुकारा जाता है, और योगिक कला में ब्रह्मेन्द्र के नाम से स्मरण किया जाता है, जाने की ओर दौडता है। इस मणिपुरा चक्र में योग साधन के पग पर यह भी सिद्ध हो जाता है कि महाशक्ति साधक को अपनी स्वतंत्र इच्छा से ऐसा अमृत, जो कि सदा सर्वदा अमर बनाने वाला है, अपने भक्त को पिलाती है। यह अमृत इस

देवस्थान पर अमृत कुंड के रुप में आज भी प्रकट है।

भौगोलिक द्रश्य से यह स्थान बहुत लुभावना है। यह तीनों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ है। और इसके चरणों में एक विशाल झील मन को मोहित कर देती है। इस सारे प्राकृतिक सौन्दर्य को सदा सर्वदा भगवान् शँकर शँकराचार्य की पहाडी से और मातेश्वरी हारी पर्वत के पहाड से सर्वमंगल और आनन्द सम्पन्न करती है।

कुछ समय से इस देवस्थान के सौन्दर्य को और बड़ाने के लिए वहां की संस्था ने एक निर्माण काम हाथ में लिया है। यात्रियों को पहाड के दामन से ऊपर चढने के लिए बहुत कठिनाइयां उठानी पडती थी। इस समस्या को हल करने के लिए एक पक्की सीडी बनाई गई है। आवश्यकता है कि इस देवस्थान पर दो चार बडी धर्मशालाएं बनाई जाएं और बाग बगीचे व पूजा शेड भी बनवाया जाए। इस सारे प्लान को पूर्णता देने के लिए धन की बहुत आवश्य-कता है। और मैं सारे भारत के जन जर्नादन से नम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि वे तन मन धन से इस संस्था को अपना सहयोग

दें, क्योंकि इस देवस्थान में बहुत काम हाथ में लेने की आवश्यकता है और यह देवस्थान सत्य में साक्षात देवी का दरबार है जहां पर निःसन्देह हर ऐक प्राणी अपनी मनोकामना सफल होते देखता है।

ज्येष्ठ प्रार्दुभाव से लिए गए माता ज्येष्ठेश्वरी के श्लोकों का अर्थ :

हे पीले वस्त्र धारण करने वाली, दायें हाथ में कमल और बाएं हाथ में कपाल धारण करने वाली और गौरे रंग वाली, भूरी आंखों वाली, भयानक दांतों वाली, गुफाधरी पर्वत तल हट्टी पर विराजमान, महादेवी ज़्येष्ठा आपको मेरा प्रणाम है।

हे ज्येष्ठेश्वरी की प्यारी, यह लोक और परलोक में सुख देने वाली, मेरे काम, क्रोध, लोभ और मोह को नष्ट करके सदा मेरी श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ।

हे भक्तों को अभय देने वाली उनके सब प्रकार के पापों को दूर करने वाली, मेरी ज्येष्ठेश्वरी तुम्हे मेरा प्रणाम हो।

हे चिनार के नीचे स्थित अमृत कुंड में निवास करने वाली भक्तजनों के महामोह को अपने अमृतजल से धोने वाली आप को मेरा प्रणाम हो।

हे ज्येष्ठेश्वरी में रहने वाली देवी-भक्तों के दुःख दुर्भाग्य और महाभय दूर करो, आप को मेरा प्रणाम हो।

हे दाएं हाथ से वर और बाएं हाथ से अभय देने वाली अनेक आभूषणों से सजी हुई, तुरन्त भक्तजनों की अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाली माता, आपको मेरा प्रणाम है।

हे भक्तजनों की विघ्न बाधाओं को दूर करने के लिए ज्येष्ठ कृष्णपक्ष पँचमी को प्रादुर्भाव में आई हुई ज्येष्ठेश्वरी आपको मेरा प्रणाम हो।

हे श्रद्धा भक्ति और सुख सम्पदा को देने वाली माता, आप सदा मेरी विघ्न, बाधाएं दूर करो और मुझे बुद्धि और ज्ञान दो।

हे ज्येष्ठेश्वरी माता, तेरे प्रसाद से मनुष्य

परम सिद्धि प्राप्त करता है, और तत्क्षण भारी आपदाओं से मुक्ति प्राप्त करता है।

11. माता भुवनेश्वरी चन्द्रपुरा

काश्मीर प्रदेश में श्रीनगर से 18 किलोमीटर की दूरी पर विशाल वाटिकाओं के भीतर चन्द्रपुरा गाँव में माता भुवनेश्वरी का तीर्थ स्थान है। माता भुवनेश्वरी अमृत कुंड में विराजमान है। इस तीर्थ स्थान पर विभिन्न प्रकार के अक्षतप्रवाह द्रश्य में आते हैं। देवी के कुंड में अत्यन्त मीठा व दूध के रंग का पानी प्रवाहित होता है। कुंड के दाऐं और बाऐं बहुत सी नदियां बहती है। प्रत्येक नदी का पानी विशेष रस से भरे हुए हैं। तीर्थ-स्थान पर कोई सोलह कनाल भूमि भी है तथा बडी-२ धर्मशालाऐं भी विराजमान हैं।

माता भुवनेश्वरी चतुरभुजा, मुकटधारी, जलकलश हाथ में लिए हुए, पदमासनी, तथा गुलाबी वस्त्र धारण किए हुए हैं।

प्रायः ज्येष्ठ के महीने में यात्री हर

अष्टमी, नवमी व अमावस्या को तीर्थयात्रा के लिए आते हैं। प्रति वर्ष यहां पर यज्ञ रचाया जाता है। भक्तजनों की मनोकामनाओं को सिद्ध करने के लिए भवानी मंगलमयी दर्शन देती है।

आकाशे चंढ़िका देवी, पाताले भुवनेश्वरी,
मृत्युलोके जया देवी, हरा त्रिपुरसुन्दरी।

उधदर्दिन घुति मिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखी वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्॥

12. माता बालादेवी बलहामा

पाम्पोर से चार किलोमीटर की दूरी पर माता बाला देवी का तीर्थस्थान बलहामा गाँव में स्थित है। बाला देवी माता चंढी का ही एक स्वरुप है। दुर्गा पूजा में माता बाला देवी का विशेष स्थान है। शास्त्रानुसार माता बाला देवी शक्ति का एक मुख्य रहस्य है। इस तीर्थ स्थान पर बडे बडे वृक्ष माता की शोभा को बडाते हैं। कहा जाता है कि बाला देवी यहां के डोगरा शासकों की कुल देवी है। इस

तीर्थस्थान पर महाराजा हर यज्ञ करते थे। बाला देवी का जन्मदिन माघ कृष्णपक्ष चतुर्थी को मनाया जाता है। यहां पर एक सुन्दर वाटिका में धर्मशाला भी है। माता बाला देवी के चरणों में भक्तजन प्राय: बलि चढ़ाते हैं।

बालर्कमण्डलाभासं चतुर्बाहुं त्रिलोचनाय्।
पाशाङ्कुशशरश्चापं धारयन्ती शिवा भजे॥

13. माता ज्वालादेवी खिव

श्रीनगर से कोई 18 किलोमीटर की दूरी पर माता ज्वाला देवी का मन्दिर खिव करेवा पहाडी पर स्थित है, सारे भक्तजन आषाढ़ चतुरदशी को माता के दर्शन के लिए इस तीर्थस्थान पर जाते हैं। पहाडी के दामन पर एक बड़ा चश्मा है, जहां श्रद्धालु प्राय: स्नान संध्या करते हैं। इस चश्मे के साथ ही एक विशाल धर्मशाला भी है। माता ज्वाला त्रिपुर सुन्दरी का ही स्वरुप है, जो कि तेज तत्व का ज्ञान अपने भक्तों को प्रदान करती है। माता ज्वाला का इष्ट

रुद्र भैरव है। काश्मीर के बहुत हिन्दु भक्तों की कुल देवी माता ज्वाला है।

श्रद्धालु प्रायः पीले रंग के चावल (कश्मीरी में तहर) तथा बलि वगैरा माता के चरणों में अर्पण करते हैं। श्रद्धालु भक्तजनों की मनोकामना प्रायः माता अपने अनुग्रह से सिद्ध करती है। इस तीर्थ की विचित्र बात यह है कि यह ज्वालामुखी पर्वत पर ही विराजमान है। कहते हैं कि प्राचीन काल में इस तीर्थस्थान पर माता ज़्वालामुखी मन्दिर के भीतर प्रकट होती थी। इस तीर्थ के एक तरफ माता बाला देवी और दूसरी तरफ भुवनेश्वरी तीर्थ भी स्थित है। भगवान शँकर का हर्षमय स्वरुप इस पहाडी के दाऐं तरफ हरषेश्वर नाम से प्रसिद्ध है। ज्वाला देवी सब कठिनाइयों से अपने भक्तों को मुक्ति प्रदान करती है। और उनके आधि व व्याधि कष्टों को जलाकर भस्म करती है।

ज्वालामुखि महाज्वाले ज्वालापिंगलोचने ।
ज्वालामुखि महातेजे ज्वालामुखि नमुस्तुते ॥

14. ब्रारिमअज मुरन

पुलवामा से कुछ दूरी पर मुरन का एक प्रसिद्ध गाँव स्थापित है। इस गाँव में एक महान देवीस्थान ब्रारिमअज के नाम से प्रसिद्ध है। तीर्थस्थान पर माता राज्ञिन्या एक महान् कुंड के साथ ही धर्मशालाऐं व यज्ञ-शालाऐं प्राचीन काल से ही भक्तजनों की साधना का केन्द्र बनी है।

देवी वैष्णवी है और प्रायः ज्येष्ठ अष्टमी के दिन हज़ारों की संख्या में लोग माता के दर्शन के लिए आते हैं। माता अपने इष्ट भूतेश्वर के साथ इस दिन व हर दिन इस तीर्थस्थान पर अपने भक्तों को अनुग्रह प्रदान करती है। यानि प्रायः दूध, खीर, लेके कुंड की परिक्रमा करते हैं। यह देवी स्थान अति सुन्दर और मँगलदायक है। सुना है कि ब्ररिमअज का नाम इस तीर्थ-स्थान पर इस कारण पड़ा है कि एक कश्मीरी ब्रह्मण हर हष्टमी को खीर भवानी जाया करता था, तो समय बीतते-२ जब वह वृद्ध हो गया, तो वह खीर भवानी नहीं जा सका। मां के प्रति बहुत भावना होने के कारण उसे वहां न जाने पर बहुत व्याकुलता

ई।

सत्तमी और अष्टमी की रात उसने सपने में माता राज्ञिन्या को इस तीर्थ पर आते देखा, तो भक्त ब्रह्ममूर्ति पर घर से निकलकर यहां पहुँचा तो उसने दाऐं और बाऐं दो बिल्लियाँ देखी और दरख्त के नीचे से पानी निकलने लगा। ज्यों ज्यों पानी निकलता गया, इस भक्तजन के हृदय में अत्यन्त आनन्द आने लगा। आकाश से एक आवाज़ उसके कानों में आई, 'ऐ ब्रह्मण मैं खीरभवानी से आकर यहां आपको दर्शन देने के लिए आई हूं। मेरा प्रवाह इस दरख्त के नीचे से हुआ है, और तू प्रतिदिन यहां मेरा दर्शन करते रहना।

इस बूढे के घरवाले उसे ढूंढने निकले तो उन्होंने इस तीर्थ पर बिल्लियाँ और पानी का कुंड देखा, तो वे आश्चर्यचकित हो गऐ। इस बूढे ब्रह्मण ने माता की अद्भुत लीलाओं का हर्ष मन में लिए हुए उनसे माता के दर्शन देने की बात कही।

वे गांव में शोर मचाते-२ सब लोगों को सूचना देने लगे कि माता क्षीरभवानी इस तीर्थस्थान पर पहुँच गई थी। लोग वहां बिल्लियों के दर्शन करके इसे

'ब्ररिमअज्ज' के नाम से पूजने लगे, जो आजकल भी इसी नाम से स्मरण किया जाता है। यह बिल्लियाँ वास्तव में देवी के वाहन शेरि बबर थे। भक्तों में इतना साहस न होने के कारण, उन्हें बिल्लियाँ के रूप में दर्शन मिल गए।

ददातीष्टान्भोगान्क्षपयेत रिपून्हन्ति विपदो,
दहत्याधीन्व्याधीन्छमयति मुखानि प्रतनुते।
हठादऽन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीषृविरहं,
सकृद्दयाता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते॥

15. कुलवागेश्वरी तीर्थस्थान कुलगाम

अन्नतनाग प्रान्त के दाऐं तरफ 21 किलो-मीटर की दूरी पर कुलगाम में माता कुलवागे-श्वरी के तीर्थस्थान पर एक महान कुंड है। और कुंड के ऊपर वाले भाग पर एक सुन्दर मन्दिर विराजमान है। मन्दिर के भीतर माता कुलवागेश्वरी की एक शिला और महामूर्ति भक्तों की कठिनाइयों को दूर करती है। इस तीर्थस्थान के [illegible] कोई 20-25 कनाल के

लगभग भूमि भी समर्पित की गई है। तीर्थ-स्थान पर बड़ी-बड़ी धर्मशालाऐं व यज्ञशाला-ऐं भी हैं। माता के कुंड से बहुत सा पानी प्रवाहित होता है, जो वहां की कृषि में उत्तम भाग प्रदान करता है।

माता कुलवागेश्वरी सारे कुलों को उत्पन्न करने वाली देवी का स्वरुप है। माता बुद्धि, सन्तोष व हर्ष उत्साह देने वाली देवी है। माता कुलवागेश्वरी कुलकमलिनी भी मानी जाती है। और शास्त्रों में इस भवानी के प्रति बहुत कुछ विशेषताऐं बताई गई है।

इस तीर्थस्थान के चारों ओर बहुत संख्या में काश्मीरी पंडित रहते हैं, जो प्रायः प्रातः और सांयकाल को माता के चरणों में आरती उतारते हैं और हर शनिवार रात्रि को भजन कीर्तन करते हैं। माता कुलवागे-श्वरी लगभग सारे अनन्तनाग प्रान्त में इष्टदेवी के रुप में पूजा जाती है।

माता कुलवागेश्वरी अष्टभुजा, पुस्तक, कमल व अन्य शस्त्र भुजाओं में धारण किए हुए हैं। माता पद्मासन पर विराजमान है तथा मुकटधारी, विशालनैनों वाली, गौर रंग की, और पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं।

इस तीर्थस्थल पर महान यज्ञ रचाए

जाते हैं और प्रायः भक्तजनों की विपदायें देवी के दर्शन से ही दूर हो जाती है।

या देवी सर्वभूते षु विद्या रुपेण संस्थिता,
नमस्तसै नमस्तसै नमस्तसै नमो नमः।

16. माता त्रिपूर सुन्दरी तीर्थस्थान दिवसर खनबरनी

कुलगाम से कोई 12 किलोमीटर की दूरी पर एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान दिवसर की एक घाटी के ऊपर स्थापित है। इस तीर्थ स्थान का नाम कश्मीरी में खनबरनी अथवा दिवसर के नाम से प्रसिद्ध है।

इस तीर्थ पर यातायात के विभिन्न साधनों द्वारा सहस्त्रों की संख्या में यात्री हर दिन माता के दर्शन के लिए आते हैं।

तीर्थस्थान बहुत प्राचीन होने के कारण भिन्न-२ भक्तों व शासकों के द्वारा बताई गई कविताओं व कहानियों में वर्णन किया गया है। भक्तजन इस देवी को सिंहसवार त्रिमूर्ति - शारिका, राज्ञिन्या और ज़्वाला का

समारोह, अष्टभुजा, चन्द्रमधारी, लाल-वस्त्र धारण किए हुए, अपनी भुजाओं में विभिन्न शस्त्र धारण किए हुए ध्यान में लाते हैं।

एक बडी धर्मशाला और एक मन्दिर भी यहां विराजमान है। एक बड़ा वृक्ष जो कि माता के मन्दिर में स्थापित है देवी का निवास स्थान बताया जाता है। प्रायः भक्तजन यहां वैष्णवी आहार लेके आते हैं। और अपनी मनोकामनाओं को सिद्ध करने के लिए इस वृक्ष पर धागा बाँध कर मिन्नते मांगते है। वे यहां दूध, खीर आदि माता के चरणों में अर्पण करते हैं।

माता का तीर्थस्थान प्राकृतिक दृश्य से अति सुन्दर है। मन्दिर के द्वार से जब नीचे की ओर नज़र डालते हैं तो सारा अनन्त-नाग प्रान्त दिखाई देता है। यह तीर्थस्थान आधुनिक काल का उपासना का एक महान केन्द्र बताया जाता है।

देहि सौभाग्यं आरोग्यं देहि मे परमं सुखं,
रुपं देहि जये देहि यशो देहि जशो जये।

17. देवीस्थान मन्ज़गाम

अन्नतनाग प्रान्त के कुलगाम इलाके से दमालोजीपुरा चिमर के मार्ग पर अहस्-बल के निकट ही मन्ज़गाम घाटी स्थित है। यह घाटी यहां के तीर्थस्थान राज्ञिन्या स्थान के नाम से प्रसिद्ध है। राज्ञिन्या देवी का यह तीर्थ जिसमें एक महान अमृत कुंड़ है, मन्ज़गाम की एक पहाडी पर विराजमान है। इस अमृत कुंड़ का रंग भिन्न भिन्न समयों में बदलता रहता है। कुंड़ से दूर बडी-बडी धर्मशालाऐं व यज्ञशालाएँ बनाई गई है।

प्राय: बडे-बडे सन्तों और महात्माओं ने इस तीर्थस्थान पर तपस्या की है। और देवी के आनन्द को स्वंय में अनुभव किया है। तीर्थस्थान के चारों ओर बडे-बडे वृक्ष व सुन्दर नदी नाले इस तीर्थ की शोभा को और भी सुन्दर बनाते हैं। माता राज्ञिन्या का यह स्थान भक्तों के लिए बहुत मंगलदायक है।

इस तीर्थ की ओर विचित्र बातों में से एक विचित्र बात यह भी है कि यात्रा के समय यदि नीचे से मन्दिर की ओर

देखे तो अन्य हरे पत्तों वाले वृक्षों में केवल एक वृक्ष पीले पत्तों का दिखाई देता है। परन्तु ऊपर पहुँचने पर सारे वृक्ष हरे पत्तों वाले होते हैं, तथा पीले वृक्ष की पहचान अलग से नही की जा सकती।

इस तीर्थस्थान पर प्रायः भक्तजन दूध, मिष्टान, फल वगैरा वैष्नवी रुप में देवी के कुंड में अर्पण करते हैं। प्रायः और सांयकाल को असंख्य यात्री माता के कुंड की परिक्रमा करके देवी की आरती उतारते हैं।

इस तीर्थ के दाऐं तरफ एक महान् मुसलमान सूफी की समाधि भी है। यहां के स्थानीय लोगों के कथन के अनुसार यह सूफी सन्त पहले एक गडेरिया के रुप में पशुओं को जंगल में चराने के लिए ले जाता था। एक दिन वह सूफी इस तीर्थ स्थान पर थोडा विश्राम करने के लिए बैठा, तो उसने देवी की अद्भुत लीला देखी कि वृक्ष में से एक साँप निकलकर, उसकी भेड़ की स्तन से दूध पीकर फिर वृक्ष में लुप्त हो गया। गड़रिया के मन में अद्भुत उत्सुकता जाग उठी और प्रतिदिन माँ की यह लीला देखकर वह

बहुत सात्विक बनता गया। उसे अब अपने काम करने में भी कोई उत्साह नहीं रहा और वह प्रायः पूरे दिन इसी पेड के नीचे बैठकर देवी की लीला को सराहता रहता। उसे घरवालों ने घर से निकाला और वह निराहार रहकर माता के दर्शन करने के लिए व्याकुल हो गया। देवी ने उसकी अपरम्पार साधना देखकर ज्येष्ठ अष्टमी को प्रातः ब्रह्ममूर्त पर उसे राज्ञिन्या रुप में दर्शन दिया और उससे उसकी इच्छा पूछी। सन्त ने माता के चरणों में साष्टांग दंडवत प्रणाम करके कहा कि 'माताश्वरी मेरी मनोकामना है कि मुझे आप अपने चरणों में मोक्ष करें और मेरी समाधि आप के ही चरणों के सामने हो। जो कोई भक्त आपके दर्शन के लिए इस पवित्र तीर्थस्थान पर आएगा, उसके चरण मेरी समाधि के ऊपर भी पडें।' देवी ने इस सन्त को मोक्ष किया और आजकल भी भक्तजनों को देवी द्वार में माता के दर्शन को जाने के लिए उस सन्त की समाधि की परिक्रमा करके जाना पडता है।

सारे अन्नतनाग से यात्री हज़ारों की संख्या में ज्येष्ठ अष्टमी के दिन देवी के दर्शन करके पुण्य प्राप्त करते हैं। यह तीर्थस्थान कश्मीर के देवीस्थानों में से विशेष तीर्थ है।

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

18. राज्ञिन्यास्थल, रायथन

ज़िला बड़गाम के ऊपरी पहाडों के दामन पर 'रायथन' नाम का तीर्थस्थान प्राचीन काल से अपने भक्तों की कामनाऐं सिद्ध करता आया है।

शक्ति के अनुसार माता सीता को जब रावण ने हरण करके अशोक वाटिका में बन्दी बनाया तो माता सीता ने परमभक्त हनुमान को यह आदेश दिया कि वे उनको तथा उनकी सहेलियों व दास दासियों को वहां ले जाए, जहां एकान्त हो, तथा वे और उनकी सहेलियां पवित्रता से रहें। माता सीता कुछ समय

रायथन में रहकर क्षीरभवानी तुलमुला चली गई। माता सीता के चरण इस स्थान पर इसलिए पड़े, क्योंकि यह स्थान माता राज्ञिन्या का निवास स्थान था।

माता राज्ञिन्या जो सतोगुण रुप से पालनहारी है और अपने स्तनों से अपने भक्तों को अमृत पिलाती आई है। इसीलिए इस स्थान का नाम पूर्व-काल में 'राज्ञिन्या स्तन' के नाम से प्रसिद्ध था। यही नाम फिर परिवर्तित होकर 'रायथन' बन गया। इस तीर्थ पर दो कुंड है – जिनमें एक में ठंडा पानी तथा दूसरे में गर्म पानी रहता है। इस कुंड में प्राचीन काल के बने हुए स्तम्भ अभी तक विधमान हैं।

यहा पर माता अष्टभुजाधारी, त्रिनैनी, चन्द्रमधारी, सिंहसवारी, गुलाबी रंग के वस्त्र धारण किए हुए, गौर वर्णधारी तथा अपने दक्षभाग मे इष्ट भूतेश्वर को प्रतिष्ठित किए हुए है।

समय बीतने के साथ-साथ इस तीर्थ की ओर कोई ध्यान नही दिया गया, जबकि पुराने राजाओं ने बहुत सी भूमि

इस तीर्थ को समर्पित की थी। यह तीर्थ-स्थान माता राज्ञिन्या का साक्षात दरबार है।

आधुनिक युग में काश्मीर के कुछ महात्माओं विशेषतौर पर प० त्रिलोकी नाथ जी, जो पुलिस विभाग में कार्यरत थे, तथा श्री अर्जुन नाथ मुन्शू (हैडमास्टर, बिस्कू स्कूल) ने तीर्थस्थान पर मन्दिर व धर्मशालाऐं बनाने का काम हाथ में लिया है। कश्मीर की हिन्दू बिरादरी के सहयोग से माता क्षीरभवानी की इच्छानुसार इस तीर्थस्थान पर इस समय एक विशाल मन्दिर व धर्मशालाऐं बन गई है।

मातेश्वरी के कुंड में प्रायः भक्तजन दूध, मिष्टान, खीर, फल, फूल इत्यादि वैष्णवी भगवती को अर्पण करते हैं। प्रकृति ने भी बडे-बडे वृक्षों, झरनों, नदी-नालों से इस स्थल को और भी शोभा-यिमान बनाया है। जहां यह तीर्थ हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है, वहां और मतों के लोग भी बड़ी श्रद्धा के साथ यहां आते हैं तथा मांस, मछली या अंडा खाकर यहां आने से परहेज़ करते हैं।

यहां के स्थानीय लोगों से यह सुना है

कि किस प्रकार माता ने एक विचित्र लीला अपने बच्चों को दिखाई है। एक आदमी ने माता का वैष्णवी होना सुनकर भी मॉस खा के अन्दर जाने के लिए ज़िद्द की, तो जब वह कुंड पर मुह धोने चला गया, तो कुंड में से जल हाथ में लिए हुए ज्यों ही उसने अपनी आखों पर फेरा तो कोई कीटाणु उसकी आखों में चला गया, और उसकी दोनों आखें बन्द हुई। उसके घरवाले ज़ार ज़ार रोने लगे। वे नवमी के दिन इस नेत्रहीन को लेकर खीर, मिष्टान वग़ैरा लेके, कुंड के गिर्द 101 बार परिक्रमा करने लगे। ज्योंही 101 वाँ परिक्रमा समाप्त हुआ तो इस नेत्रहीन व्यक्ति को मूर्छा आई और वह कुंड में ही गिर गया। जब उसे वहां से निकाला गया, तो कुंड का पानी उसकी आखों में चला गया था और उसकी ज्योति फिर से लौट आई थी। इसी कारण प्रत्येक मत का प्राणी बड़ी भावना और श्रम से देवी की ओर हाथ जोड कर प्रणाम करते हैं।

या देवी सर्वभुतेषु दया रुपेण संस्थिता,
नमस्तसै नमस्तसै नमस्तसै नमो नमः।

19. भ्मादिपुरा देवी

श्रीनगर ज़िले के दक्षिण भाग में नागाम नाम के गाँव से कोई दो किलोमीटर की दूरी पर माद्दिपुरा पहाड़ी के दामन में स्थापित है। माता राज्ञिन्या के प्रणव कारों में से यहां पर एक तीर्थस्थल खीवल के नाम से प्रसिद्ध है। अमृतमंथन के समय अमृतकलश को प्राप्त करने के लिए देवताओं और राक्षसों में संग्राम के समय अमृत की कुछ बूँदे यहाँ गिरी, जिस से यहां अमृतकुंड का प्रवाह हुआ। यह माता राज्ञिन्या का ही स्वरुप है और भक्तजन हर अष्टमी को यहां आकर पुण्य प्राप्त करते हैं।

पूजनीय स्वामी नन्दलाल जी के शिष्य महात्मा मस्तराम जी ने इस तीर्थ पर एक आश्रम तथा धर्मशालाएं बनवाई है और वे प्रायः वहां तपस्या में मग्न रहते हैं। यहां पर ज्येष्ठ अष्टमी के पर्व पर हज़ारों की संख्या में यात्री, खीर, मिष्टान इत्यादि लेकर वैष्णवी भगवती के कुंड में समर्पण करते हैं।

कुंड में बने हुए मन्दिर व तीर्थस्थल

की अन्य शोभा अति सुन्दर व शुभ-फलदायक है।

निर्गुणे निष्कले नित्ये, सतचितान्नदरुपिणी,
नमुस्तुते महाराज्ञी, पाहि मां शरणागतम् ।

20. माता भवानी टिकर स्थापन

कुपवाडा से कोई चार मील की दूरी पर कुप्वाडा चौकीवल रोड के दाऐं तरफ पहाड के दामन पर माता भवानी का एक पुण्यतीर्थ टिकर स्थापन के नाम से प्रसिद्ध है। इस तीर्थस्थान में माता अम्रतेश्वरी (राज्ञिन्या) का एक सुन्दर कुण्ड भी है। पहाडी के ऊपर एक धर्मशाला भी है। और अम्रतकुंड में माता क्षीर भवानी की तरह एक भव्य मन्दिर भी है, जिसमें माता राज्ञिन्या की सुन्दर मूर्ति स्थापित है। इस अम्रतकुंड का रंग समयानुसार भिन्न-भिन्न परिस्थितियों पर भिन्न-भिन्न रुप का होता है। इस



BRIJBASI & SONS
FATEHPURI DELHI-6.

66. MAHAKALI

S. S. BRIJBASI & SONS
59, MIRZA STREET BOMBAY-3.

तीर्थस्थान पर पूजनीय लाल जी महाराज के शिष्य योगीराज नन्दलाल जी का आश्रम भी है, जिन्होंने यहां तपस्या की है तथा माता के चरणों में लय होके अमृत पान किया है।

कहते हैं कि समुद्र मन्थन के समय जिस अमृत घाट के बारे में राक्षसों और देवताओं में युद्ध हुआ, उस अमृत घट की कुछ बूंदे इस तीर्थस्थल पर भी पड़ी, जिससे अमृतकुंड का प्रवाह हुआ।

प्रायः ज्येष्ठ अष्टमी के दिन यहां पर महान यज्ञ रचाया जाता है तथा देवी के सुन्दर दर्शन भी प्राप्त होते हैं। माता यहां अष्टभुजा, सिंहसवारी, मुकटधारी, अपने करकमलों में भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुऐं धारण किए हुए, तथा गुलाबी रंग की वस्त्र पहने हुए हैं। भक्तजन प्रायः खीर, मिष्टान, दूध इत्यादि इस अमृतकुंड में अर्पण करते हैं। और यह तीर्थस्थान वैष्णवी रुप में माना जाता है। माता क्षीर-भवानी का यह स्वरुप सदा सर्वदा अपने भक्तजनों के लिए शुभ और फलदायक है।

इस इलाके में कई कश्मीरी पंडित रहते हैं और सारे इलाके का वातावरण देवी

के प्रभाव से शान्त व सुन्दर बना हुआ है।

21. राज्ञिन्या स्थान, लोगरीपुरा

अन्तनाग से पहलगाम जाते हुए अश-मुकाम के निकट एक हिन्दु गांव लोगरीपुरा नाम से स्थापित है, जहां पहाडी के दामन पर माता राज्ञिन्या का एक विशाल कुंड प्रवाहित है। कुंड के चारों ओर से मन्दिर बना हुआ है। इस कुंड में प्रायः भिन्न-२ प्रकार के रंग भिन्न-भिन्न तिथियों और दिवसों पर देखा जाता है। ज्यों ही मन्दिर के भीतर माता राज्ञिन्या की अस्तुति कुंड की परिक्रमा करके की जाती है एक विषेश हर्ष और आनन्द का आभास मन में होता है। माता राज्ञिन्या के प्रणवरुपी तीर्थों में लोगरीपुरा का तीर्थ एक विशेष महत्व रखता है। यहां के अमृत कुंड का प्रवाह भी, कहते हैं कि, देवताओं और राक्षसों के बीच हुए संग्राम के समय अमृत की बूंदे गिरने से प्रादुरभाव में आया है।

माता वैष्णवी होने के कारण सदा सर्वदा खीर, मिष्टान, दूध, फल इत्यादि से पूजी जाती है।

पुराने शासकों ने पहाड़ की कुछ भूमि जिसमें कुछ वृक्ष भी मौजूद हैं इस तीर्थ के प्रति समर्पित की है। इस तीर्थ के साथ विशाल धर्मशालाऐं और बड़ा यज्ञ कुंड भी है।

कहते हैं कि कोई ही ऐसा सन्त होगा, जिसने इस महान तीर्थ पर अपनी उपस्थिति नहीं दी होगी। प्रायः प्रातः और सायंकाल को हज़ारों भक्तजन माता की आरती, सत्संग और कीर्तन में मगन रहते हैं। माता राज्ञिन्या का जन्मदिवस लोगरीपुरा क्रमानुसार ज्येष्ठ अष्टमी के दिवस पर मनाया जाता है। इस तीर्थ के दाऐं तरफ एक विशाल और आश्चर्य जनक भगवान शँकर का लिंग भी स्थापित है। आधुनिक काल में वहां की संस्था ने पहाड़ के उपर के हिस्से में एक और मन्दिर स्थापित किया है, जिस तक पहुंचने के लिए कोई चार सौ सीढ़ियां चढ़नी... माता भीमेश्वरी, कान्तेश्वरी, वागेश्वरी, हर्षेश्वरी के दर्शन होते हैं।

नए मन्दिर में और भी एक विशेषता

यह है कि महान शिव लिंग जो कि तीर्थ के बाऐं तरफ स्थापित था, इस मन्दिर में प्रतिष्ठित किया गया है। प्रायः हर शनीवार को इस तीर्थस्थान पर मंडली, कीर्तन और भजन रात को होता है। सारे मतों के लोग इस तीर्थ के प्रति अत्यन्त श्रद्धा और प्रेम रखते हैं।

माता राज्ञिन्या सब भक्तजनों के कष्टों को निवारने वाली श्रेष्ठ साधन हैं।

अजानन्तो यान्ति क्षयमवशमन्योन्यकलहैरमी -
मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समभिनः ।
जगन्मातर्जन्मज्वरभयतम : कौमुदि।वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम ॥

22. देवीस्थान क्रमिश्वर

रयथन से पहले आने वला क्रमिश्वर का देवीस्थान प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध है। अपने पुर्वजों से सुना है कि इस स्थान का असली नाम क्रिमसर था। माता काली का यह स्थान अपने ढंग से विचित्र है। प्रायः भक्तजन बलि इत्यादि इस स्थान

पर महाकाली के प्रति अर्पण करते हैं। यहां देवी इस ध्यान में अनुभव में लाई गई है: दशमुखी, दशभुजाधारी, दशटाँगें धारण किए हुए, बाजुओं में विभिन्न अस्त्र, लालवर्ण त्रिलोचन, माथे पर चन्द्रमा, केशों में विभिन्न नाग, कलाइयों पर काले रंग के साँप, कमर पर भुजाओं और बिच्छुओं की माला, गले में मुंडमाला और एक बड़ा त्रिशूल दक्ष भाग में ऊपर की बाज़ू में है।

प्राचीन समय से ही इस तीर्थस्थान पर भक्तजन नौदुर्गा की सप्तमी के दिन सहस्त्रों की संख्या में तीर्थ यात्रा के लिए आते हैं। एक अति सूक्ष्म गाथा इस तीर्थ की शैलाओं के बारे में प्रसिद्ध है कि आधुनिक काल में एक दुष्ट जन ने इस शैलाओं को गिराने का प्रयास किया, तो शैलाओं के नीचे से अमृत के बदले रक्त प्रवाह होने लगा। सारे जन जनार्दन भयभीत होकर माता से क्षमा व कृपा याचक बन गए और शैला को पुनः अपने स्थान पर स्थापित किया गया। दूध, मिष्टान इत्यादि से शैला का स्नान किया गया और देवी यथा मातृस्वरुप है, अपने बच्चों की गलती को भूलकर पुनः सुहृद

बन गई। यह तीर्थस्थान काश्मीर मंडप में प्रायः देव आपत्तियों से भक्तजनों को बचा लेता है।

कुपुत्रो जायेते कुचदीप कुमाता न भवति।

महाकाली महालक्ष्मीर्महाशक्ति सरस्वती।
त्रिशक्तिनमि विख्याता त्रिदेवीभ्योः नमो नमः॥

23. शैवा भगवती, इकनिगाम

अच्छबल से कोई आठ किलोमीटर की दूरी पर एकनिगाम का एक प्रसिद्ध गाँव स्थापित है। इस गाँव में एक महान् तीर्थस्थान शैवा भगवती के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ बड़े मन्दिर, बडी-बड़ी धर्मशालाओं के अतिरिक्त मन्दिर के भीतर माता शैवा भगवती की एक शैला भी स्थापित है। प्रायः भक्तजन प्रातः और सांयकाल को देवी की आरती बडी श्रद्धा से उतारते हैं।

माता शैवा भगवती का स्वरुप शास्त्रों में अति सूक्षम बताया जाता है। देवी की शैला साड़ी से ढकी हुई होती है और हर साल दुर्गा पूजा की नवमी को यहाँ पर एक

तीर्थ यात्रा भी लगती है। इस तीर्थस्थान पर हर मत के लोग देवी के प्रति अत्यन्त भावना और श्रद्धा प्रकट करते हैं।

प्राचीन गाथा के अनुसार इस गाँव में सारी माताऐं व पुरुष माता के दरबार के सामने नवमी के दिन नृत्य व हर्ष में नचाकर देवी की वन्दना करते थे। एक महानवमी पर सारे भक्तजन नृत्य करने के लिए इस तीर्थ पर नहीं आ पहुँचा तो माता की अद्‌भुत लीला से गाँव के सारे लोगों की आंखे चली गईं। इस घटना के बाद सब लोग व सारी माताऐं अन्धेपन में हर्षोउल्लास से माता के सामने नृत्य करके देवी को प्रसन्न करने लगे। चूंकि माता मातृस्वरूप है और तुरन्त उनकी आंखों में रोशनी आ गई। इस झुंड में एक साधु वृत्ति वाली माता भी थी, जो मन से देवी के चरणों में फूल चढ़ाती गई, तो माता शिवा ने उसे दर्शन दिए और कहा, "मैं तुम्हारी उपासना पर बहुत प्रसन्न हूं, तुम्हें मोक्ष देती हूं।" परन्तु उस माता ने कहा, 'हे मातेश्वरी मुझे मोक्ष करने से अच्छा है, कि आप सारे गाँव को मोक्ष करें।' ऐसी त्यागवृत्ति और निष्काम भाव को देखकर देवी बहुत प्रसन्न

हुई और उन्होंने सारे गाँव को मोक्ष किया। इसी कारण इस गाँव का नाम 'अक्य न्यू गाँव' के नाम पर स्थापित है। और आजकल भी उसे अकिन्यूगाँव के नाम से स्मरण किया जाता है।

बहुत सी भूमि भी माता के दरबार के साथ समर्पित की गई है। यात्री अनन्तनाग प्रान्त से प्रायः अष्टमी, नवमी, अमावस्या के दिवस पर हज़ारों की संख्या में माता के दर्शन के लिए आते हैं।

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीदमातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य ॥

24. उमानगरी, ब्रारिआँगन

ब्रारिआँगन का गाँव अच्छाबल से कोई 10 मील की दूरी पर वोतरसूह के नज़दीक स्थापित है। इस गाँव में एक महान देवी स्थापन उमा देवी के नाम से अर्थात् ब्रारिआँ-गन के नाम से प्रसिद्ध है। तीर्थस्थान में

खी का एक कुंड अपने अमृतप्रवाह से श्रद्धालु भक्तों का उद्धार करता आया है। इस तीर्थस्थान पर महान धर्मशालाऐं प्राचीन काल से विराजमान हैं।

यहां माता आदेवी का शिवप्रिय स्वरुप है। कथनानुसार कहा जाता है कि माता सती के भस्म होने पर भगवान शिव के पुर्नविवाह के हेतु माता पार्वती ने इस वाटिका में भगवान की अस्तुति की थी और प्रण किया था कि जबतक आशतोष भगवान शंकर दर्शन न दें तब तक वे शिवअर्चना करती रहेंगी अत्यन्त विरहपन में उन्होंने अपने मन में यह ठानली कि अगर भगवान् शिव चार बजे तक उन्हें दर्शन न दें तो वे स्वंय को सूर्य उपासना से भस्म कर देती। देवी भगवान शिव के लिंग पर पुष्प चढ़ाते हुऐ भक्ति में मगन रही और ज्योंही चार बजे का समय आया, उन्होंने ऊपर की ओर दृष्टि डालकर सूर्य भगवान से भस्म करने के लिए विनती की। भगवान् शंकर ने माता का यह प्रयास तथा अटल भक्ति देखी तो वे तुरन्त लिंग से प्रकट हुए और देवी की ओर कहने लगा, " ओ माँ, अरे यह मत करो," सारे देवी-देवता शिवशक्ति के

इस समयोग को देखते हुए ज़ोर-ज़ोर से 'ओ माँ, ओ माँ' नाम से देवी के चरणों में शीष झुकाते रहे, भगवान शँकर ने भक्तों की यह प्रेरणा देखकर माता पार्वती से कहा, 'आज से तुम्हें उमा के नाम से भी स्मरण किया जाएगा।'

इस तीर्थस्थान पर कुछ समय पहले एक महान संत धूनि के सामने अपनी तपस्या में मग्न रहते थे और देवी के शेर उनके द्वार पर पहरा देते थे। एक दिन कुछ भक्तजन ज्यों ही महात्मा जी के पास ब्रह्ममूर्त की उत्तर दिशा में महातेज देखा और द्वार पर दो बिल्लियाँ पहरा देते हुई देखी। तब से इस दरबार का नाम द्वारिआंगन के नाम से भी प्रसिद्ध है।

यह देवी चतुरभुजा, गौर वर्णधारी, चन्द्रमधारी, हाथ में चामर, कलश, माला और कमल धारण किए हुए सिहंसवारी विराजमान हैं।

इस तीर्थस्थान पर आधुनिक काल में एक महान सन्त प० सोमनाथजी, जो कि स्वयान्नद जी के नाम से प्रसिद्ध हे, तीर्थस्थान की पुरानी धर्मशालाओं और तीर्थ को नवीन रुप से बनाने के काम में तनमन धन से काम करते आए हैं। स्वामीजी के अनथक

प्रयास और देवी की इच्छानुसार इस तीर्थस्थान पर एक महान और मनोहर मन्दिर कुंड के समीप बनाया गया, जिसमें माता की मनोहर संगमरमर की मूर्ति प्रतिष्ठित की गई है। धर्मशालाएं व यज्ञशालाएं पुन: बनाई गई। महात्मा स्वंयानन्द जी ने अपनी यौवनावस्था से ही इस तीर्थ के प्रति बहुत विशेषता प्रकट की है। महात्मा जी के प्रवचनों से लोग प्रभावित होते हैं। घर घर जाकर भिक्षा माँगकर वह सारा निर्माण कार्य चलाते आएं हैं। वे श्रावण के महीने में हरवर्ष एक महान यज्ञ रचाते हैं। जिससे सारे प्रदेश के विभिन्न प्रान्तों से हज़ारों की संख्या में लोग आकर पुण्य प्राप्त करते हैं। तीर्थस्थान के साथ बहुत सारी भूमि पुराने शासकों ने समर्पित की है। आजकल भी बहुत से सन्त महात्मा भी इस तीर्थस्थान पर प्राय: अपनी तपस्या के लिए आते हैं। यह तीर्थ कश्मीर के मुख्य तीर्थों में अति उत्तम माना जाता है।

बर्हावतंस युतबर्बरकेशपाशां
गुञ्जावलीकृतघनस्तनहारशोभाम् ।
श्यामा प्रवाल वदनां सुकुमारहस्तां
त्वामेव नौमि शवरीं शवरस्य जायाम् ॥

25. तीर्थराज लोकभवन

अन्तनाग से 12 किलोमीटर की दूरी पर डूरू अन्तनाग मार्ग के दाऐं तरफ एक महान तीर्थ, 'तीर्थराज लोकभवन' के नाम से प्रसिद्ध है। यह तीर्थ प्राचीन काल से श्रद्धालुओं और भक्तजनों के लिए एक विशेष तीर्थ रहा है। यहां पर प्रणवमुखी देवी का आकार है। पहाडी के ऊपरीली भाग पर भगवान शंकर महाकालेश्वर भैरव के रुप में विराजमान हैं। यहाँ पर एक तरफ सिद्ध लक्ष्मी का दरबार और दूसरी तरफ माता दुर्गा का विशाल मन्दिर है। चरणों में 'वामन गंगा' प्रवाहित होती है। तथा माता सरस्वती का एक महान कुंड भी स्थापित है। तीर्थ के मध्य में कोई छः कनाल भूमि पर एक विशाल कुंड अपने अमृत जल से सारे भक्तों का आनन्द देता है। तीर्थराज पर प्रायः आषाढ, शुक्ल पक्ष द्वादशी के दिवस जिसे कश्मीरी में 'हर बाह' कहते हैं, एक बहुत बडी तीर्थ यात्रा लगती है। 'हर बाह' के दिवस पर हज़ारों की संख्या में भक्तजन माता भवानी के चरणों में अपनी श्रद्धा के पुष्प चढाने के लिए भिन्न भिन्न प्रान्तों से यहाँ पहुँचते हैं। अमृतकुंड

के बीच में भगवान शंकर का एक सुन्दर लिंग प्रणाली पर स्थापित है।

'हारबाह' के दिवस यहाँ तीर्थ यात्रा करने से, कहते हैं, मोक्ष की प्राप्ति होती है। कश्मीरी लोक कथाओं के अनुसार कहा जाता है "लारलद बटनी, हर बाह छ्ये करअमचे"। इस तीर्थ से संम्बधित एक गाथा यह है कि प्राचीन काल में 'दयमाल' नाम की एक गूंगी माता इस गाँव में रहती थी और वहाँ के लोगों को पानी बगैरा लाके अपना निर्वाह करती थी। इस गांव में पानी की बहुत कठनाई थी; इसी गांव में एक दिन वह जंगल से पानी लाने गई ज्योंही उसने पानी भरने के लिए गड्डा नीचे रखा तो एक शेर उसके सामने प्रकट हुआ। दयमाल ने हाथ जोड़कर मन से ही विनती की कि वह एक ब्रहमण के घर में पानी पहुँचाकर, उसका आहार बनने के लिए वापिस आएगी, शेर ने मुह बन्द किया। और जब दयमाल वापिस आई तो शेर गायब था। वह ज़ोर-२ से रोने लगी कि शेर भूखा ही वापिस चला गया, वह चिलाने लगी और वृक्ष के साथ सिर फोड़ने लगी। तुरन्त भगवान विष्णु चतुरभुजा प्रकट हुए। दयमाल को

ईश्वर कृपा से वाकशक्ति वापस आई और भगवान विष्णु ने सारा वृतांत सुनकर कहा कि वह शेर भगवान ही थे और उसकी निष्ठा, भक्ति और सत्य की परीक्षा ले रहे थे। दयमाल ने भगवान से पूरे गाँव में पानी प्रकट होने के लिए प्रार्थना की। क्योंकि वह बूढ़ी हो गई थी और उसे चिन्ता थी कि उसके गाँव वालों को पानी कौन लाकर देगा। भगवान उसके निष्काम भाव पर बहुत प्रसन्न हुए तथा उसे कहा कि वह ब्रह्ममूत पर पहाड़ी के दामन पर लीपन करे और स्वयं भगवान मैना के रुप में जहां चोंच मारे, वहाँ से पानी प्रवाहित होगा।

दयमाल तदानुसार ब्रह्ममूत पर पहुँच गई और एक पक्षियों का झुंड वहाँ पहुँचा और एक सुन्दर मैना ने अपनी चोंच मारकर माता गंगा का प्रवाह प्रादुर्भाव में लाया। और इस पानी को भगवान शंकर ने अपने कुंड में रहकर अपने केशों में धारण किया।

दयमाल स्वयं एक पक्षी बनकर भगवान विष्णु के संग उड़ कर मोक्ष हो गई। माता ललेश्वरी ने अपने वाक्यों में कहा है

"लुकभवन अचि कजे, लह्‌ कुन त लज़न पजे।
सअल्य ज़ानावारस च़जे, त्युथ म्य दितम

कर दीवो हो।"

इसी कारण यह तीर्थ भवानी की आकाश वाणी से ऐसे प्रदान हुआ कि जो माता अपनी आयु में इस तीर्थस्थान पर एक बार 'हरवाह' का तीर्थ कर लेगी वह दयमाल की तरह पापों से मुक्त होके मोष प्राप्त करेगी।

इस तीर्थस्थल पर पच्चीस साल से गृहस्थी साधु महात्मा पुष्कर नाथ जी (पौशमोत) की अध्यक्षता में तीर्थ की धर्मशालाएं, मन्दिर इत्यादि का काम स्थानीय कमेटी के द्वारा हो रहा है। यहाँ बड़ा मन्दिर और बड़ी-२ धर्म-शालाएं और यज्ञशाला बनाई गई थी, जिसमें कम से कम आठ लाख रुपये खर्च हुए थे। माता दुर्गा की यह महान मूर्ति मन्दिर में स्थापित की गई थी। 1986 के वर्ष कुछ दुष्ट व राक्षस जनों ने इन धर्मशालाओं और मन्दिर को जलाकर भस्म कर दिया। मूर्तियाँ तोड़ दी गई और एक विशाल पुस्तकालय, जिसमें धार्मिक ग्रंथ इत्यादि थे, जला दिया और आश्रम की सब सम्पति जोकि कोई एक लाख रुपये की थी लूट कर ले गए। इससे यहाँ के शासक बहुत चिन्तित हुए और स्थानीय लोगों की धड़कन देखते हुए यहां पर सरकार के पैसों

से पुनः मन्दिर, धर्मशालाएँ बन गए और देवी की मूर्ति प्रतिष्ठित की गई। इस समय यह तीर्थस्थान माता की इच्छानुसार बहुत सुन्दर बन गई है। सहस्त्रों की संख्या में आज भी लोग तीर्थ यात्रा के लिए जाते हैं, बड़े-२ चिनार के वृक्ष संताप और वासनाओं से जले हुए हृदयों को शान्ति पहुँचाते हैं।

यह तीर्थ सारे तीर्थों का राजा माना जाता है। इसी कारण से 'तीर्थ राज' के नाम से स्मरण किया जाता है। यहाँ पर महात्मा जी का एक आश्रम बहुत समय से धार्मिक अथवा सामाजिक कार्य करता आया है। महात्मा पुष्करनाथ जी ने अपनी यौवनावस्था माता के चरणों में इसी तीर्थ पर व्यतीत की है। और माता के इस दास के प्रभाव में हजारों की संख्या में लोग सत्संग, प्रवचन और कीर्तन से प्रभावित होते हैं। इस तीर्थस्थान के प्रति हम अपना शीर्ष सदैव माता के चरणों में झुकाते हैं।

सर्वस्वरुपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमुस्तुते॥

26. वितस्ता देवी, वेथवोत्र

वेरीनाग से दो किलोमीटर की दूरी पर एक महान तीर्थ वेथवोत्र के नाम से प्रसिद्ध है। यह तीर्थ प्राचीन काल से सारे भक्तों की मैल धोता आया है। इस तीर्थ में बहुत सारे कुंड प्रवाहित हो रहे हैं। मध्य भाग के कुंड में से वितस्ता नदी का प्रवाह होता है। कुंड के साथ बड़ा मन्दिर और धर्मशालाओं के होने के अतिरिक्त बहुत सारी भूमि भी है। प्रायः देश विदेश से आकर यात्री यहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य और देवी का प्रसाद प्राप्त करते हैं। तीर्थस्थान के दाऐं भाग में महान कुंड 'नीलनाग' भी प्रसिद्ध है। इस तीर्थस्थान पर माता वितस्ता की एक महान शैला रूपी मूर्ती अपने भक्तों को शीतलता प्रदान करती है।

कथा के अनुसार जब महर्षि कश्यप ने काश्मीर की नींव रखी तो राक्षसों ने आकर देवताओं का वध किया। देवता भगवान शंकर की उपासना में जुट गए और उनसे पाप और राक्षसों को समस्त करने की विनती की। भगवान ने उन्हें

मातेश्वरी की उपासना करने को कहा और सारे देवी देवता माता भुवनेश्वरी की पूजा करने लगे। माता के आदेशानुसार देवताओं ने फिर से भगवान शंकर की आराधना की जो आषतोष होने के कारण इस तीर्थस्थान पर विराजमान हुए और उन्होंने अपना त्रिशूल धरती में गाढ़ दिया, जोकि 12 अंगुल धरती में धुसगया और शीघ्र ही भूमि से माता वितस्ता का प्रादर्भाव हुआ।

माता वितस्ता, कश्यप भूमि काश्मीर के बीचों बीच चलते हुए सारे पापों का विनाश करती है।

प्राचीन काल से सन्त महात्मा इस तीर्थ स्थान पर तपस्या के लिए आया करते हैं। यहां पर एक बड़ा लंगर भी चलता है। आधुनिक काल में महात्मा रामदास जी ने इस तीर्थस्थान की शोभा और भी मनोरंजक बना दी है। उनके अत्यन्त प्रयास से भूमि भी मुक्त कराई गई है। और पुनः यज्ञ अथवा सत्संग-कीर्तन का केन्द्र उनके आश्रम के द्वारा प्रतिष्ठान में आ गया है। इस तीर्थस्थान पर त्रयोदशी की तिथि पर 'व्यथ त्रुवाह'

र एक महान यात्रा लगती है।

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब केचि-
दानन्दमेव कतिचितकतिचिच्च मायाम् ।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम
साक्षादपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव ॥

27. तारादेवी तारगाम

काज़ीगुंड से तीन किलोमीटर की दूरी पर तारगाम का एक सौन्दर्ययुक्त गाँव स्थापित है। इस गाँव का नाम माता तारा देवी के नाम पर रखा गया है। गाँव के ऊपरी भाग पर एक करेवा के दामन पर माता तारा देवी का तीर्थस्थान विराजमान है। यहां एक कुंड छोटी धर्मशाला और विशाल मन्दिर मन को आकर्षित करते हैं।

तारा देवी माता काली के स्वरुपों में से ही एक स्वरुप है। इसका ध्यान यूँ अनुभव में लाया गया है; देवी विशाल नैनों वाली, चतुरभुजा, हाथ में कपाल, खड्ग, रक्तपात और त्रिशूल धारण किए हुए, जलती हुई चिता की सूक्ष्म अग्नि पर

खड़ी, दायाँ पैर आगे और बाया पैर पीछे, कमर पर बिच्छुओं की माला, गले में महान् मुंडमाला और केशों में जनेऊ और माथे पर चन्द्रमा है।

यह देवी इस प्रान्त में कुलदेवी के रूप में समरण की जाती है। इस तीर्थस्थान को प्राचीन काल से भक्तजन पूजते आए हैं और देवी अपने भक्तों के कष्टों को हरती आई है। तीर्थस्थान पर महान् यज्ञ प्राची-न काल से ही रचाए जाते हैं। यहाँ की एक विशेषता बुद्धि को आश्चर्य में डालती है। पूर्वजों से सुना है कि जब कभी इस तीर्थस्थान पर यज्ञ रचाया जाता था, तो यज्ञ से पहले एक दिन कुंड के प्रति आरती करके हाथ जोडकर माता से विनती करते थे और प्रातः सारे भक्त इस कुंड में सब बर्तन, यज्ञ की सामग्री इत्यादि देखते थे और दिनभर यज्ञ करके दूसरे दिन सायंकाल को यह सब बर्तन इत्यादि इस कुंड में वापिस स्वीकार करती थी।

इस समय इस तीर्थस्थान पर एक संस्था कार्यरत की गई है जो यहां की ाचीन धर्मशाला व मन्दिर को पुनः ्रतिष्ठित कर रही है। इस गाँव में बहुत

संख्या में हिन्दू भी रहते हैं प्रायः प्रातःकाल और सायंकाल को आरती इत्यादि करके भजन सत्संग का भी आयोजन करते हैं। माता तारादेवी का अनुग्रह सारे प्रदेश में दैव-आपत्तियों को दूर करने के लिए प्रधान माना जाता है। तीर्थ स्थान के साथ बहुत सारी भूमि भी समर्पित की गई है।

भक्तानुग्रहकारिणी भगवती देवादिदेवेश्वरी
दीनानाथ कृपावती सुजननी भक्तानुरक्तासती।
ॐकाराक्षरवासिनी सुरनिता सर्वेश्वरी सर्वदा।
भूयान्नो वरदा सदा अभयदा, योगेश्वरी योगिया

प्रत्यालीढ़पदार्पिताङ्घ्रिशवहृद्घोराट्टहासापरा
खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्परभुजा हुंकारबीजोद्भवा।
सर्वानीलविशालपिङ्गलजटाजूटैकनागैर्युता
जाड्यं न्यस्य कपालकर्तृजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयं

28. माता भद्रकाली

हन्दवाड़ा से कोई 16 किलोमीटर की दूरी पर बंडीपुरा गाँव में एक पहाड़ी पर माता भद्रकाली जी का तीर्थस्थान है, इस तीर्थस्थान पर प्राचीन काल से श्रद्धालु लोग अपनी श्रद्धा और भावना के फूल अर्पण करते आएँ है। यहाँ पर एक महान कुंड भी है और नीचे देवीआँगन में विशाल धर्मशालाऐं भी है। प्राय: लोग नौदुर्गा की नवमी के दिन यहां पर एकत्रित होकर महान यज्ञ रचाते हैं। और देवी के चरणों में बलि अर्पण करते हैं।

माता भद्रकाली एक सखा हैं जो अपने भक्तजनों की प्रिय सुहृद है। यह देवी माता काली का ही स्वरुप है। चतुरभुजा, ज़बान बाहर, बाल बिखरे हुए, मुंडमाला धारण किए हुए, चार भुजाओं में त्रिशूल कपाल, रक्त पात्र और खड़्ग धारण किए हुए हैं। कमर पर भुजाओं की माला और विशाल नैन-सुर्य, चन्द्र और अग्नि, कलाइयों में विभिन्न नाग, दायां पैर आगे और बांया पैर पीछे- यह सारा माता भद्रकाली के ध्यान में सम्मिलित है।

इस स्वरुप में माँ अपने भक्तों की सब कठिनाइयों, आपदाओं और विपत्तियों व असुर वृत्तियों को घात करती है। और मानव को तत्स्वरुप बनाकर अपने ही आनन्द में लय कराती है।

माता भद्रकाली विशेष रुप पर बारा-मुबा ज़िले में इष्ट देवी के रुप में पूजा जाती है। कहते हैं कि यदि किसी प्राणी को बडी से बडी कठिनाई या विपत्ति आए तो माता भद्रकाली का ध्यान, पूजन तथा तीर्थयात्रा करने से क्षण भर में आपदाएँ दूर हो जाती हैं। देखा गया है कि जब जब कोई कठिनाई इस देश में सामने आ गई तो राजा महाराजाओं ने इस तीर्थ-स्थान पर बडे यज्ञ रचाए और वह आप-त्तियां दूर हो गई।

जयन्ते मँगलाकाली भद्रकाली कपालिनी
दुर्गा क्षमा शिवा दात्री स्वहा सुधा नमुस्तते

29. माता चंढ़ी, चंढ़िगाम

देवी के विभिन्न स्वरूपों का एक समारोह ध्यान माता चंढ़ी, बुद्धि, विमंश, व परा भक्ति से ही ध्यान में आसकती है। माता चंढ़ी का रहस्य वर्णन करने के लिए स्वंय पारब्रहम परमेश्वर व तीनों कारण असमर्थ है और हाथ जोड़कर इस परम शक्ति के प्रचण्ड के प्रति भावातीत है। शास्त्रों में सिद्ध है कि माता चंढ़ी सारे देवी देवताओं की ज्योति व प्रचण्ड का एक विशाल प्राकृतिक संगम है। अत: माता चंढ़ी की उपासना से सारे देवी देवताओं की उपासना स्वंय ही सम्पन्न हो जाती है।

काश्मीर प्रान्त में माता चंढ़ी का सुन्दर व मंगलदायक तीर्थस्थान कुपवाड़ा से कोई तेरह मील की दूरी पर सोगाम (चंढीगाम) में पहाडी के ऊपर स्थापित है। इस तीर्थ पर पहुँचते ही मन, वाणी व बुद्धि अद्‌भुत हर्ष में आकर पूर्णतया देवीमय बन जाती है। पहाडी पर विशाल वृक्ष तथा बड़ी-बड़ी शिलाऐं माता के अस्थापन की शोभा को और भी बड़ाते हैं। माता चंढ़िका का ध्यान इस तीर्थस्थान पर यूँ अनुभव में

लाया गया है। सहस्त्र भुजाधारी, त्रिलोचन, सिंहवाहिनी, विभिन्न अस्त्र-शस्त्र अपनी भुजाओं में धारण किए हुए, बड़ा नाग गले में धारण किए हुए, तेज रुपी, तपे हुए सोने के रँग की लाल वस्त्र धारण किए हुए।

इस तीर्थस्थान पर प्राचीन काल से ही भक्तजन माता के चरणों में भावना के पुष्प अर्पण करते आऐं हैं। आधुनिक युग में एक महात्मा स्व॰ कृष्ण गिरि ने बड़ी-बड़ी धर्मशालाऐं बनवाई हैं और मन्दिर भी नए ढ़ंग से बनवाया है। इन महान महात्मा ने यहां बहुत समय तपस्या की तथा प्रायः निराहारी रहे। महात्मा गिरि जी की समाधि भी इसी तीर्थ पर मन्दिर के दाऐं तरफ विराजमान है। महात्मा जी के यह वचन प्रायः मन में गूंजते हैं कि," मैं माता का एक दास इस समाधि से फिर निकलूँगा और देवी के प्रति पुनः जनजनार्दन में आके देवी का गुणगान करूँगा"।

यस्या प्रभाव अतुलं भगवान अनन्तो
ब्रह्मा हरश्चनहि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥

चण्डिका श्वेतवर्णा सा शिवरुपा च सिंहगा,
ज़टिला वर्तुला त्र्यक्षा वरदा शूलधारिणी,
कत्रिंकां विभ्रती दक्षे पाशपात्रा भयान्विता।

30. भीमा भगवती स्थापन ज़िन्यपुरा भुमय

देवी के विभिन्न रुपों में से भीमा देवी का ध्यान बहुत मँगलमयी व मनोकार्षक है। यह देवी अपने शक्तिबल से भक्तजनों की सारी पीड़ा क्षण भर में दूर करती है। भीमा-देवी का तीर्थस्थान ज़िन्यपुरा पहुँचते ही पहाडी के दामन पर स्थित है। यहाँ पर प्रायः बारामुला के लोग आषाढ के महीने में माता के दर्शन के लिए आते हैं, इस तीर्थ के साथ कोई पाँच कनाल भुमि भी है और सारे हिन्दू-मुसलमान बडी श्रद्धा से अपनी भावना के फूल देवी के चरणों में समर्पित करते हैं।

वैसे भीमा देवी भैरवी के रुप में पूजी जाती है, जैसे कि महामन्त्र रुद्राक्षि स्तुति में वर्णन किया गया है:

"वराहि नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी।"

31. सोनशा भगवती (ब्राह)

मटन अन्तनाग से 12 मील की दूरी पर ब्राह का एक गाँव वराहि रुप देवी के नाम पर स्थित है। ब्राह से पहाडों पर चढ़ते-२ दक्षिण दिशा में माता सोनशा भगवती का तीर्थस्थान प्राचीन काल से प्रादुरभाव में आया है।

पहाडी के बीचों बीच स्थित इस तीर्थस्थान पर माता दुर्गा का एक महान कुंड प्रवाहित है। इस कुंड के चारों ओर पाँच विशाल दियार के वृक्षों में माता के प्रणवाकार का बोध होता है। इस कुंड में पानी विशेषरुप से अमृत अथवा दूध के रुप में प्रवाहित होता है। कहा जाता है कि देवी का यह स्वरुप नवविवाहित रुप में एक दुल्हन की तरह भगवान शिव के साथ ध्यान में लाया गया है। प्राय: भक्तिजन अष्टमी के दिवस पर बहुत कठिन रास्ता तय करके हज़ारों की संख्या में देवी के दरबार में उपस्थित होके पुण्य प्राप्त करते हैं।

एक गाथा के अनुसार 1947 ई० में ज्यों

ही कबाइलियों का आक्रमण कश्मीर प्रदेश पर हुआ तो किसी दुष्टजन ने इन पाँच वृक्षों में से एक वृक्ष काटकर नीचे गिरा दिया। ज्योंही वृक्ष नीचे पडा तो भँयकर रक्त नदी के रुप में इस वृक्ष की जड से प्रवाहित हुआ सारे इलाके में हाहाकार मच गया और उस समय के शासक हाथ जोड़कर देवी से मिन्नतें माँगने लगे और क्षमा माँगने के लिए ज़ार-ज़ार रोते-रोते परिक्रमा देने लगे। रक्त का प्रवाह बन्द हुआ। तब से आज-तक वह वृक्ष कटा हुआ ही इस तीर्थस्थान पर मौजूद है, और इस वृक्ष को उठाने का साहस कोई नही कर सकता।

इस तीर्थ पर विचित्र लीलाऐं अन्य सन्तों ने अपने अनुभव में लाई हैं। कहते हैं कि माता यहाँ से निकलकर प्रायः अष्टमी के रोज स्वामी गाशकाक जी, गौतम नाग को आया करती थी और अमानगरी के सन्त को अनुग्रह करने के लिए भी आया करती थी। इस तीर्थस्थान पर बहुत सी भूमि समर्पित की गई है।

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षड़ध्व शुद्धा,
वाप्लावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम।

श्यामां घनस्तनतटां सकलीकृतोंच,
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति।

32. तीर्थस्थान भर्गशाखा

मटन अन्तनाग से तीन किलोमीटर की दूरी पर पहाडी के ऊपर माता भर्गशाखा भगवती का एक महान् तीर्थस्थान प्राचीन काल से प्रादुरभाव में आया है। इस तीर्थस्थान पर एक महान मन्दिर है, जिसके भीतर माता भवानी की एक विशाल मूर्ति विराजमान है। यह मूर्ति चतुरभुजा, सिंहसवारी, मुकटधारी, सुन्दर और मनोहर वस्त्र व शस्त्र धारण किए हुए है। उनके माथे पर चन्द्रमा और केशों के ऊपर सूर्य देवता प्रकाश देके मानव की मन्दबुद्धि को ज्ञानमय बना देता है। यह देवी मेधा शक्ति के रुप में विराजमान है। यहाँ पर नंगे पहाड होने के कारण इस मन्दिर के समीप एक महान वृक्ष देवी के अस्तित्व का बोध प्रदान करता है।

इस तीर्थस्थान पर हज़ारों की संख्या में भक्तजन देवी के दर्शन प्राप्त करके

अपना सौभाग्य मानते हैं इस देवीस्थान पर चढ़ने के लिए कोई विशेष मार्ग नहीं है तो भी कठिन घाटी पार करके भक्तजन नित्य प्रातः और सायंकाल को माता की आरती उतारते हैं और भजन कीर्तन में मग्न रहते हैं। इस तीर्थ के साथ बहुत सी भूमि भी समर्पित की गई है।

तीर्थस्थान की घाटी के नीचे एक महान कुंड जिसे 'सूर्यकुंड' भी कहते हैं 'भवन कुंड' के नाम से भी स्मरण किया जाता है। इस कुंड का पानी नीले रंग का और पितृं के लिए मोक्ष का साधन बताया गया है। इस तीर्थस्थान पर अनेकों सन्त महात्माओं ने तपस्या करके सिद्धियां प्राप्त की हैं।

मर्गशाखा देवी वृक्ष के रुप में अपने भक्तजनों के संताप और वासनाओं से जली काया को शीतलता देता है।

ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती मध्येललाटं प्रभाम्
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः सदाहः स्थिता
छिन्द्यान्नः सहसा पदैस्त्रिभिरघं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी

33. वैष्णवी देवी

शक्तिस्थलों में अत्यन्त जाग्रत सिद्धपीठ वैष्णोदेवी को काश्मीर के देवीस्थानों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। यह स्थान जम्मू से 46 मील उत्तर पश्चिम की ओर एक अत्यन्त अन्धकारमय गुफा में है। पहले श्रीनगर से कटरा नामक स्थान में जाना पड़ता है; वहां से छडी, खर के जूते आदि लेकर पर्वतीय यात्रा पर जाना पडता है। तीन मील दूरी पर चरण पादुका स्थान में माता के चरण चिह्न हैं। प्रथम आदकुमारी स्थान में विश्राम होता है। यहाँ गर्भवास नामक संकरी गुफा है। इसमें प्रवेश करके यात्री बाहर निकलते हैं। आगे का मार्ग दुर्गम तथा संकीर्ण है। आगे बढ़ने पर हाथीमत्था की कठिन चढ़ाई मिलती है। चढ़ाई पूरी होने पर लगभग तीन मील की उतराई है। तब वैष्णो देवी के स्थान पर पहुँचा जाता है। गुफा में लगभग 50 गज भीतर जाने पर महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती की मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों के चरणों से निरन्तर जल प्रवाहित होता रहता है। इसे 'बाणगंगा' कहते हैं। गुफाद्वार में पहले पाँच गज़ लेटकर जाना पडता है।

भारत के शक्तिभक्त हज़ारों की संख्या में भगवती की यात्रा करते रहते हैं।

इस तीर्थ से सम्बंधित एक प्राचीन गाथा यूँ है :

कहते हैं कि रामावतार के समय गन्धर्वों के राजा के पास एक सुन्दर बालिका का जन्म हुआ, जिसका नाम वैष्णवी रखा गया। नारद जी द्वारा श्री राम का गुणगान सुनकर वैष्णवी के मन में अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति व प्रेम श्री राम के लिए बढने लगा। अपने ईष्ट श्री राम के दर्शन करके, उसे श्री राम ने उद्धार का एक मार्ग बताया कि वह एक गुफा में तपस्या करें। वे उस गुफा में, जहाँ आजकल माता वैष्णो देवी का तीर्थ स्थल है, युगों-युगों तक तपस्या करने लगी उसकी गुफा का द्वार भी बन्द हुआ तथा उसे किसी चीज़ की सुधि नहीं रही, युगों के परिवर्तन के अनुसार जब कलियुग प्रादुरभाव में आया तो चारों ओर से हाहाकार मच गया। जहाँ कहीं भी धार्मिक प्रवचन होता या धार्मिक पुस्तकें होती, उनको समाप्त कर दिया जाता। सतवृत्ति वाले पुरुष व देवता भगवान विष्णु की शरण में आए तथा उनसे युग की रक्षा

के लिए आग्रह किया। भगवान विष्णु ने बताया कि उनकी रक्षा करने योग्य केवल माता वैष्णवी है, जो उस समय पहाड़ की गुफा में तपस्या कर रही थी। भगवान विष्णु ने बाण फेंककर उसकी गुफा का दरवाज़ा खोला तथा इसी बाण से 'बाण गंगा' का प्रवाह प्रादुरभाव में आया। उन्हें अपनी भक्त माता वैष्णवी के लिए फिर रामवतार लेना पड़ा, जिसके दर्शन से माता ने आँखे खोली और उनकी तपस्या सफल हो गई। उनको आदेश मिला कि वह कलियुग के मनुष्यों को कलियुग के प्रभाव से बचाएं। अतः कटय की पहाडी के दामन पर उन्होंने अपना आश्रम बनाया। यहां पर उनके स्पर्श मात्र से ही कलयुग द्वारा उत्पन्न की हुई प्रत्येक व्याधि का नाश होता था। माता के तेज व शक्ति को देखकर भैरव व कलियुग के राजा ने मिलकर उनका धर्म बिगाड़ने की सोची। भैरव ने माता से विवाह करने की बात कही। माता, जो साक्षात जगतअम्बा ही थी, भाग कर पहाडी के छेद में से अन्दर से अपनी गुफा में पहुँची। इसे आजकल 'गर्भयात्रा' कहते हैं। भैरव के ऐसे प्रयत्न देखकर सारे देवता भयभीत हो गए और

सब माता वैष्णवी में सुप्त शक्ति को सुर्फणा में लाने लगे। सारे देवता माता को भुजाएं, तेज, शक्ति, अस्त्र, शस्त्र अर्पण करते हुए 'जय माता दी' के नारे लगाने लगे। माता सुर्फणा में आई और उन्होंने भैरव पर वार करके उसका वध किया। भैरव का सिर कटकर उनके चरणों पर गिरकर क्षमा मांगने लगा और माता से विनती की कि वे उसे हमेशा अपने चरणों में रखे और जब कोई भक्त माता के दर्शनार्थ आए, तो उसे उसके शरीर पर से चलना पड़े। माता 'वैष्णोदेवी' के यात्री आजकल भी भैरवघाटी से होकर जाते हैं।

माता का मन्दिर व पूरा पहाड़ ही माता के तेज, शक्ति व अनुग्रह से आज भी परिपूर्ण है। कहते हैं कि कलियुग के राजा ने माता से प्रण किया कि जो भी भक्त माता की अर्चना करेगा तथा जहाँ कहीं भी माता का कीर्तन होता हो, वहाँ व अपना प्रभाव छोड़ ही नहीं सकता।

वैष्णवी ताक्षर्यगा श्यामा षड्भुजा वनमालिनी
वरदा गदिनी दक्षे बिभ्रती च करेऽम्बुजम।
शङ्खचक्राभयान् वामे सा चेयं विलसद्भुजा

34. शरथल देवी, किश्तवाड़

शरथल देवी वास्तव में माता शारिका का ही एक स्वरुप है। जम्मू काश्मीर राज्य के किश्तवाड़ प्रान्त में माता शरथल का सुन्दर मन्दिर है, जहां सहस्त्रों की संख्या में भक्तजन दर्शन के लिए आते हैं। माता अष्टादशभुजा, सिंहसवारी, हाथों में ध्वजा, कमल, माला, कलश, बाण, तलवार, भाला, कुल्हाडी, गदा, त्रिशूल, चक्र आदि वस्तुओं को लिए हुए सिंहासन पर विराजमान है।

माता शरथल में कैसे आई, इस से संबंधित एक गाथा बहुत प्रसिद्ध है। कहते हैं कि आदिगुरु शंकराचार्य जब काश्मीर आए तो वे केवल शिवउपासक थे। शक्ति की उपासना को वे नहीं मानते थे, परन्तु काश्मीर की शक्ति उपासना में दक्षता को देखकर तथा माता शारिका का साक्षात्कार होने पर वे शक्ति माँ की शरण में आ गए। चालीस दिन हारी पर्वत की परिक्रमा करके, उन्होंने माता शारिका से बहुत विनय करके उन्हें अपने साथ काँची चलने को कहा। परन्तु माँ ने अपने काश्मीरी बेटों जैसे मंडनमिश्र, अभिनवगुप्त इत्यादि को

छोड़ने से मना किया। परन्तु शँकराचार्य जी के बहुत आग्रह पर माता ने उनसे कहा कि वे उनके साथ इस शर्त पर जाएंगी, यदि शँकराचार्य रास्ते में कहीं रुके ना तथा इन्हें नीचे कभी ना रखें। शँकराचार्य जी माता को लेकर दौड़ते गए। इधर मंडन मिश्र को समाधि में पता लगा कि माँ जा रही है। वे सारे लोगों को लेकर शँकराचार्य जी के पीछे दौड़ते गए। मंडन मिश्र की साधना से शँकराचार्य जी को किसी कारणवश विवश होकर माता को नीचे रखना पड़ा। और फिर उसके बाद माता वहाँ से उठी ही नहीं। यही स्थान शरथल देवी का स्थान है। मंडन मिश्र और अभिनवगुप्त के आग्रह पर माता ने वचन दिया कि माता छः महीने काश्मीर में और छः महीने शरथल में रहेंगी। प्रत्येक शनिवार, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णमासी आषाढ़ के महीने, माघ के महीने वह श्रीनगर में तथा बाकी दिन शरथल में रहेंगी।

अतः माता शरथल देवी माता शारिका का ही स्वरुप होके ऐश्वर्य, सम्पदा व ज्ञान से परिपूर्ण होकर सारे जगत का कल्याण करती हैं।

अर्घेन किं नवजालललितेन मुग्धे, क्रीतं विभोः परमर्धमिदं लयेति। आलीजनस्य परिहासवचांसि मन्ये, मन्दस्मितेन तव देवि जयन्ति॥

महात्मा श्री पुष्कर नाथ जी कोल "पोशमोत" द्वारा लिखित 'तत्वदर्शन' में से कुछ अंश

संसार के तीनों तापों – आध्यात्मिक, आदिभौतिक, आदिदैविक – से मुक्ति पाने का बहुत बड़ा साधन है, सतगुरु का आश्रय लेकर, ईश्वर भक्ति करके ही स्वाध्याय करना। इस भक्ति को नौ भागों में विभक्त किया गया है: 1. श्रवण 2. कीर्तन 3. समरण 4. पादसेवन 5. अर्चन 6. वन्दन 7. दासभाव 8. सखाभाव 9. आत्म निवेदन।

श्रवण भक्ति: इस प्रारम्भिक अवस्था में प्राणी को श्रद्धापूर्वक अपने बड़ों के कथन पर ध्यान देना चाहिए। उसे धार्मिक पुस्तकों जैसे वेद आदि का अध्ययन करना चाहिए तथा ईश्वर प्रसंग पर हुए शास्त्रार्थ को ध्यानपूर्वक श्रवण करना चाहिए। उपासना मार्ग, ज्ञान मार्ग, गुरु भक्ति, वैराग्य तथा ऐसे ही विषयों पर हो रही बातचीत को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए। उसे स्वयं में साधना, तप तथा परिश्रम की वृत्तियों को और भी उजागर करना चाहिए। जप करने के उपयुक्त ढंग व आहार की शुद्धि अशुद्धि का उसे ध्यान होना चाहिए। सूर्य, चन्द्रमा, नवग्रह, ब्रह्मा, विष्णु, महेश व सृष्टियों की उत्पत्ति के बारे में सोच कर उसे अपने मन व बुद्धि

को विकसित करना चाहिए। उसे नौ खंडों, चौदह भवनों, चौदह विद्याओं, चौसठ कलाओं, तत्वज्ञान भजन व कीर्तन आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इस सब को श्रवण भक्ति कहते हैं, अर्थात् वह मार्ग जिससे श्रद्धा, प्रेम व निष्कपट भाव से ज्ञान का श्रवण हो। इस अवस्था में प्राणी को अपनी सारी शक्तियों को श्रवण करने की ओर केन्द्रित करना चाहिए।

कीर्तन भक्ति : कीर्तन भक्ति को विशेषतया कलियुग में प्राणियों के उद्धार के लिए अत्यन्त उत्तम माना गया है। अतः प्राणी को चाहिए कि वह मन तथा वाणी के द्वारा उस पारब्रह्म परमेश्वर का गुणगान करे, तथा कीर्तन में निहित ज्ञान से भी स्वंय को परिचित करायें। अपने सतगुरु महाराज की दिव्य मूर्ति को मन में बसाकर उसे अपने मन्त्रमुग्ध कीर्तन से उजागर करें। इस प्रकार से मन में असीम स्थिरता आती है तथा मन चेतन्य स्वरुप आत्मा में विलीन हो जाता है।

स्मरण भक्ति : भक्ति की इस पौड़ी पर चढ़कर प्राणी को चाहिए कि वह अपने गुरु के आदेशानुसार अपने इष्ट के मन्त्र का

जाप निरन्तर करे। जीवन की किसी भी अवस्था अर्थात् सुख, दुःख, ऐश्वर्य, चिन्ता, प्रसन्नता अथवा किसी भी दशा में प्राणी को सचेत होकर जागृत, स्वपन, सुषप्ती व तुरिया अवस्था में भी सतगुरु महाराज का ध्यान तथा मन्त्र का जाप नही छोडना चाहिए।

पादसेवन : आत्मबोध करने के लिए अथवा सद्गति या मुक्ति पाने के लिए, प्राणी को चाहिए कि वह मन, कर्म, वचन तथा भौतिक शरीर से भी गुरुदेव के चरणकमलों में शरण लेकर उन्हें साष्टांग प्रणाम करे। विभिन्न प्रकार के तापों का सर्वनाश करने हेतु तथा आवागमन से मुक्ति पाने के लिए गुरुदेव के चरणकमलों में आस्था रखना तथा उन्हें भक्ति व श्रद्धापूर्वक अभिनन्दन करना परमावश्यक है।

यह भक्ति जिसे पादसेवन भक्ति कहते हैं, सब प्रकार की भक्ति का मूल है, क्योंकि गुरुदेव अपने शिष्यों की अज्ञानता को दूर करके उन्हें स्वयं अपने कन्धों पर भवसागर पार कराते हैं।

(मेरे गुरुदेव महाराज को मेरे भक्तिपूर्वक

सहस्त्रों प्रणाम)

पादसेवन भक्ति शिष्य को तीनों लोकों में पवित्र बनाती है तथा उसे मुक्ति प्रदान करती है।

अर्चन भक्ति : इस भक्ति के अन्तर्गत प्राणी अपने गुरुदेव के आदेशानुसार या वेद व शास्त्रों के अनुसार विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा अर्चना करता है। यह भक्ति उसे शान्ति प्रदान करने के साथ-साथ अहंभाव से मुक्त भी करती है। दिव्य अर्चना में वह अपना सर्वस्व उस महान शक्ति के चरणों में रखता है।

वन्दन भक्ति : इस भक्ति के अन्तर्गत भक्त से [redacted] हरेक शुद्ध व जाग्रत तत्व से आकर्षित होते हैं। वह मूर्तियाँ, ग्रहें, गुणों, चन्द्रमा, देवी-देवता, मन्दिरों, गुरुदेव की ओर वन्दन अर्थात नमस्कार करके आदर दिखाता है। अपने गुरुजनों को प्रसन्न करते-करते वह 'नमस्कार' करने का अर्थ भी समझ लेता है। इस भक्ति को वन्दन भक्ति कहते हैं।

दास भक्ति : यज्ञों, शिवालों, तीर्थस्थानों

व सत्संग के प्रत्येक कार्य को निःस्वार्थ करने को दास भाव कहते हैं, स्वंय को दासों का भी दास समझना, आज्ञापालन करना, प्रत्येक प्राणी को अपनी सेवा से सहायता करना तथा अहंकार को जड़ से निकाल फैंकना - इस भक्ति के मुख्य चिह्न हैं। ऐसी आत्माऐं जो आज्ञापालन करना जानती है, वही धीरे-२ शासन करने के तरीके भी जानती है, तथा इस प्रकार वे प्रत्येक आत्मा के साथ जुड़ जाती है।

(ईश्वर करे ऐसी भक्ति मेरे शिष्यों में रहे तथा वे भी निःस्वार्थ बनें।)

सखा भक्ति: पारब्रह्म को अथाह प्यार व श्रद्धा से बाँधे रखने को सखा भक्ति कहते हैं। ऐसे में प्राणी को स्नेह मे काम करना चाहिए, स्नेह से बात करनी चाहिए, स्नेह में ही बैठना चाहिए, तथा स्नेह में ही सोना चाहिए। असीम प्यार का होना ही व हथियार है जिस से अपनी आत्मा में ही ईश्वर का बोध होता है। जब उसका सर्वस्व स्नेहमयी हो जाता है, उन्हें ईश्वर का स्वरूप भी प्रेमपूर्ण दिखाई देता है। तथा उन्हें स्थूल व सूक्ष्म शरीर की

महत्ता पर ध्यान जाता है। उसे संसार में आने की महत्ता का ज्ञान होता है और सारा जगत प्रेमपूर्ण प्रतीत होता है। वह पूर्ण पुरुष बनजाता है तथा प्रकृति के गुणों से स्वयं को मुक्त करता है।

आत्म निवेदन भक्ति : परमेश्वर के चरणों में सर्वस्व अर्पण करके उसके आनन्द में आत्मविभोर होने को आत्मनिवेदन भक्ति कहते हैं। इस भक्ति में प्राणी स्थूल अवस्था से बाहर आकर परमात्मा में विलीन होजाता है। उसे अपना स्वयं अहंकार रहित होने का भास होता है, तथा वह पूर्ण शिवमय बन जाता है। वह स्वयं में ही कर्त्ता, भर्ता व हर्त्ता का स्वरूप पाता है और जान जाता है कि उसे ऐश्वर्य पाने के लिए संसार में भागदौड़ नहीं करनी है, अपितु वह स्वयं ही सारे आनन्द का मूल है। अपने अज्ञान से मुक्ति पाकर उसे जीवात्मा व परमात्मा में कोई अन्तर दिखाई नहीं देता है। यह भक्ति भी गुरुदेव की ही अथाह कृपा से प्राप्त होती है।

- आहार -

हमारे अस्तित्व का रुप हमारा आहार निर्धारित करता है। वह मज़ेदार कौर जो हम अपने मुँह में डलते हैं- धीरे-धीरे हमारे शरीर के सूक्ष्म तत्वों पर प्रभाव डालकर न केवल हमारी भौतिक काया को अपने जैसा बनाते हैं, बल्कि हमारे सोचने के ढंग को भी प्रभावित करते हैं।

हजारों साल पहले हमारे ऋषियों व योगियों ने हमारे शरीर व मन पर आहार के प्रभाव की महत्ता को जान लिया। सृष्टि के बारे में निरन्तर खोज के बाद उन्होंने पता लगाया कि सारा ब्रह्मांड शक्ति व चेतना की सूक्ष्म तरंगों का बना हुआ है। इस ठोस, तरल व गैसो पदार्थों से बनी सृष्टि में विभिन्न तरंगों में शब्द, ज्योति और ध्यान वे तरंगे हैं, जो हमारे आहार के अनुसार हमारे शरीर और मन को प्रभावित करती है। आहार के भिन्न-भिन्न प्रकार हममे भिन्न-भिन्न शक्तियों को उत्पन्न करते हैं।

1. स्थिरता देने वाला भोजन :

इस भोजन के अन्तर्गत फल, कई सब्ज़ियां, दालें, अखरोट, दूध, दूध से बनी चीज़े आती है। कई जड़ी बूटियाँ व कई मसाले भी इस भोजन में आते हैं। ऐसे भोजन के खाने से आत्मज्ञान, प्रेम, शुद्धता और प्रसन्नता का बढ़ावा होता है।

2. चंचलता प्रदान करने वाला भोजन:
इस भोजन में काफी, चाय, कार्बन युक्त पेय, चाकलेट, तेज़ मसाले जैसे मिर्च उत्तेजित करने वाले तथा बासी भोजन और कुछ औषधियां चंचलता तथा अस्थिरता को पैदा करती है।

3. स्थिर पदार्थी भोजन:
इस भोजन में माँस, मछली, प्याज़, लहसुन, अंडे, अल्कोहल, सिगरेट, मादक वस्तुएं, उत्तेजित करने वाला भोजन बासी आते हैं। जो शारीरिक व मानसिक उन्नित चाहते हैं उन्हें ऐसे भोजन से परहेज़ करना चाहिए। इस आहार के प्रभाव द्वारा उत्पन्न शक्ति से मनुष्य आलसी, क्रियाहीन, शक्तिहीन तथा सुस्त रहता हैं। कई शाकाहारी मशरुमों (कुकुरमुत्ता)

को माँस के बदले इस्तेमाल करना ठीक समझते हैं, क्योंकि उनके अनुसार यह प्रोटीन युक्त आहार है। वास्तव में वे प्रोटीन से भरपूर होने पर भी मन और शरीर के लिए विषैले प्रमाणित हो सकते हैं। बाकी पौधों मशरुम सूर्य की रोशनी वंचित रहकर सूर्य की शक्ति को भी स्वयं में जज़्ब नहीं कर पाते। वे अपना आहार सडे हुए पौधों, मरे हुए जानवरों तथा गोबर द्वारा प्राप्त करके स्वयं में अन्धकार की ही शक्ति भरते हैं, तथा इन्हें खाने वाले भी इन्हीं गुणों को अपनाते हैं।

प्याज व लहसुन शरीर में बहुत उष्णता पैदा करने के कारण मानसिक स्वास्थय के लिए बहुत हानिकारक हो सकते हैं। जिस प्रकार प्याज़ से उठी हुई गैस आँखों में आँसू लाती है, इसी प्रकार इनके खाने से मन में हलचल मच जाती है, तथा शान्ति व चेतना की ओर उन्नित में बाधा बनती है।

जिस प्रकार हमारे शरीर अतयंन्त क्रोध या डर से बीमार पड़ जाते हैं, इसी प्रकार वे पशु भी जिनका हम अपना

आहार बनाने के लिए वध करते हैं, खतरनाक अवस्था में एक रासायनिक परिवर्तन के 'शिकार' हो जाते हैं। वध के पहले व वध के दौरान डर और आतंक से इन पशुओं में रक्त के कण बड़ी तीव्रता से चलते हैं तथा और पशुओं को मरते हुए देखकर वे अपनी मुक्ति तथा जीवन के लिए छटपटाते हुए संघर्ष करते हैं। ऐसे हारमोन जो डर से मरे हुए होते हैं, माँस में ही रहते हैं जिसका आहार मनुष्य के तत्वों के लिए विषैला तथा मन को अस्थिरता देने वाला बनाता है।

माँस भक्षयिता मुत्र यस्य मांसमिहाद्म्य
हमा।
एतन्मांसस्य मांसत्व प्रवदन्ति मनीषिणः॥

अर्थात प्राचीन सन्त हमें सिखाते हैं कि जिसका आहार तुम इस जन्म में करोगे वह तुम्हारा आहार अगले जन्म में करेगा।

यावन्ति पशुलोमानि तावत्कृत्वो ह मारणम्।
वृथा पशुघ्नः प्राप्नोति प्रेत्य जन्मनि जन्मनि॥

अर्थात जिस पशु का तुमने वध किया है, उसके शरीर पर जितने बाल हैं, उतने ही

जन्मों में आकर वह तुम्हें मारेगा।

माँसाहारियों के लिए एक और खतरा यह भी है कि पशु कई उन बीमारियों में ग्रस्त होते हैं, जिनका पता बाहर से नहीं लगता। पशु के किसी भाग में यदि नासूर भी हो, तो वह भाग काटकर बाकी माँस बेचा जाता है। वैज्ञानिकों ने यह भी पता लगाया है कि यदि बीमार पशु का जिगर मछलियों को खिलाया जाए, उनको भी वही बीमारी उत्पन्न हो जाएगी, जो उस पशु को होती है।

माँसाहारियों से शाकाहारी बनाने के लिए सबसे बड़ी चिन्ता यही होती है कि क्या उन्हें माँस के बगैर काफी मिकदार में प्रोटीन मिल सकते हैं। वास्तव में माँस ही केवल वह चीज नहीं है, जो पूर्णतया प्रोटीन युक्त है, बल्कि इसमें भी कुछ जरुरी तेजाब होते ही नहीं है। सोयाबीन और दूध उत्तम गुणों वाले भोजन हैं तथा बहुत मात्रा में प्रोटीन भी इनमें पाये जाते हैं। मीट के वज़न के बराबर सोयाबीन में दुगने प्रोटीन व आठ आवश्यक ऐमीनो एसिड समानता में होते हैं। इस प्रकार सोयाबीन से क्या

भोजन हज़म करना आसान है, क्योंकि माँस की तरह इसमें न सख्त चर्बी, न विषैला यूरिक एसिड और नहीं पशुओं की छूतवाली बीमारियाँ होती है।

यदि आप एक गिलास दूध हर दिन पियें तथा सोयाबीन से बने भोजन के साथ-२ दालें तथा सब्ज़ियाँ खायें, आपके शरीर को आवश्यकतानुसार सारे प्रोट्रीन मिल सकते हैं।

हम माँस खाते हैं, परन्तु इसके साथ हम मृत शरीर को ग्रास करते हैं। सन्धि-छेद करके "माँस शब्द" का संस्कृत में अर्थ है 'मां स' अर्थात् "जिसे मैं खा रहा हूँ, वह मैं ही हूं।" यह ऐसा भोजन है जिसमें से प्राणदायक शक्ति बहुत संख्यां में समाप्त हो गई होती है।

अपक्व अर्थात बिना पकाए हुए भोजन प्राण से परिपूर्ण होते हैं, जिसको प्राप्त करना हमारा खाना खाने का उद्देश्य होता है। प्राचीन साधू इन्हीं अपक्व फलों व कन्दमूलों पर निर्वाह करके लम्बी उम्र तक स्वस्थ रहते थे। इसलिए जब भी आप खाना पकाऐ, कृप्या अधिक समय तक न पकाते रहें, क्योंकि अधिक